प्रकाशक
सत्य-ग्रन्थ-माला
कार्य्यालय,
फर्रुखाबाद ।



टाइटिल पेज
हुक्पायर प्रेस प्रयाग
में छपा ।

अमरीका–भ्रमण

(प्रथम भाग)

लेखक

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

रचयिता

"मनुष्य के अधिकार," "अमरीका दिग्दर्शन,"
"आश्चर्यजनक घटी," "अमरीका पथ प्रदर्शक,"
"शिक्षा का आदर्श," "अमरीका के विद्यार्थी,"

और

"राजर्षि भीष्मपितामह" इत्यादि

"Youngmen of my Country ! Here is the Story of my 2300 miles tramping through United States of America,"

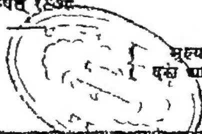
—*A Tramp.*

इलाहाबाद

प० सुदर्शनाचार्य के प्रबन्ध से सुदर्शन प्रेस इलाहाबाद में छपा।

संवत् १९७८

तृतीय बार }
२०००



मूल्य
एक रुपये

समर्पण

जिस सच्चे देशभक्त ने मातृभूमि के लिए महान कष्ट सहन किये हैं, जो अपने सिद्धान्तों के पालनार्थ पुरुष सिंह के नाम से प्रसिद्ध है, जिसने प्यारे भारत के हित चिन्तनार्थ सर्व ऐश्वर्यों को तुच्छ समझा है, और देश के नवयुवकों का आदर्शस्वरूप है उस वीर केशरी विप्रवर के कर कमलों में यह तुच्छ भेंट सादर समर्पण करता हूँ।

सत्यदेव

पर निर्भर था वह आज सभ्यसंसार के मुक़ाबले में सब से अधिक गेहूं, कोयला, सोना, पकामाल, लोहा, मिट्टी का तेल कई, और मका पैदा करता है। उस की चीज़ें दुनियां की मण्डियो में बिकने जाती हैं और वहां के व्यापारी अर्बों रुपये का लाभ प्रतिवर्ष उठाते हैं।

ऐसे धनधान्य पूरित स्वतन्त्र और स्वच्छन्द देश में भ्रमण करने की मेरी बड़ी इच्छा थी। १९०६ में जब मैं अमरीका जाकर पहुंचा तो सबसे पहले मैंने अपने उद्देश्य-विद्याप्राप्ति-की सिद्धि के हेतु शिकागो विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। जून १९०६ से लेकर जून १९०७ तक मैं वहां पढ़ता रहा। जब जब समय मिला, विद्यार्थियों के साथ इधर उधर घूमकर सैर भी की। जून १९०७ से लेकर दिसम्बर १९०७ तक मैं मजदूरी कर रुपया जमा करता रहा। मज़दूरी के लिए घूमता घामता आयोवा, सौथडकोटा आदि उत्तर-मध्यवर्ती रियासतें देखता हुआ मैं आरेगन पहुंच गया और वहां के विश्वविद्यालय में जाकर भरती हुआ। वहां का साल पूरा कर फिर मजदूरी के लिए निकला। जब पढ़ने लायक रुपया होगया तो वाशिङ्गटन रियासत की प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी में जाकर फिर विद्याध्ययन आरम्भ किया। यह विश्वविद्यालय सियेटल में है। यहां पर मैं फरवरी १९१० तक पढ़ता रहा। अपना अध्ययन समाप्त करने के बाद मुझे 'अमरीका भ्रमण' की धुन लगी।

यो तो यह धुन मुझे मुद्दत से थी पर हौसला नहीं पड़ता था कि ऐसा कठिन काम करू। अमरीका अपने देशकी तरह तो है नहीं, जहां एक भगवा कपड़ा पहिनने से मनुष्य सारे भारत का चक्कर सहज ही में लगाले, दूसरे भारत की भांति वहां थोड़े थोड़े फ़ासले पर गांव नहीं है। बाज़ बाज़ रियासतों में

तो पचास पचास मील के अन्दर झोंपड़ी तक दिखाई नहीं पड़ती और किसी में मीलों बड़े बड़े पर्वत चले गये हैं जहां से अकेले पथिक का गुज़रना कठिन है। यह देश अभी तक बहुत वन्य है। सैकड़ों मील घने जगल खड़े हैं जहां रीछ भेड़िया निर्भय विचरते हैं। इस के अतिरिक्त अमरीकन क़ानून के अनुसार कोई भीख नहीं माग सका। पुलिस भिखमङ्गों को पकड़ कर जेल दे देती है। मेरे पास कुल जमा आठ रुपये थे। इतने रुपयों से अमरीका भ्रमण!

खैर अपने इरादे को दृढ़ किया। दिल को समझाया, उस को रास्ते के भयङ्कर दृश्यों के चित्र खेंचकर दिखाये, जगलों, रेगिस्तानों की डरावनी तसवीरें दिखलाई। जब देखा कि अब इरादा पक्का है तो एक दिन 'भ्रमण' की तिथि नियत करदी और अपना बोरिया बिस्तरा बाध ठिकाने लगा दिया। जैसे पन्द्रह रुपये लेकर काशी से अमरीका जाने के इरादे से समुद्र में कूद पड़ा था वैसे ही ईश्वर के भरोसे यह काम भी किया। प्रभु ने दोनों दफे मेरी लाज रक्खी।

कई एक पाठक यह जानने की अभिलाषा रखते होंगे कि अमरीका -भ्रमण के विशेष कारण क्या थे? खाली 'भ्रमण' ही निर्दिष्ट था, या कुछ और भी? उत्तर में मैं निवेदन करता हू कि इस भ्रमण के तीन बड़े भारी कारण थे :—

(१) मुझे अमरीका में रहने से इस बात का तजरुबा हो गया था कि वहां के लोग भारत के सामाजिक धार्मिक और राज-नैतिक विषयों को बहुत कम जानते हैं और जो कुछ वे जानते हैं वह भी उन्हें पादरियों की रिपोर्टों से भारत द्वेषी लेखकों के लेखों से मालूम हुआ है। इस लिये मेरा पहिला उद्देश इस भ्रमण का यह था कि अमरीका के लोगों को भारत की वर्तमान दशा से वाक़िफ़ करूं।

(२) क्रियाओं की विद्या और व्यवहारिक अनुभव में बड़ा भेद है। मनुष्य यदि किसी जाति के रहन सहन तथा उसकी सभ्यता का ज्ञान करना चाहे तो उसके लिए ज़रूरी है कि वह हर तरह के लोगों से खुद मिले और देश में पैदल भ्रमण करके हर बात की जांच करे। अतएव मेरा दूसरा उद्देश यह था कि अमरीका की सामाजिक राजनैतिक तथा वैज्ञानिक उन्नति का सच्चा हाल जानूं।

(३) मेरी इच्छा हिन्दी भाषा की सेवा करने की है। इस के लिए वाकफियत का दायरा बढ़ाने की ज़रूरत है। अतएव मेरा तीसरा उद्देश हिन्दी साहित्य की सेवा के लिये सामग्री एकत्र करना था।

इस भ्रमण में मेरे साढ़े आठ मास खर्च हुए हैं। ६ जून १९१० को मैं सियेटल से चला और २० फरवरी को न्यूयार्क पहुंचा। यदि मेरे पास काफ़ी खर्च होता तो मैं शीघ्र ही न्यूयार्क पहुंच जाता, पर खर्च न होने से कई एक तकलीफ़ों का सामना करना पड़ा। इस भ्रमण में मैंने वाशिङ्गटन, आरेगन केलेफ़ोर्निया, अरीज़ोना, न्यूमेक्सिको, टेक्साज़, ओकलहामा, कन्साज़, मज़ूरे इन्डियाना, ओहाइओ, पेनसलवेनिया और न्यूयार्क—इन रियासतों की सैर की। पहली पांच रियासतों में तो मैं ने खूब ही भ्रमण किया। वहां की दशा को अच्छी तरह देखा भाला। खूब सैर की। महान कष्ट सहे। यह भ्रमण पैदल किया गया। यद्यपि कहीं कहीं मौका लगने पर कूद फांद करली है पर वह बहुत कम। बाकी रियासतों में मैंने रेल द्वारा यात्रा की है। उसका हाल भी 'अमरीका भ्रमण, में छपेगा।

इस भाग में वाशिङ्गटन तथा ओरेगन की यात्रा का पूरा वृत्तान्त है। केलेफ़ोर्निया की सेक्रेमेन्टो घाटी के सुन्दर

हस्य भी दिखलाये गये हैं। कुल अढ़ाई मास की यात्रा का ब्योरा इस पुस्तक में है। 'भ्रमण' करते समय मेरे पास जो डायरी थी उसी के अनुसार दिनचर्य्यारूप में मैंने यह पुस्तक लिखी है। देखिये मेरे प्रेमी इसे कैसा पसन्द करते हैं।

प्यारे पाठक! यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका का नक्शा उठाइये। उसके उत्तर पश्चिमीय किनारे पर 'सियेटल' नामी नगर को खोज लीजिए। मिला आपको? अच्छा। यहीं से मैंने अपनी यात्रा आरम्भ की थी। आप पूछेंगे भला सियेटल ही से इस भ्रमण का आरम्भ क्यों हुआ? सुनिये। हमारे शास्त्रों में अपने उपास्यदेव की तीन बार प्रदक्षिणा लिखी है। यदि तीन बार न हो सके तो एक बार तो अवश्य ही करनी चाहिये। भारत से, जापान के रास्ते होकर, मैं अमरीका पहुंचा था। पृथ्वी माता की पूरी परिक्रमा तभी हो सकती थी यदि सियेटल से न्यूयार्क, न्यूयार्क से लन्दन, लन्दन से फ्रांस और इटली होता हुआ मैं भारतमाता के चरण छूता। इसी लिए मैंने सियेटल से न्यूयार्क आने का निश्चय किया। नौ महीने के बाद मैं न्यूयार्क पहुंचा। वहां से लन्दन फ्रांस, इटली की सैर करता हुआ अपने देश में पहुंच गया मैंने माता वसुन्धरा की एक बार परिक्रमा कर ली, बस मेरा उद्देश्य सिद्ध हो गया।

अच्छा, अब मैं अपनी राम कहानी आरम्भ करता हूं। ध्यान से सुनिये।

फाल्गुन कृष्ण १
सं० १९६९

विनीत—
सत्यदेव।

वाशिङ्गटन रियासत की प्रसिद्ध सियेटल नगरी।

"सियेटल" वाशिङ्गटन स्टेट का सबसे बड़ा शहर है। भारत का ऐसा कोई नगर मैंने नहीं देखा जिसके साथ इस की तुलना की जा सके। समुद्र के तट पर बसा हुआ, यह नगर अपनी ऊंची नीची गलियों और सुन्दर साफ झीलों के कारण मनोहारिणी छटा दिखाता है। इसके पश्चिम में चार मील लम्बी और दो मील चौड़ी इलियट नामक खाड़ी है। इसी खाड़ी द्वारा सियेटल की समुद्र सम्बन्धी तिजारत होती है। चीन, जापान, भारत तथा अन्य देशों से जहाज़ और यात्री-स्टीमर इसी खाड़ी में आकर ठहरते हैं और यहीं से सियेटल का करोड़ों रुपये का माल देश देशान्तरों में बिकने जाता है।

शहर के पूर्व में अट्ठारह मील लम्बी और दो से चार मील चौड़ी वाशिंगटन नामी झील है। इसके किनारे किनारे हरे हरे वृक्षों और ग्रीष्म घरों की कतारें सुन्दर दृश्य दिखाती हैं। नगर के आन्तरिक भाग में 'यूनियन-लेक' और 'ग्रीन-लेक' नामी दो और छोटी छोटी झीलें हैं। इनके इर्द गिर्द बड़ी बड़ी अट्टालिकायें और बृहत् भवन धनिक पुरुषों के सुखभोग के लिये बने हैं। लकड़ी के रंग बिरंगे मकान देख कर चित्त बड़ा प्रसन्न होता है। सुबह शाम सियेटल के नवयुवक और युवतियाँ झीलों की स्वच्छ समीर का आनन्द लूटते हैं।

इसी सियेटल शहर की प्रसिद्ध स्टेट-यूनिवर्सिटी में मैंने क़रीब दो साल विद्याध्ययन किया। शहर से बाहर झील के किनारे यह विश्वविद्यालय कैसे आनन्द का स्थान है। इसके

ढाई आने का एक सिक्का डाल देते थे। तब पिआनो मीठे राग अलाप कर यात्री का दिल खुश करता था। इस पिआनो का दिन रात यही काम था—अपने स्वामी के लिए धन पैदा करना।

आखिर टकोमा जाने वाला स्टीमर आया। मेरे पास टिकट पहले से ही था। टिकट दिखा कर मैं उस पर चढ़ गया।

शाम पड़ती थी। शीत के कारण यात्री प्राय अन्दर ही बैठे थे। मैं भी अन्दर ही घुस गया और कुर्सी पर बैठ कर अपनी पुस्तक पढ़ने लगा। एक घंटे के बाद जी उकताया तो बाहर निकल कर घूमने लगा। देखता क्या हू कि दो सिक्ख खाकी फ़ौज की पोशाक पहने एक बैंच पर बैठे हैं। दूसरे यात्री उनको देख देख कर हस रहे हैं। क्योंकि उनके सिरों पर पगड़ियां थीं और इधर पगड़ी वालों को लोग बहुत घृणा से देखते हैं।

मेरे सिर पर टोपी थी। मेरा रंग भी ऐसा बुरा नहीं। देखने वाला शीघ्र पहचान नहीं सकता कि मैं भारतीय हूं। मुझे इन लोगों ने नहीं पहचाना। मैं इन के पास बैठ गया। मैंने इनसे कुछ हिन्दी में पूछा। एक आदमी थोड़ी अंगरेज़ी जानता था। वह टूटी फूटी अंगरेज़ी में उत्तर देने लगा—हालांकि मैंने हिन्दी में प्रश्न किया था। आखिर, मैंने ठेठ पञ्जाबी में उनसे पूछा तो मालूम हुआ कि ये नये ही अमरीका में आये हैं। फिलिपीन द्वीप के मनीला नगर से इन्होंने सियेटल का टिकट लिया था। इसी से बिना किसी रोक टोक के ये सियेटल पहुच गये।

ये लोग अमरिका के धूर्तों से ... सियेटल पहुच कर स्टीमर से उतरते ही ये

दो पहर को मैं शहर गया। अपना बड़ा बकस अपने मित्र मिस्टर जार्ज स्वान के यहाँ रख दिया। न्यूयार्क पहुचने पर उसे मँगवा-लूगा। छोटा बेग अमरीकन एक्स प्रेस कम्पनी द्वारा टकोमा से पोर्टलैंड भेज दिया जायगा।

अपना सब सामान ठीक कर लिया है। कल सुबह होते ही यहाँ से टकोमा के लिए कूच करूंगा। परमात्मा को स्मरण कर सोने की तैयारी की। जेब में इस समय तीन डालर पचास सेन्ट हैं।

जून ६—सियेटल से टकोमा को दो रास्ते जाते हैं—एक जल द्वारा, दूसरा स्थल द्वारा। यदि रेल से कोई जाय तो किराया अधिक होता है। स्टीमर से किराया कम है। इसलिए प्रायः सियेटल से टकोमा अथवा टकोमा से सियेटल जाने आने वाले लोग स्टीमर द्वारा ही जाते हैं।

प्रात काल के स्टीमर से मैं न जा सका। ज़रा देरी हो गई। इसलिए दूसरे स्टीमर की राह एक बजे तक देखनी पड़ी। टकोमा के स्टीमर पर सवार होने के लिए, बन्दरगाह पर, मैं ११ बजे ही पहुच गया। वहाँ मैं एक हिन्दी पुस्तक पढ़ने में लग गया। बहुत से यात्री वहाँ बेंचों पर बैठे अपने अपने स्टीमरों का मार्ग देख रहे थे।

यहाँ एक नई कल देखने में आई। इस कल का काम इश्तिहारबाजी था। सियेटल की कई एक प्रसिद्ध कम्पनियों के नाम, धाम तथा काम आदि बिजली भरे हुए अक्षरों में छपे थे। धीरे धीरे से, बारी बारी से, दर्शकों के सामने आते और उनको अपना गुणानुवाद सुना कर कुछ काल के लिए लोप हो जाते थे। बस दिन भर इस कल का यही काम था।

इसी के पास ही एक फिआनो रक्खा हुआ था। उसके एक ओर छोटा सा सूराख था। इस सूराख में रसिक यात्री

ढाई आने का एक सिक्का हाल देते थे। तब पिआनो मीठे राग अलाप कर यात्री का दिल खुश करता था। इस पिआनो का दिन रात यही काम था—अपने स्वामी के लिए धन पैदा करना।

आखिर टकोमा जाने वाला स्टीमर आया। मेरे पास टिकट पहले से ही था। टिकट दिखा कर मैं उस पर चढ़ गया।

आज बदली थी। शीत के कारण यात्री प्राय अन्दर ही बैठे थे। मैं भी अन्दर ही घुस गया और कुर्सी पर बैठ कर अपनी पुस्तक पढ़ने लगा। एक घंटे के बाद जी उकताया तो बाहर निकल कर घूमने लगा। देखता क्या हू कि दो सिक्ख खाकी जीन की पोशाक पहने एक बेंच पर बैठे हैं। दूसरे यात्री उनको देख देख कर हस रहे हैं। क्योंकि उनके सिरों पर पगड़ियां थीं और इधर पगड़ी वालों को लोग बहुत घृणा से देखते हैं।

मेरे सिर पर टोपी थी। मेरा रंग भी ऐसा बुरा नहीं। देखने वाला शीघ्र पहचान नहीं सकता कि मैं भारतीय हू। मुझे इन लोगों ने नहीं पहचाना। मैं इन के पास बैठ गया। मैंने इनसे कुछ हिन्दी में पूछा। एक आदमी थोड़ी अंगरेज़ी जानता था। वह टूटी फूटी अंगरेज़ी में उत्तर देने लगा—हालांकि मैंने हिन्दी में प्रश्न किया था। आखिर, मैंने ठेठ पजाबी में उनसे पूछा तो मालूम हुआ कि वे नये ही अमरीका में आये हैं। फिलिपीन द्वीप के मनीला नगर से इन्होंने सियटल का टिकट लिया था। इसी से बिना किसी रोक टोक के ये सियेटल पहुच गये।

ये लोग अमरिका के धूर्तों से नावाकिफ़ थे। इसलिये सियेटल पहुच कर स्टीमर से उतरते ही ये लोग उनके जाल

में फस गये। ज्योंही ये लोग स्टीमर से बाहर निकले, गाड़ी वालों ने इनको देखा। किस रूप में? खाकी ज़ीन की पोशाक पहने, पगड़ियां बांधे, और उन पगड़ियों पर अपने बड़े बड़े पट्टूए रक्खे हुए! बस फिर क्या था? गाड़ी वालों ने समझ लिया कि आज चिड़िया फँसी।

दोनों को पकड़ कर उन्होंने गाड़ी में बिठा लिया। असबाब अन्दर लाद लिया और ले चले कहां? एक बहुत बढ़िया पांच रुपये रोज़ के, होटल के आगे ले जाकर इन्होंने गाड़ी खड़ी की और इन बेचारों को अन्दर से निकाला। पहले पन्द्रह रुपये फी आदमी से गाड़ी का भाड़ा लिया। फिर होटल में उनकी खूब दिल्लगी उड़ाई। जब इनकी वहां से नजात हुई और ये दोनों नौकरी के तलाश में निकले तो नौकरी दिलाने वाली कम्पनियों के जाल में फस गये। वहां पांच रुपये देने की जगह दस रुपये देकर टकोमा की तरफ नौकरी ढूंढने चले थे। इस बदकिस्मती को तो देखिए!

मैंने इनकी सारी कथा सुनी। दुख के सिवा और क्या हो सकता था। सियेटल में काम की कमी न थी। इन लोगों को आसानी से वहां काम मिल सकता था, यदि ये लोग किसी वाकिफ़कार हिन्दुस्तानी से मिलते। खैर, मैंने इनसे कहा कि अब जिस जगह का कागज़ तुम्हारे पास है वहां जाव। यदि वहां काम न मिले तो फिर सियेटल लौट कर "मिडवे लम्बर कम्पनी" में आना। वहां अपने यहां के लोग बहुत हैं। वे काम दिला देंगे।

अब एक और तमाशा देखिए। अमरीका में प्रायः सभी लोग फैशन के गुलाम हैं। काली पोशाक चाहे सर्ज की हो, चाहे बनात की, चाहे गहरे नीले रंग की, साधारणतया सब लोग उसे पसन्द करते हैं। पोशाक में अधिकतर उसूल यह

रक्खा गया है कि ऊपर का कपड़ा जल्द मैला न हो। अन्दर सब कोई बनियायन पहनते हैं। जो शीघ्र धुल सकती है। जहां फ़ेशन का इतना ख्याल है और जहां कालर, टाई के बिना कोई बाहर नहीं निकलता, वहां हिन्दुस्तानी पोशाक में घूमना सचमुच एक स्वांग के सिवा और कुछ नहीं और फिर अमरीका के उस प्रान्त में जहां 'हिन्दू' नाम से चिढ़ हो।

इस कारण टकोमा पहुंचते ही जब हम लोग उतरे तब सब कोई हम लोगों को देख कर घूरने लगे। वहां दो तीन टोपीवाले भारतीय मज़दूर भी खड़े थे। उन्हों ने मेरे साथ तो बात चीत की, पर पगड़ी वालों से वे बोले तक नहीं, कारण यह कि लोग हमें भी हसेंगे।

खैर, मैंने उन दो सिक्ख भाइयों को सब बातें बतला कर विदा किया। सियेटल में दो एक मित्रों का नाम, धाम भी मैंने बतला दिया, ताकि यदि टकोमा में कार्य्य सिद्ध न हो तो सियेटल लौट कर ठिकाने पहुंच जांय। उनसे छुट्टी पाकर मैं यङ्गमेन क्रिश्चियन एसोसियेशन में गया। यह एक बड़ी इमारत है। वहां बैठ कर दो चार आवश्यक पत्र लिखे। इस कार्य से छुट्टी पाने पर रात को सोने और खाने पीने की खोज में चला।

टकोमा एक लाख की बस्ती है। आबादी दिनों दिन बढ़ रही है। समुद्र के किनारे होने के कारण लकड़ी लाने में बड़ा सुभीता है। वाशिंगटन रियासत के जंगलों से बहुत लकड़ी यहां के कारखानों में आती और कटती है। कट कटा कर यह अनेक रूप में देश देशान्तर को जाती है। शहर पहाड़ी के ऊपर बसा है। बिजली की गाड़ियां एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ती रहती हैं। परन्तु शहर में दुराचार बहुत होता है। मजदूर लोग जो पैसा पैदा करते

हैं प्रायः उसको पानी की तरह बुरे कामों में खर्च कर देते हैं। शराब की दुकानें यहां बहुत हैं। यह पाश्चात्य सभ्यता की महिमा है जिसका आविर्भाव इस तरफ़ के प्रायः सभी शहरों में है। यहां के भारतीय मज़दूरों में से दो एक मेरे परिचित थे। इसलिये सोने खाने का कष्ट नहीं उठाना पड़ा। भाई चूहड़खां से मेरी जान पहचान वेंकोवर की थी। मुझसे मिल कर आप बहुत प्रसन्न हुए। यथाशक्ति मेरी खातिर तवाजो भी उन्होंने की।

मुझे दूसरे दिन पैदल जाना था इसलिये मैं स्टेशन पर टाइमटेबिल लेने गया। वहां से जब मैं लौट रहा था तब रास्ते में मुझे एक होबो (Hobo) मिला। इस शब्द का मेरे भ्रमण से बड़ा सम्बन्ध है। इसीलिए मैं इसे यहां पर लिखता हूं। इसके विषय में आगे चल कर मैं सविस्तार लिखूंगा अंधेरा होजाने के कारण मैं बहुत सावधानी से चल रहा था। मुझे इस होबो ने देखा तो बोला—

"Hollo ! Bum !!"—कहो "मरज़ुले राम !"

मैंने हंस कर कहा—"जी हां—आप अपनी कहिए।"

"मैं भी वैसा ही हूं।"

"अच्छा, तो खूब मिले। नगम नंग चवाल सों" इतना कह मैं ज़रा मुसकराया और आगे बढ़ गया। चूहड़खां मेरा रास्ता देख रहा था। वहां पहुंच कर मैंने सोने की तैयारी की। मज़दूर लोग मुझे बेवकूफ़ समझते थे, क्योंकि मैं पैदल सफ़र करने चला था। एक ने कहा कि हम लोग आपको यहां से पोर्टलैंड का किराया दे देते हैं पर यहां तो धुन ही और थी।

खुरमाग बिस्तरे पर पड़ गया। पर नींद नहीं आती—यह क्यों ?

जिस मनुष्य को सदा साफ सुथरे बिस्तरे पर सोने की आदत हो, जो खाने और पहनने में सदा स्पर्श और घ्राणेन्द्रिय के आज्ञानुसार चलता हो, जिसके सदा अच्छे कमरे में सोने का अभ्यास हो वह यदि मज़दूरों के बिस्तरे पर पड़ा हो तो कैसे नींद आवे। घ्राणेन्द्रिय बार बार उससे कहती है कि यहां मैं न सोने दूंगी , ये कपड़े मैले हैं। स्पर्शेन्द्रिय कहती है—"हैं! यहां तो हैं।" सफल्प विकल्पों की धूम मच रही है। अन्त में एक ज़बरदस्त आवाज़ ने सब को चुप कर दिया—

"देखो, करोड़ों भारत सन्तान मैले कुचैले बिस्तरे पर सोते हैं। उनके दुःख का अनुभव तभी हो सकता है जब उनके बिस्तरों पर सोया जाय। अपढ़ भारतसन्तानों के दुःख को शिक्षित भारतवासी इसलिए नहीं समझते, उनके साथ इसलिए हमदर्दी नहीं करते, क्योंकि उनको अपने अविद्या अन्धकार में पड़े हुए भाइयों के दुःख का अनुभव अन्य मात्र नहीं है। देखते नहीं, ये भारतीय मजदूर तथा भारत के अधिकांश निवासी स्वदेश में ऐसे ही बिस्तरों पर सोते हैं, क्या उनको तुम्हारी तरह साफ सुथरे बिस्तरों की जरूरत नहीं! क्या वे आदमी नहीं! देखो, इस अन्याय का पहला अनुभव आज मैं तुम्हें करा रहा हूं" बस, तसल्ली हो गई और मैं सो गया।

जून ७—प्रातःकाल परमात्मा का नाम लेकर मैं चूहड़-खाँ के घर से चला। टकोमा में ये मेरे आखिरी घंटे थे। इसलिये इसकी अच्छी तरह झांकी लगाना मैंने उचित समझा। टकोमा एक खाड़ी पर बसा है। यह एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर, सुन्दर मकानों से विभूषित और बिजली

की रोशनी से अलङ्कृत है। आधुनिक वैज्ञानिक रीति से बसा हुआ यह शहर किसी दिन बहुत बड़ा नगर हो जायगा। क्योंकि पानी पास है और उस पर जहाज़ आते जाते रहते हैं। टकोमा का सम्बन्ध समुद्र के होने के कारण इसकी पैदावार चीन और जापान को सीधी जाती है। लकड़ी, अनाज, रुई और दूसरी चीज़ें यहां से एशिया में, अन्यत्र भी जाती हैं।

इस शहर में आटे की पांच बड़ी चक्कियां हैं। उनसे लाखों मन आटा पिसता है और देशदेशान्तरों को जाता है। यहां पर लकड़ी के भी बड़े बड़े पुतलीघर हैं। उनसे, पिछले साल, चालीस करोड़ फीट लकड़ी कट कर बाहर भेजी गई थी। यहां पर धातु शुद्ध करने के भी कारखाने हैं। उनमें एलास्का, केनेडा, आरेगन आदि की खानों से निकली हुई मिश्रित धातुयें शुद्ध की जाती हैं।

यहां के लोग मालदार हैं। यह बात शहर को देखने से ही मालूम हो जाती है। परन्तु पाश्चात्य सभ्यता की बुराइयां भी यहां मौजूद हैं, जिनके चिह्न हर जगह देख पड़ते हैं।

ख़ैर, मैंने झांकी लगा ली और अपना रास्ता पकड़ा। दिन चढ़ गया था। मेरे पास मेरा बैग था। उसे साथ कैसे ले चलता। इससे बेहतर यही समझा कि इसे पहले ही पोर्टलैंड भेज देना चाहिए। इसलिए टकोमा स्टेशन पर आ कर उसे मैंने अमेरिकन कम्पनी के हवाले किया और ४५ सेन्ट, अर्थात् डेढ़ रुपये, के क़रीब किराया दिया। अमेरिका में ऐसी कई कम्पनियां हैं जिनका काम पारसलों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर रेल द्वारा पहुंचाना है। एक देश से दूसरे देश को भी ये कम्पनियां असबाब भेज सकती हैं और मंगा सकती हैं। लाखों करोड़ों रुपये का माल इन

कम्पनियों के द्वारा त्रिसावर को आता और वहाँ से जाता है। इनकी कुटियाँ चलती हैं और इनकी शाख दुनियाँ के क़रीब क़रीब सभी सभ्य देशों में है।

अपने बेग को कम्पनी वालों के हवाले कर मैंने छुट्टी पाई। अब मेरे पास कुछ पैसे कम ढाई डालर रह गये थे। कुछ असबाब साथ नहीं था, केवल एक छाता और डायरी हाथ में थी। हाँ, मेरी जेबें ज़रूर भरी हुई थीं। आधे दर्जन रूमाल एक उस्तरा, बाल ठीक करने की कंघी, साबुन की बट्टी, एक पेंसिल, रेलवे का टाइमटेबल—बस, यही चीज़ें मेरी पाकटों में थीं। तमंचा या और कोई शस्त्र साथ लेना मैंने उचित न समझा। रामभरोसे रेल की सड़क सड़क चला।

आज मौसिम अच्छा न था। बादल घिर आये थे; बूँदा बाँदी आरम्भ हो गई थी। अपना छाता ताने मैं अकेला रेल की सड़क पर जा रहा था। सड़क के दोनों ओर हरे हरे वृक्ष थे। उनमें से वर्षा का जल टप टप करता सुनाई देता था। अपने सामने कुछ फ़ासले पर मैंने एक पुल देखा। उसके नीचे एक आदमी खड़ा था। मुझ से ५०० गज़ के फ़ासले पर वह होगा। मैं चुप चाप बढ़ता चला गया। पुल के पास पहुँचा तो मैंने देखा कि एक बुड्ढा आदमी अपना बोरिया बिस्तरा ज़मीन पर रक्खे एक शिला पर बैठा हुआ कुछ खा रहा है। उसने मेरी ओर देखा। मैंने उससे बोलना उचित न समझा और आगे बढ़ता चला गया।

जब मैंने विक्टोरिया से अमरीका-भ्रमण का इरादा किया था तब अपने एक हितैषी अमेरिकन से पूछा था कि क्या मुझे रास्ते में लुटेरे तो नहीं मिलेंगे। उसने यह कहा था कि

तुमको रास्ते में डाकू तो नहीं मगर होबो लोग (Hobo) * मिलेंगे। मगर उनके मुँह न लगना, अपने रास्ते चले जाना, उनसे अधिक मिलना जुलना नहीं। इस लिये मैंने इस बुड्ढे से बात चीत नहीं की। अपने रास्ते चला गया। पर मुझे यह नहीं मालूम था कि दैव मुझे कई रातें इन्हीं के साथ बिताने के लिये मजबूर करेगा, जिसमें मैं मनुष्य-समाज के एक दूसरे परदे का नज़ारा भी देख लूँ।

ख़ैर, ग्यारह बजे के क़रीब मैं लेक-व्यू (Lako Vi w) नामक जगह में पहुँचा। भूख बहुत लगी थी। सुबह कुछ खाया न था। लेक-व्यू टकोमा से थोड़े ही फ़ासले पर है। यह एक छोटा सा क़सबा है। घर गिनती के हैं, पर हैं एक दूसरे से फ़ासले फ़ासले पर। यहाँ लेक-व्यू होटल है। पर मुझे तो होटल से कुछ काम न था। मुझे तो सिर्फ़ दूध चाहिये था। इसलिए मैंने एक वृद्ध पुरुष से दूध के लिये पूछा। बुड्ढे ने उत्तर दिया—

"भला इस वक्त दूध कहाँ। जिनके पास गायें हैं वे प्रातः काल दुह कर दूध बेच देते हैं। सायङ्काल दुह कर रख छोड़ते हैं उस समय कोई आ जाय तो चाहे भले ही मोल ले ले बाद को नहीं मिलता।"

देहात में जिनके गायें हैं उनके पास बहुधा दूध छाछ, मक्खन जुदा करने वाली कलें भी हैं। वे दूध दुह कर फ़ल

---

* अमेरिकन परिभाषा में होबो उसे कहते हैं जो काम कुछ न करे और सदा घूमता फिरता रहे। रेलगाड़ी के गार्ड को धोखा देकर सफ़र करे। भूख लगने पर भीख माँग खाय, या एक आध दिन सख्त ज़रूरत पड़ने पर, काम भी कर ले। मौका लगे तो आँख बचा कर चीज़ भी चुरा ले और लूट भी ले। मुझको इनके साथ रहने का बहुत इत्तफ़ाक़ पड़ा।

— लेखक।

से मक्खन निकालते हैं और छाछ सुअरों को दे देते हैं। मक्खन और 'क्रीम' ये गाड़ी वाले को बेच देते हैं जो प्रति दिन शहर से गाड़ी लेकर आता है। गाड़ी वाला बड़े धनियों का नौकर होता है। धनियें इसी प्रकार देहात वालों से माल खरीदते हैं, इसीसे देहात में ढूंढने से भी दूध नहीं मिलता। शहर में अलबत्ता मिल सकता है। मुझे होटल से दूध मिल सकता था, मगर वह आधा पानी और अधिक दाम पर। एक और बात है। होटल से मुझे नफ़रत है, पर सोने के लिए जाना ही पड़ता है।

जब दूध न मिला तब मैंने एक भले घर की स्त्री से रोटी मोल लेनी चाही। वह स्त्री एक दूसरे घर को काम पर जा रही थी। मुझसे उसने कहा—

"आप यहीं ठहरिये, मैं लौट कर आती हूं।"

"बहुत अच्छा" कह कर मैं वहीं ठहरा रहा। थोड़ी देर बाद वह स्त्री आई और मुझे अपने घर ले गई। बड़े प्रेम से उसने ले जाकर बिठलाया।

वार्तालाप करने से मालूम हुआ कि वह सोशलिस्ट है और उसने मेरे विषय में अखबारों में पढ़ा है। "टकोमा लेजर" नाम का एक अखबार है, उसमें मेरे भ्रमण के विषय में देक लेख छपा था। उसे इस रमणी ने भी पढ़ा था। इससे बहुत काम निकला। उस स्त्री की श्रद्धा मुझपर बढ़ गई।

भारत के विषय में बहुत कुछ बात चीत हुई। उस महा नारी का भारतवर्ष प्रेम देखकर मैं दंग रह गया। वह तो मेरे लिए खाने पकाने में लग गई और मैं वृक्ष के साये में बैठा सोचने लगा—

"कहां लेक-व्यू और कहां भारतवर्ष! कितना फ़ासला। यह स्त्री बुड्ढा! मेरे देश से प्रेम कैसे? यह केवल

विद्या का प्रभाव है। स्त्री शिक्षिता है। शिक्षा ने हज़ारों मीलों की दूरी को निकट कर दिया। दुःखी भारत के इतिहास को इस रमणी ने पढ़ा है, इसी से उस पर इसका प्रेम है, इसी से भारतवासियों के प्रति इसे इतनी हमदर्दी है और यह मेरे साथ माता के तुल्य सलूक कर रही है।"

आहा! सुशिक्षा में कितना बल है। भारत की रमणियां मूर्ख हैं, भारत-सन्तान अन्धकार में हैं, तभी तो उनके खिल सक हैं। घर से बाहर की ख़बर नहीं, अख़बार पढ़ने की लियाक़त नहीं, देश देशान्तरों का हाल मालूम नहीं। उन्नति कैसे हो। विचारशक्ति कैसे बढ़े। घी पत्ते के ऊपर है, या पत्ता घी के ऊपर—ऐसी वितण्डाओं में आयु गुज़र रही है। दूसरे देशों में ग्रामीण औरतें अख़बार पढ़ती हैं, सब बातों का पता रखती हैं। पुस्तकें अवलोकन करती हैं ज़िन्दगी का मज़ा लेती हैं। यह स्त्री सोशलिस्ट है। सोशलिज़्म क्या है? इसकी जानकारी पाठक अंगरेज़ी पुस्तकें देख कर प्राप्त कर सकते हैं। खाना तैयार हो गया। मैंने उस देवी से कह दिया था कि मैं मांस और अंडे नहीं खाता, इससे उसने फलाहारी खाना बनाया और मेरी क्षुधा निवृत्ति हुई। साढ़े बारह बज गये थे। वृद्धा से रुख़सत होकर मैं अपने रास्ते लगा।

धूप निकली हुई थी। सूर्य देवता प्रसन्न थे। मैंने रेल की सड़क सड़क चलना ही उचित समझा। रास्ते में बिस्तरे पीठ पर रक्खे हुए तीन और आदमी मुझे मिले। वे लोग भी उधर ही जाते थे जिधर मेरा रुख़ था। पर मैंने क़दम बढ़ाया और इनसे आगे निकल गया। खुला मैदान सामने था। कहीं कहीं वृक्षों की कुंजें भी मिलती थीं। तीन बजे के क़रीब मैं राय (Roy) नाम के स्थान पर पहुंचा। टकोमा से राय बीस मील की दूरी पर है। आज वहीं ठहरने का मैंने इरादा किया।

राय तीन सौ की आबादी का गाँव है। यहाँ पर भी हाइस्कूल है। शरावखाना भी है। एक अखबार "राय इन्टरप्राइज़" (Ray Enterhrise)यहाँ से निकलता है, जिसके दो सौ पचास ग्राहक हैं। मैं यहाँ के पादड़ी, मिस्टर हट, से मिलने गया। मेरा विचार यहाँ व्याख्यान देने का था। पर पादड़ी साहिब भला काहे को मानते। पादड़ी साहिब का पहला सवाल यह हुआ—"क्या आप किरानी हैं ?"

मेरा यह तजरिबा पहला ही न था। अमेरिका में मैंने यह अच्छी तरह आजमा कर देख लिया है कि ईसाई पादड़ी प्रायः तङ्ग दिल के होते हैं। इनको विशेष करके अपने हलवे मांड़े की ही फिक्र रहती है। व्याख्यान देते और बाइबिलें बांटने में ये बड़े होशियार—पर किसी विभिन्न विचार वाले के साथ हमदर्दी करना ये बहुत कम जानते हैं। इसी से अमेरिका में ईसाई धर्म का ह्रास हो रहा है। पादड़ी लोग रुपये पैसे और मान प्रतिष्ठा के भूखे हैं, सब अपनी अपनी फिरके बन्दियों में पड़े हुए हैं।

पादड़ी महाशय से निपट कर मैं "राय इन्टरप्राइज़" के सम्पादक मिस्टर बीयर, के पास गया। मिस्टर बीयर वृद्ध हैं, मगर हैं बड़े मज़बूत। एक कमरे में इनका छापाखाना है। खुद ही अखबार लिखते और छापते हैं, दूसरे की ज़रूरत नहीं। आप की हिम्मत देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। आप से वार्तालाप किया तो मालूम हुआ कि आप हिन्दू धर्म को सब धर्मों से अच्छा समझते हैं और आवागमन के क़ायल हैं। मैंने पादड़ी हट का ज़िक्र किया और उनकी तंगदिली की शिकायत की तो आप हंस कर बोले—

"वे "God is love" अर्थात् ईश्वर प्रेममय है—इस सिद्धान्त के मानने वाले हैं। भला वे आप को व्याख्यान क्यों

देने देंगे। हां, अगर आप ईसाई धर्म्म की तारीफ़ करें और हिन्दू धर्म को गालियां दें तो अलबत्ता वे कुछ करें। वह भी तब, जब आप C ngro;ational1st * हों तो।"

मैंने पूछा—"क्या कहीं व्याख्यान का प्रबन्ध हो सकता है?"

मिस्टर बीयर—"यहां एक बड़ा कमरा व्याख्यानों के लिए है उसका मालिक उस (हाथ के इशारे से खिड़की के बाहर) शराब खाने का मालिक है। उसके पास जाओ तो वह ज़रूर ही मंज़ूर कर लेगा। मैं आपके नोटिस मुफ्त छाप दूंगा। लोग इकट्ठे हो जायगे।"

मैं—"शराबखाने में मैं कभी नहीं गया और न मैं उसके मालिक के पास जाना ही चाहता हूं। आप इतनी कृपा करें कि जो मैं कहना चाहता हूं उसका सक्षेप अपने अखबार में छाप दें।"

मिस्टर बीयर—"बहुत अच्छा।"

कागज-कलम लेकर मिस्टर बीयर ने मेरे विचार लिख लिये और वादा किया कि वे अपने अखबार में वह सब छाप देंगे।

अपने कर्तव्य से निपट कर मैं होटल में सोने के लिए गया। और जगह सोने को न थी, इस लिए यहीं आना पड़ा बारह आने के पैसे एक रात के दिये। खाने के लिए १० रोटी और शक्कर ले आया। यहीं खाकर सो रहा।

जून ८—प्रातःकाल चार बजे उठ कर और नित्यकर्तव्य से निवृत्त होकर मैंने प्रस्थान किया। इस समय पांच बज चुके थे। ठंडी हवा चल रही थी। वाशिङ्गटन रियासत

---

* ईसाई मज़हब के एक फिरके का नाम है—लेखक।

के घने जंगलों के दृश्य अब शुरू हो गये थे। ऊँची ऊँची पहाड़ियों के बीच से रेल की सड़कें सांप की तरह बल खाती हुई पोर्टलैण्ड को गई हैं। पहाड़ियां वृक्षों से लदी हुई हैं। ऊंचे ऊंचे वृक्षों की चोटियाँ आकाश से बातें करती हैं। यत्र तत्र झरनों का शब्द हो रहा था। उनके सोतों के पास टीन के बरतन पड़े हुए थे, जो अमेरिकन घुमक्कड़ों ने प्यास बुझाने के लिए रक्खे थे।

सुबह की सैर से बड़ा आनन्द मिलता है। जगलों के बीच से प्रकृति की शोभा देखता हुआ मैं चुपचाप आ रहा था, सब संसार शान्त था। हां, प्रकृति अपनी वाणी से इस शान्ति को भंग करती थी। ज्यों ज्यों दिन चढ़ता गया, शब्द की महिमा बढ़ती गई। पक्षियों ने अपना राग आरम्भ किया; वन बिलावों का चीत्कार भी पहाड़ियों में सुनाई देने लगा।

मैं बढ़ता गया। सड़क पर काम करने वाले मजदूरों की भरमार दिखाई देने लगी। कहीं पचास का दल काम करता दृष्टि पड़ता, कहीं सौ का। इनमें से शायद कोई अमेरिकन मजदूर हो, सभी परदेशी थे। हां सब का जमादार अमेरिकन था। जापानियों के दल भी काम करते थे। आस्ट्रिया, इटली, रूमी आदि देशों के मजदूरों की अधिकता थी। यहां नई सड़क बन रही थी। पोर्टलैंड से टकोमा को रेल का प्रबन्ध हो रहा था। इन मजदूरों में प्रत्येक को कोई पांच रुपए रोज मिलता था।

इनके खाने, कपड़े, पकाने का प्रबन्ध इस प्रकार था। किसी छोटे स्टेशन पर एक ओर लाइन डाल कर मजदूरों की गाड़ियां खड़ी की गई थीं। उन्हीं में से एक गाड़ी में]

खाना पकता था। वहीं सब खाते थे। आपानी बावरची आपानी लोगों के लिए रोटी बनाता था। थोड़े थोड़े फासले पर स्टेशन हैं। जहां दस पांच घर हुए वहीं पड़ाव डाल दिया। भिन्न भिन्न पड़ावों पर भिन्न २ वृत्त के मजदूर काम करते थे।

ये पड़ाव, पड़ाव ही नहीं रहते। बहुत शीघ्र यह शहर बन जाते हैं। जहां पानी की कमी है या अच्छा पानी नहीं है या बहुत दूर तक खोदने पर पानी मिलता है, वहाँ बर्फ़ीले पर्वतों से—सौ पचास मील की दूरी से—पानी लाया जाता है। एक बड़े सोते के पास तालाब खोद कर उसमें बड़े बड़े नल लगा दिये जाते हैं। उनका सम्बन्ध छोटी छोटी नालियों से कर दया जाता है। इस प्रकार पर्वतों के बीच मीलों दूरी पर से पानी आता है—सुन्दर स्वच्छ, मीठा जल शहरों और गावों के रहने वालों को मिलता है। जहाँ पानी की दिक्कत दूर हुई वहाँ लगी बस्ती बढ़ने।

एक गुण अमरिकन लोगों में बहुत बड़ा है। ये लोग दिक्कतों को दूर करने में बड़े निपुण हैं। सड़क सड़क जाता था—पानी लाने के लिए खोदे के नलों को देखता था—काम करने वाले मजदूरों से बातें करता था और सोचता था। क्या हमारे देश में ऐसे प्रबन्ध नहीं हो सकते? क्या हमारे भारतीय लोग पर्वतों का शुद्ध स्वच्छ जल नहीं ला सकते? परन्तु वे अभागे गन्दे तालाबों का पानी पीते हैं—सड़े हुए कुएँ का जल काम में लाते हैं। उसी जल में उनकी गायें और भैंसें नहाती हैं, उसी जल में वे लोग कपड़े धोते हैं और उसी को पीते भी हैं। हे नाथ! भारत-सन्तान की इन दुःख-मालिकाओं को दूर कीजिए। ऐसे ही जल के इस्तेमाल से महामारी और प्लेग आदि का भयानक कोप होता है। उससे लाखों का प्राण हर धर्म जाता है।

परमात्मा ने हमें ऐसा सुन्दर देश दिया है, जहाँ उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सब कहीं प्राकृतिक पदार्थों की बहुतता है। पर्वतों सोतों, नदियों और झरनों की कमी नहीं। यदि कमी है तो उद्योग की। कवि ने ठीक कहा है—

उद्योगेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

हमारे देश में कहीं भी पानी की कमी नहीं हो सकती राजपूताना भी वर्षाऋतु के जल को रोक लेने से बड़े बड़े तालाबों से विभूषित हो सकता है जिनके द्वारा लाखों एकड़ भूमि में सींचे जा सकते हैं। हमारे देश में जगह जगह नलों द्वारा पानी लाया जा सकता है; पर्वतों से पानी लाकर शहर वालों की तृप्ति की जा सकती है। सब लोग आनन्द और सुख से रह सकते हैं। पर उद्योग कौन करे ?

खुदा ने यहां मक्खियां मारने को।
बनाये हैं मुफ़्त क्यों कैसे कैसे॥

सचमुच ही उद्योग बड़ी चीज़ है। अमेरीका में जंगलों को साफ़ करके घर बसाये गये हैं। बड़े बड़े गांव और क़सबे आबाद हो रहे हैं। कहीं गायों के झुरड खेतों में चर रहे हैं, कहीं बैलों के। कहीं शूकरों की मण्डलियां धूप का आनन्द ले रही हैं और जो सामने आया है उसी को चट कर जाती हैं। इकेले दुकेले किसानों के घर मीलों के घेरे में दृष्टि पड़ते हैं।

भूख लगी हुई थी। सुबह कुछ खाया नहीं था और बारह बजने पर थे। रेल की सड़क के पास ही घोड़े गाड़ी की सड़क भी आरम्भ हो गई थी, क्योंकि मैं अब पर्वतों से निकल आया था। रेल की सड़क छोड़ कर मैंने दूसरी सड़क

था। एक किसान का बारह वर्ष का लड़का घोड़े गाड़ी पर सवार कहीं जाने को तैयार था। मैंने उससे पूछा:—

"क्या यहाँ दूध मिलेगा ?"

"हाँ मिलेगा। आप उस सामने वाले घर में (हाथ से इशारा करके) जाइये और कहिए कि 'जो' (Joe) ने मुझे भेजा है। आपको दूध मिल जायगा।"

लड़के को धन्यवाद दे कर मैं खेत का द्वार खोल अन्दर गया। वहां एक आदमी खेत पर काम खतम करके घर आ रहा था। मैंने उसके पास पहुंच कर दूध के लिए पूछा और 'जो' की सिफारिश भी सुनाई। वह आदमी कोई पचीस वर्ष का होगा। उसने मुझे आदर पूर्वक एक वृक्ष के नीचे बिठलाया और आप अन्दर दूध लेने गया। कुछ देर बाद दूध, मक्खन और रोटी एक बर्तन में रक्खे वह बाहर आया और मुझे दिया। मैंने धन्यवाद देकर पांच आने के पैसे उसके हाथ में दिये। यह किसान अच्छा मालदार था— नये, सुन्दर घर में रहता था। दो बड़े बड़े कुत्ते बंधे थे जो रक्षकों का काम देते थे। बन्दूक और तमंचे तो यहाँ सभी के पास होते हैं, क्योंकि स्वरक्षा मनुष्य का धर्म है।

खाने से निश्चिन्त हो, कुछ देर विश्राम कर, मैं फिर सड़क पर पहुंचा और चला। वाप से सेण्ट्रेलिया नामक स्थान तीस मील है। मैं १८ मील आ चुका था। रास्ते में दो चार जगह ठहरने से मुझे देरी हो गई थी। इसलिए अब मैंने कहीं ठहरना उचित न समझ चलने की ठानी और पांच बजे शाम के सेण्ट्रेलिया पहुंच गया।

सेण्ट्रेलिया खासा गांव है। बस्ती यहां की घनी है। कारखाने खुल रहे हैं। बहुत शीघ्र यह शहर बन जायगा।

यहां एक अच्छा हाई स्कूल है, जहां शिक्षा का उत्तम प्रबन्ध है।

मैं थका हुआ था, इसलिए होटल में आकर मैंने एक कमरा लिया। १२ आने देकर मैं अपने कमरे में गया। कपड़े उतारे फिर खटिया की शरण ली। सारी रात मुझे दीन दुनिया की कुछ खबर नहीं रही।

जून ६—सुबह छः बजे मैं उठा। हाथ मुंह धो कर हजामत बनाई। ईश्वर का नाम लेकर कपड़ा पहन फिर अपना रास्ता लिया।

सेण्ट्रलिया से थोड़ी दूर पर चहेलस नाम का एक पांच हज़ार की आबादी का अच्छा कसबा है। मैं आठ बजे वहां पहुंच गया। इस गांव में दो साप्ताहिक अखबार "बिग निगेट" (Big Nigget) और "एडवोकेट" (Advoeate) नामो निकलते हैं। गलियां भी पक्की बन रही हैं। हाई स्कूल और बैंक भी हैं। यह गांव भी बढ़ रहा है। लोग अच्छे मालदार हो रहे हैं। ज़मीन की कीमत दिन बदिन बढ़ती जाती है।

यहां मैं कुछ देर घूमता रहा। एक रोटी की दूकान पर आकर रोटी ले आया। उसको एक जगह बैठ मैं खाने लगा। जब ज़रा कुछ सुस्ता आराम हुई तो फिर कमर कसी और चला।

रेल की सड़क आज बहुत खराब थी। मीलों कंकड़ों के ऊपर से चलना पड़ा। नई लाईन बनने के कारण मजदूर लोग कंकड़ बिछाने में लगे थे। छाता लिये हुए मैं उनके पास से गुज़रता तो वे बहुत हंसते। क्योंकि यहां मर्द धूप में छाता नहीं लगाते, स्त्रियां ही लगती हैं। एक मज़दूर ने मेरी हंसी उड़ा कर कहा—

"देखना, कहीं धूप से रंग काला न हो जाय।"

मैं कुछ न बोला, अपने रास्ते चला गया। असल मैं छाता धूप के डर से नहीं लगाया था, बल्कि सूर्य की तेज रोशनी से आंखों को बचाने के लिए छाते का उपयोग किया था। खैर, मैं बढ़ा चला गया। धूप सख्त थी। जहां जगलों के कारण छाया मिल जाती वहां ठण्डी हवा के कुछ झकोरे मिल जाते।

चौबीस मील का सफर तै करके पांच बजे मैं लिटिल फाल्ज़ पहुंचा। मेरे पैरों में आज छाले पड़ गये थे और थकान का क्या कहना। जब से टकोमा छूटा था एक बार भी पेट भर खाने को नहीं मिलता था। भला डबल रोटी और चीनी से कहीं पेट भरता है। कहीं जरा सा दूध मिल गया तो क्या हुआ, पर क्या किया जाता, मांस मुझे खाना न था।

"राय" में किसी ने मुझसे कहा था कि "लिटिलफाल्ज़" में आपके भारतीय मज़दूर कारखानों में काम करते हैं, सो यहां मैंने उनको ढूंढा। भूख सख्त लग रही थी और मिठाई से मुंह बिगड़ रहा था। मन में मैंने कहा कि यदि भारतीय बन्धु मिल जाय तो खूब रोटी तरकारी उड़े। मैंने कारखानों में जाकर बहुत देखा भाला, मगर नहीं मिले। बाद में पोर्टलैंड जाकर पता लगा कि वे इस गांव से कुछ मील दूर काम करते हैं।

अब मैं क्या कर सकता था। पांच आने में बिस्कुटों का एक डब्बा लिया। उन्हें खाकर तीन गिलास पानी पिया और अपने कमरे में आ कर सो रहा।

जून १०—आज बहुत सबेरे उठा और साढ़े चार बजे ही सड़क पर हो लिया। भूख बहुत लगी हुई थी, पर उसकी कुछ भी परवा न करके बराबर चलता ही गया।

पहाड़ियां फिर आरम्भ हो गई थीं और वृक्षों की सघनता भी थी। साम बजे के करीब कैसिल राक (Castle Rock) नामी एक छोटे से क़सबे में मैं पहुंचा। यहां एक दुकान वाली से रोटी मक्खन और नारंगियां खरीदीं। इससे भूख निवृत्ति की। अब मैंने रेल की सड़क छोड़ दूसरी सड़क पर चलना आरम्भ किया। एक घर के सामने कुछ वृक्ष थे। उनकी छाया में दम लेने को मैं खड़ा हो गया। उस घर की मालकिन और उसकी लड़की बाहर बरामदे में बैठी हुई पुस्तकें पढ़ रही थीं। मैं अहाते के बाहर सड़क पर खड़ा था। उस स्त्री ने मेरी ओर देखा और मुझ से पूछा—

"आप कहाँ से आते हैं ?"

"मैं टकोमा से आता हूं"

"क्या पैदल सफर कर रहे हो ?"

"जी, हां।"

"आप इस देश के वासी नहीं जान पड़ते ?"

"नहीं मैं इस देश का वासी नहीं। मेरा घर, भारतवर्ष में है।"

"आइए, अन्दर आकर कुछ सुस्ता लीजिए।"

रमणी का आदेश पाकर मैं अन्दर चला गया और बरामदे की सीढ़ियों पर आकर बैठ गया। उस स्त्री ने मुझ से भाँति भाँति के प्रश्न किये—

"आपके देश में अकाल बहुत पड़ता है ?"

"जी हां। भारत अकाल से बहुत पीड़ित रहता है।"

"इसका कारण क्या है ? मैं ख्याल करती हूं, बहुत आबादी इसका कारण है।"

"नहीं, आबादी के कारण नहीं। देश में पैदावार तो काफी होती है पर वहां रहने नहीं पाती।"

"अच्छा बेरियां तो खाइए। दरख्त पर चढ़ जाइए और खाइए।"

आज्ञा पाकर मैं दरख्त पर चढ़ गया और खूब पेट भर फल खाये। इसके बाद पेड़ से उतर और उस स्त्री से विदा होकर मैंने सड़क का रास्ता लिया।

जङ्गल फिर आरम्भ होगया था। पहाड़ों के दृश्य भी मनोहर थे। पहाड़ों से पानी लाने का काम यहां खूब हो रहा था। सैकड़ों मज़दूर इस काम में लगे हुए थे, जिनको साढ़े सात रुपया रोज़ मज़दूरी मिलती थी। छोटी छोटी नदियों के नजारे देखता हुआ मैं दो बजे के क़रीब प्रसिद्ध कोलम्बिया नदी के किनारे पहुचा। धूप की शिद्दत होने के कारण मैं पसीने से तर था। चित्त ने कहा कि इस नदी में स्नान करो। फिर क्या था, कपड़े उतार किनारे रक्खे और नदी में कूद पड़ा। अच्छी तरह मल मल स्नान किया। इसके बाद बनिआइन आदि धोकर उनको सुखाया भी। इस नदी के उस पार कई एक कारखानों की चिमनियों से धुँआ निकल रहा था। ये लकड़ी काटने के पुतलीघर हैं। यहां लाखों फीट लकड़ी प्रति वर्ष कटती है। मैंने जंगलों में कई जगह सेमें देखे। यहीं से लकड़ी काट काटकर इन पुतलीघरों में लाई जाती है। लकड़ी के व्यवसाय से वाशिंगटन रियासत को करोड़ों रुपये की आमदनी होती है।

चार बजे मैं कलामा पहुचा। यह कसबा बहुत साफ सुथरा है। इसकी आबादी भी दिनों दिन बढ़ रही है। आज मैंने ३० मील का सफर किया। कलामा होटल में एक कमरा

किराये पर लेकर सोने की तैयारी की और रात सुख से काटी।

जून ११—प्रातःकाल पाँच बजे उठ सफ़र के लिए तैयार हुआ। आज बादल घिरे हुए थे, मगर चलना अवश्य था। चल दिया। वर्षा आरम्भ हो गई। मैंने भागना शुरू कर दिया। तीन घंटे खूब ज़ोर की बारिश होती रही। मेरी पतलून सब भीग गई, क्योंकि बौछाड़ ज़ोर की लगती थी। पर क्या करता, लाचारी थी।

नौ बजे के क़रीब मैं युडलान पहुंचा। यहाँ रोटी तलाश की, मगर न मिली। भूख के मारे जी घबरा रहा था, पर लाचार होकर आगे बढ़ा।

रिजफील्ड पहुचा तो मैंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया कि यहाँ खाने को रोटी तो मिलेगी। गांव की ओर जाने ही को था कि किसी ने आवाज़ दी—

"हेलो, देवा।"

हैरान हो मैंने घूम कर देखा। सामने ईस्टरडे खड़ा था। मैंने आगे बढ़ कर उससे हाथ मिलाया और पूछा—

"तुम कहाँ ?"

"तुम कहाँ ?"

मैंने हँस कर कहा—"पहला प्रश्न मेरा है।"

"मुझे यह बताओ कि तुमने यह क्या शकल बनाई है ?"

"क्यों, क्या बुरी है ?"

"खूब अच्छी है ! सच कहो, तुम्हें रुपये की ज़रूरत है ?"

"बस, तुम्हारी मेहरबानी चाहिए। मैं तो सैर करने निकला हूं।"

"भूखे रह कर सैर कैसे करोगे। तुम्हारे चेहरे से जान पड़ता है जैसे दस दिन से रोटी नसीब नहीं हुई।"

"दस दिन तो नहीं, हाँ पाँच चार दिन से पेट भर खाने को नहीं मिला।"

"अच्छा आओ, आज तुम्हें पेट भर खिलावें।"

ईस्टरडे भी वाशिंगटन के विश्व विद्यालय सियेटल में पढ़ा करता था। वहाँ से पढ़ाई अधूरी छोड़ रुपया कमाने की धुन में बाहर निकल गया था। यहाँ इञ्जिन चलाने का काम करता था। मेरी इस से अच्छी वाकफियत थी। बहुत ही हंसमुख और मिलनसार लड़का है, पर है खाने पीने वाला।

मुझको साथ ले जाकर उसने अपने कमरे में बिठाया। फल खाने को दिये, बाद को भोजन तैयार करवाया। मैंने पेट भर खाना खा कर परमात्मा को धन्यवाद दिया। ईस्टरडे के साथ कुछ देर घूम फिर कर मैं चलने को तैयार हुआ। ईस्टरडे ने मेरी डायरी, अर्थात् दिनचर्या, में अपने घर का पता लिख दिया जिस में मैं न्यूयार्क पहुंच कर उसको समाचार दूं।

अब मैंने क़दम उठाया। पुतली घरों के सिवा और कुछ देखने को न था। कोलम्बिया दरिया साथ साथ पोर्टलैंड की ओर से आता है और गोबल हाता हुआ अस्टोरिया पहुंचता है। यहां समुद्र देवता की मुलाकात करता है।

शाम को छः बजे के करीब मैं वेनकोवर पहुंच गया। यह गांव कोलम्बिया के किनारे बसा हुआ है। यहीं वाशिंगटन रियासत की हद पूरी होती है। कोलम्बिया से उस पार, आरेगन रियासत की हद है। आज भी मैं तीस मील चला था।

मुझे मालूम थी कि यहां भारतीय कुलियों के घर हैं। उनकी तलाश की। दो घंटे तलाश करने पर उनका पता मिला। उनके घर पहुँचा तो उन लोगों ने आदर-सत्कार किया। मेरी रुचि अनुकूल भोजन बनाया और सोने का भी प्रबन्ध कर दिया। ये लोग यहां कारखानों में काम करते हैं। साढ़े छः रुपये रोज़ मिलता है। हज़ार-बारह सौ रुपया हर साल घर भेजते हैं। बीस के क़रीब मज़दूर यहां हैं। जिनके यहां आज मैं ठहरा था वे सब मुसलमान हैं। हिन्दू लोग दूसरी जगह रहते हैं, पर अपने सभी भाई हैं। भारतीय चाहे हिन्दू हों चाहे मुसलमान—भारत सन्तान होने से देश बन्धु हैं। इसी बात की चर्चा हम लोग रात को देर तक करते रहे। बाद में मैं सो गया।

जून १२—प्रातःकाल नाश्ता करके मैं एक मुसलमान भाई के साथ सिक्खों के घरों में गया। यहां वेङ्कोवर में कोई तीन आदमी काम करते हैं— आधे मुसलमान हैं, आधे हिन्दू- पर इनको हमें भारतीय ही कहना चाहिये क्योंकि भारत माता की सन्तान होने से सभी भारतीय अपने बन्धु हैं। वे सब लोग कारखाने में काम करते हैं और पास पास ही रहते हैं।

एक बड़ा भारी दोष मैंने इन लोगों में पाया। यही कथा, जो लोग पञ्जाब से आते हैं वे सभी सफाई से मानों दूर भागते हैं। यद्यपि यहां इन लोगों को छः छः रुपये रोज़ मिलते हैं, पर इनके रहने का ढंग वही है जो भारत में था। एक कोठरी में दस दस बारह बारह आदमी सोते हैं और मैले कपड़े पहनते हैं। बाहर सैर करने के लिए सिर्फ एक अच्छा जोड़ा रखते हैं, पर नीचे के कपड़े, जिनका शरीर

"भूखे रह कर सैर कैसे करोगे। तुम्हारे चेहरे से जान पड़ता है जैसे दस दिन से रोटी नसीब नहीं हुई।"

"दस दिन तो नहीं, हाँ पाँच चार दिन से पेट भर खाने को नहीं मिला।"

"अच्छा आओ, आज तुम्हें पेट भर खिलावें।"

ईस्टरडे भी वाशिङ्गटन के विश्व विद्यालय सियेटल में पढ़ा करता था। वहाँ से पढ़ाई अधूरी छोड़ रुपया कमाने की धुन में बाहर निकल गया था। वहाँ इञ्जिन चलाने का काम करता था। मेरी इस से अच्छी वाकफियत थी। बहुत ही हंसमुख और मिलनसार लड़का है, पर है खाने पीने वाला।

मुझको साथ ले जाकर उसने अपने कमरे में बिठाया। फल खाने को दिये; बाद को भोजन तैयार करवाया। मैंने पेट भर खाना खा कर परमात्मा को धन्यवाद दिया। ईस्टरडे के साथ कुछ देर घूम फिर कर मैं चलने को तैयार हुआ। ईस्टरडे ने मेरी डायरी, अर्थात् दिनचर्य्या, में अपने घर का पता लिख दिया जिस में मैं न्यूयार्क पहुंच कर उसको समाचार दूं।

अब मैंने कदम उठाया। पुतली घरों के सिवा और कुछ देखने को न था। कोलम्बिया दरिया साथ साथ पोर्टलैंड की ओर से आता है और गोथल होता हुआ अस्टोरिया पहुंचता है। यहां समुद्र देवता की मुलाकात करता है।

शाम को छः बजे के करीब मैं वेनकोवर पहुंच गया। यह गांव कोलम्बिया के किनारे बसा हुआ है। यहीं वाशिंगटन रियासत की हद पूरी होती है। कोलम्बिया से उस पार ओरेगन रियासत की हद है। आज भी मैं तीस मील चला था।

मुझे मालूम था कि यहां भारतीय कुलियों के घर हैं। उनकी तलाश की। दो घंटे तलाश करने पर उनका पता मिला। उनके घर पहुंचा तो उन लोगों ने आदर-सत्कार किया। मेरी रुचि अनुकूल भोजन बनाया और सोने का भी प्रबन्ध कर दिया। ये लोग यहां कारखानों में काम करते हैं। साढ़े छः रुपये रोज़ मिलता है। हजार-बारह सौ रुपया हर साल घर भेजते हैं। बीस के करीब मज़दूर यहां हैं। जिनके यहां आज मैं ठहरा था वे सब मुसलमान हैं। हिन्दू लोग दूसरी जगह रहते हैं, पर अपने सभी भाई हैं। भारतीय चाहे हिन्दू हों चाहे मुसलमान—भारत सन्तान होने से देश बन्धु हैं। इसी बात की चर्चा हम लोग रात को देर तक करते रहे। बाद में मैं सो गया।

जून १२—प्रातःकाल नाश्ता करके मैं एक मुसलमान भाई के साथ सिक्खों के घरों में गया। यहां वेड्रोशर में कोई तीन आदमी काम करते हैं— आधे मुसलमान हैं, आधे हिन्दू-पर इनको हमें भारतीय ही कहना चाहिये क्योंकि भारत माता की सन्तान होने से सभी भारतीय अपने बन्धु हैं। ये सब लोग कारखाने में काम करते हैं और पास पास ही रहते हैं।

एक बड़ा भारी दोष मैंने इन लोगों में पाया। यही क्या, जो लोग पंजाब से आते हैं वे सभी सफाई से मानों दूर भागते हैं। यद्यपि यहां इन लोगों को छः छः रुपये रोज़ मिलते हैं, पर इनके रहने का ढंग वही है जो भारत में था। एक कोठरी में दस दस बारह बारह आदमी सोते हैं और मैले कपड़े पहनते हैं। बाहर सैर करने के लिए सिर्फ एक अच्छा जोड़ा रखते हैं, पर नीचे के कपड़े, जिनका शरीर

के साथ स्पर्श रहता है, प्राय मैले होते हैं। इनको चाहे जितना समझाओ इन पर बहुत थोड़ा असर होता है। असर हो कैसे? ये बातें बचपन से सीखनी चाहियें, पर बचपन इन लोगों का कैसे गुजरता है, यह पाठक जानते ही हैं।

देश में अनिवार्य शिक्षा का प्रबन्ध हुए बिना कोई काम नहीं हो सकता। देश के बच्चों को सब प्रकार की शिक्षा देनी चाहिये, उनको सफाई का महत्व,बहुत अच्छी तरह सिख लाना चाहिये।

भाई रखासिंह से मेरी पहले से ही मुलाकात थी। आप मुझसे सियेटल मिलने गये थे। मैं उनके घर गया। उन्होंने मेरी बहुत खातिर तवाजो की। वहां दोपहर तक मुझसे अनेक प्रकार की बातचीत हुई। आस पास जो देशबन्धु रहते थे वे भी मेरा आना सुन कर इकट्ठे हो गये। इन लोगों में किसी के भी सिर पर बाल न थे। सभी ने टोपियां पहनी थीं। वर्तालाप अधिकांश शराब के विषय में हुआ। ये लोग शराब पीते थे। केवल मुसलमान भाई इससे बचे हुए थे। मैंने इनके सामने शराब की बुराइयों का फोटू खींचा और समझाया कि भारत-माता को कैसे पुत्रों की आवश्यकता है। एक भाई ने प्रश्न किया—

मुन्शीराम—"थोड़ी सी शराब पी लेने में कोई हरज नहीं। हां ज्यादा पीना नुकसान करता है।"

मैं—"प्यारे भाई, एक पैसे की चोरी करने वाला भी चोर है और एक सौ डालर की चोरी करने वाला भी चोर है।"

मुंशी राम—"चोरी में और शराब में फरक है। चोरी में हम दूसरे की चीज़ चुराते हैं, शराब से किसी की हानि नहीं करते।"

मैं—"अच्छा देखिये, मैं आप को थोड़े में इसकी हानि समझाये देता हूं।" सब लोग ध्यान से मेरी ओर देखने लगे। क्योंकि मुंशीराम इन सबमें पढ़ा लिखा था, और उसका इन सब पर अच्छा प्रभाव था, इसलिए ये लोग यह जानना चाहते थे कि मेरा कहना ठीक है या मुंशीराम का।

"आप इस देश में रुपया कमाने के लिए आए हैं। आप की स्त्री है, माता-पिता हैं। आपका फर्ज है कि एक पैसा भी फजूल खर्च न करें। सभी बचा कर घर भेजें जिससे घर का दरिद्र दूर हो। शराब में आप के दो चार डालर महीने में खर्च हो जाते हैं। देश में दस बारह रुपये से महीने भर का खर्च चलता है।

"दूसरे, शराब से शारीरिक हानि होती है। पहिले आप थोड़ी पियेंगे, फिर चस्का लग जाने से अधिक पीना आरम्भ करेंगे। हर हालत का आरम्भ थोड़े से ही होता है। वृद्धि धीरे धीरे होती है।

"तीसरे, आप पढ़े लिखे हैं। आपका सम्बन्ध बीस पच्चीस अनपढ़ लोगों से है। वे आपको अपना आदर्श समझते हैं। एक आपकी मिसाल से बीस पच्चीस लोगों का आचार बिगड़ता है, क्योंकि ये लोग समझते हैं कि जब पढ़ा लिखा मुंशीराम शराब पीता है तब हमें क्या डर है। आप शायद इसमें संयमी हों कि थोड़े में ही आपकी तृप्ति हो जाती हो पर इन अनपढ़ों को दो दो चार चार बोतलें चाहिये। देखिए, आपकी बदौलत कितनी हानि हो रही है।

"चौथे, आप ऐसे देश के रहने वाले हैं जहां ६४ फ़ी सदी लोग अनपढ़ हैं। देश के बच्चों को शिक्षा नहीं मिलती; काफी स्कूल नहीं हैं। आप यहां बीस पच्चीस आदमी मिल कर दो

तीन सौ रुपये की शराब हर महीने पीते हैं। आपका दिल पत्थर का है जो देश की वर्तमान दशा को देख कर भी नहीं पसीजता। इस दो तीन सौ रुपये महीने से कई गावों के स्कूल चल सकते हैं। यहां हजारों बालकों को विद्या-दान मिल सकता है, उनकी आंखें खुल सकती हैं।

"पांचवें, आपमें से कौन ऐसा है जिसको देश के दुर्भिक्ष का ज्ञान नहीं। यहां लाखों आदमी भूख से मर जाते हैं। क्या यह लज्जा की बात नहीं है कि हमारे देशबन्धु तो भूखों मरें और हम यहां शराब के प्याले उड़ावें ?"

इस वार्तालाप का बहुत अच्छा असर हुआ। एक भाई ने अपने घर से शराब की बोतलें निकाल कर उनको चकना चूर कर दिया। इसी प्रकार दूसरे दो तीन भाइयो ने भी किया और देश सेवा का प्रण किया।

दोपहर को खाना खाकर मैं सैण्ट-जान चला गया।

वेंकोवर वाशिङ्गटन रियासत की हद है। आरेगन और वाशिङ्गटन को कोलम्बिया नदी विभक्त करती है। उत्तर पश्चिम में वाशिङ्गटन की रियासत है और दक्षिण-पूर्व में आरेगन की।

कोलम्बिया नदी का भी थोड़ा सा हाल सुन लिजिए।

यह महानदी उत्तरीय रॉकीज़ पर्वत-श्रेणियों से आती है। पर्वतों, पहाड़ियों, मैदानों से होती हुई पैसफिक महासागर में जा गीरती है। करोड़ों रुपये का फ़ायदा इस नदी की बदौलत आरेगन और वाशिंगटन वालों को होता है। इसके किनारे किनारे पुतलीघरों, कारखानों और पनचक्कियों की भरमार है। इस नदी द्वारा बड़े बड़े स्टीमर आते जाते हैं। अमेरिका वालों ने लाखों रुपये खर्च करके इस नदी पर पल

फाटक, बन्द आदि बना लिये हैं, जिससे स्टीमरों के आने जाने में रुकावट नहीं होती। सौ मील तक इसमें बड़े बड़े सामुद्रिक स्टीमर भी आ सकते हैं। इस कारण माल आने में बड़ा सुभीता है। इसके पानी की गति खूब तेज़ है। जब बड़े बड़े जहाज़ लकड़ी, अनाज, फलों आदि से लदे हुए इस पर दीखते हैं तब बड़ा आनन्द आता है। कहते हैं किसी समय पुण्यतोया जाह्नवी में भी ऐसे ही दृश्य दीख पड़ते थे।

कोई दो सौ मील तक यह नदी आरेगन और वाशिंगटन रियासतों की हद का काम देती है। इसके किनारे दौड़ती हुई रेलगाड़ियां सुबह शाम दिखाई देती हैं। जब १६०७ में मैं शिकागो से पोर्टलैंड आया था तब इसी रास्ते से कोलम्बिया नदी के किनारे का दृश्य खूब देखा था।

इस नदी से एक और बड़ा भारी लाभ है। सामन मछली की पकड़ से भी करोड़ों रुपये की आमदनी यहाँ के लोगों को है।

वेंकोवर से सेन्टजान जाने के लिए पहले अग्निबोट द्वारा नदी पार करना पड़ता है। फिर बिजली की गाड़ियों पर सवार होकर पोर्टलैंड या सेन्टजान आ सकते हैं। रेल द्वारा जाने वाले वेंकावर स्टेशन से टिकट लेकर जाते हैं। जैसा जिसका सुभीता हुआ वह वैसाही करता है।

सेन्टजान भी एक छोटा सा कसबा है। यहाँ भी बड़ी २ मिलें हैं। इन मिलों में लाखों फिट लकड़ी कटती है और दिसावर को जाती है। यहीं भारतीय कुलियों का गोरे कुलियों से झगड़ा हुआ था।

मैं शाम को वहाँ पहुंचा। रविवार होने के कारण सब को छुट्टी थी। इस लिए सब लोग घर ही मिले। मिस्टर

काशीराम यहाँ सब के मुखिया थे। उनसे मेरी पहले की जान पहिचान थी। मुझे देख कर वे बड़े प्रसन्न हुए।

रात को मैं भोजन कर सो रहा।

यहां वाशिंगटन रियासत का छोर है। अच्छा होगा यदि रियासत के विषय में कुछ अधिक लिखू, क्योंकि फिर इस पथिक को पीछे फिर कर देखने का अवसर नहीं मिलेगा।

वाशिंगटन रियासत यूनाइटेड स्टेटस के उत्तर पश्चिम में है। इसके उत्तर में ब्रिटिश-कोलम्बिया दक्षिण में आरेगन रियासत पूर्व में इडाहो रियासत और पश्चिम में प्रशान्त महासागर है।

इस रियासत में कसकेड नाम की पर्वतश्रेणियां उत्तर से दक्षिण को चली गई हैं। उनका कुछ कुछ रुख पश्चिम को होने से यह रियासत दो भागों में विभक्त हो गई हैं। इन पर्वत श्रेणियों में मौन्ट रेनियर १४,३६३ हज़ार फ़ीट, मौन्ट आदम्स १२,४७० फीट, मौन्ट बेकर १०,८२७ फ़ीट और ग्लेशियर पीक १०,४३३ फीट ऊंची हैं।

इन पर्वत-श्रेणियों और प्रशान्त महासागर के प्रभाव से इस रियासत के पूर्वी और पश्चिमी भागों की आबोहवा में बड़ा भेद है। कहीं बहुत गर्मी होती है कहीं बहुत सर्दी। पश्चिम भाग में वर्षा बहुत होती है, यह पश्चिमी भाग उपजाऊ भी बहुत है, खेती यहां खूब फलती फूलती है। पूर्वी भाग में आबपाशी के बिना काम नहीं चलता।

वाशिंगटन रियासत में अधिकांश खाने कोयले की हैं जिनसे सन् १९०७में ३६,८०,५६२ टन कोयला निकाला था। इसकी क़ीमत ९,१०,३६,४०३ रुपया समझिए। कोयले के सिवा सोने, चांदी तांबे और जस्ते की भी खाने यहां हैं। लोहे की खानों का भी पता लगा है।

जंगल तो इस रियासत में बहुत ही बड़े बड़े हैं। कास केड पहाड़ों के पूर्वी भाग में तथा कोलम्बिया नदी के उत्तर में देवदार आदि के घने जंगल हैं। इन पर्वतों के पश्चिमी भाग में "फर" (Fir) के जंगल ४००० फ़ीट की ऊँचाई तक चले गये हैं और प्रायः समुद्र तक फैले हुए हैं।

इस रियासत को मछलियों के व्यापार से बड़ा लाभ है। सन् १६०४ में इस व्यापार में १५,६५७,६०३ से अधिक रुपया लगा हुआ था और नौ हज़ार मज़दूरों की रोज़ी इससे चलती थी। इस साल कोई ३० लाख डालर की मछलियां बिकीं। एक डालर तीन रुपये के बराबर समझ कर हिसाब लगा लीजिये। मछलियां टीनों में बन्द करके बाहर भेजी जाती हैं।

खेती का तो कहना ही क्या है। यह रियासत सारी दुनियां में खेती के लिए प्रसिद्ध है। १६०८ में मकई, गेहूं, जौ, आलू आदि सब मिला कर कोई १३ करोड़ रुपये की उपज हुई। कुछ ठिकाना है! अमेरिका के आदमियों को देख कर तबीयत खुश हो जाती है। सभी हट्टे कट्टे, सुन्दर, सुडौल—क्यों न हों! जब खाने पहिनने को इतना मिलता है तब क्यों न वे हृष्ट-पुष्ट हों। एक हमारा देश है जहाँ किसान भूखों मरते हैं।

गेहूं की यहां दो फसलें होती हैं—एक सरदी में, दूसरी बसन्त में। स्नेक नामक नदी के दक्षिणी भाग में, तथा स्पोकेन नाम की नदी के आस पास, गेहूं की फ़सल बिना सींचे ही होती है। अलफालफा नाम की घास बिना सींचे नहीं होती। इस घास के विषय में मैं फिर कभी लिखूँगा, क्योंकि इसकी पैदावार से भारतीय कृषकों को बहुत लाभ हो सकता है।

अमेरिका में घोड़ों से खेती होती है। गाय दूध के लिए और बैल मांस के लिए पाले जाते हैं। खेती के लिए घोड़ों ही की अधिक ज़रूरत होने के कारण किसान लोग घोड़े भी पालते हैं, पर बैलों, भेड़ों और सुअरों की मांग अधिक होने से इनको वे ज्यादा रखते हैं। इनसे भी लाखों रुपये की आमदनी होती है।

वाशिंगटन रियासत में कल-कारखाने भी बहुत हैं। जहां जलप्रपात से कलें चलाने का सुभीता है, अथवा जहां कहीं नदियां पास हैं, वहीं कारखाने खोल दिये गये हैं।

अब ज़रा शिक्षा का वृत्तान्त सुन लीजिए।

रियासत की ओर से एक स्टेट सुपरिन्टेन्डेन्ट शिक्षा-विभाग के लिए चुना जाता है। वह चार बरस तक रहता है। रियासत के गवर्नर तथा सेनेट की ओर से उसके चार सहायक मुकर्रर किये जाते हैं। इन पांचों की मण्डली को स्टेटबोर्ड आफ् एजुकेशन (State Board of Education) कहते हैं। हर एक कौन्टी* में अपने अपने सुपरिन्टेन्डेन्ट का चुनाव लोग खुद करते हैं, जो दो वर्ष तक अपने पद पर रहता है। हर ज़िले में तीन वर्ष के लिए तीन डाइरेक्टरों का चुनाव होता है। यह सब वहां वालों के ही हाथ में है। ज़िले के डाइरेक्टर उचित शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं। साल में कम से कम छः महीने स्कूल ज़रूर खुले रहते हैं। ६ वर्ष के बच्चे से लेकर २१ वर्ष तक के युवक वहाँ शिक्षा पाते हैं। आठ वर्ष की उम्र से १५ वर्ष की उम्र वाले बच्चों को स्कूल आना लाज़मी है। बड़े कसबों में हाई स्कूल खोले गये हैं।

* कई ज़िलों को मिला कर एक कौन्टी बनती है। —लेखक।

इस सुप्रबन्ध का यह फल हुआ कि सन् १९०० की मर्दुम-शुमारी में दस वर्ष की उम्र वाले बालकों में केवल २ फ़ी सैंकड़ा अनपढ़ निकले। १९०७ में ६ वर्ष से लेकर २१ वर्ष तक के विद्यार्थियों की संख्या २३५ ०९१ थी। शिक्षकों की संख्या ६, ०८९ थी जिसमें ४, ९५२ स्त्रियां थीं। रियासत की ओर से शिक्षा में कुल ५, ५०३,८९६ डालर खर्च किया गया था।

रियासत की ओर से एक बड़ा भारी विश्वविद्यालय सियेटल में है और एक कृषिकालेज पुलमेन नाम के शहर में है। इन दो भारी विद्यालयों के अतिरिक्त और भी कई कालेज भिन्न भिन्न शहरों में हैं जो चन्दे और दान से चलते हैं।

और भी सुन लीजिये। दान का भी यहां एक महकमा है। यह नहीं कि आंखें बन्द करके पढ़े जी महाराज के नाम सङ्कल्प पढ़ दिया कि—अमुक अमुक पुण्य क्षेत्र में, अमुक यजमान ने, अमुक तिथि को इतना दान दिया; बस होगया और दाता न छुट्टी पाई, पहुंच गये वैकुंठ।

यहां दान के महकमे के अधिकारी योग्यायोग्य कार्यों का विचार करके दान का उपयोग करते हैं। उसके द्वारा पागलों के अस्पताल, बदचलन लड़कों के सुधार के स्कूल, लङ्गड़े, लूले, नाजवानों के लिए शिक्षालय आदि कई एक उपयोगी शाखायें खोली और चलाई जाती हैं।

वाशिङ्गटन रियासत में सियेटल, टकोमा, स्पोकेन और वालावाला प्रसिद्ध नगर हैं।

१३ जून सोमवार से मैंने ओरेगन रियासत का भ्रमण आरम्भ किया। पहले चार पांच हफ़्ते में पोर्टलैंड शहर में रहा। क्यों रहा? कैसे रहा? क्या किया? क्या देखा? इन सब प्रश्नों का उत्तर आगे चल कर मिलेगा।

द्वितीय खण्ड



मेरी दिनचर्य्या।

१३ जून, सोमवार से २४ जुलाई, रविवार तक मैं पोर्ट लैण्ड में रहा। इतने दिनों तक मैं क्यों एक स्थान में रहा, इस प्रश्न का उत्तर मैं अपने इन दिनों की दिनचर्य्या में दूंगा। इस दिनचर्य्या को जुदा जुदा तिथि देकर न लिखूंगा। पाँच पाँच छः छः दिनों के हालात इकट्ठ लिख कर पाठकों का मनोरञ्जन करूंगा। हां खास खास दिनों की दिनचर्य्या अपने पिछले ढंग के अनुसार लिखूंगा।

सब से पहले मैं पोर्टलैण्ड शहर तथा उसके इर्द गिर्द के क़स्बों का हाल बतलाता हूं। इनसे पाठकों को मेरी दिनचर्य्या समझने में आसानी होगी।

पोर्टलैण्ड, आरेगन रियासत का प्रधान नगर है। इसकी आबादी ढाई लाख से ऊपर है। मेरी राय में यह शहर प्रशान्त महासागर के किनारे बसे हुये सब शहरों से खूबसूरत और अच्छा है। यह ऐसी जगह बना है जहां बड़े बड़े जहाज समुद्र से आते जाते हैं। प्रशान्त महासागर इस जगह से १२० मील है पर पोर्टलैण्ड के निवासियों के लिये यह उनके द्वार पर ही है। गहरे पानी की नदी के किनारे के कारण इस शहर को वैसा ही सुभीता है जैसा समुद्र-तट पर बसे हुये नगर को प्राप्त होता है। जिसको जापान, चीन या भारत जाना हो वह पोर्टलैण्ड से स्टीमर पर सवार होकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच सकता है। यहाँ दुनिया की चीज़ों की खरीद व फरोख्त होती है। प्रायः सब जातियों के स्टीमर इस शहर के बंदरगाह में अपने अपने झण्डे फहराते हैं।

इस नगर की उन्नति बहुत शीघ्र हुई। सन् १८०० में इसकी आबादी नब्बे हजार थी। अब दस बरस में अढ़ाई लाख के ऊपर हो गई है।

इतनी उन्नति का कारण यह है कि पोर्टलैंड का सम्बन्ध दो नदियों—विलामेट और कोलम्बिया—के साथ होने के कारण इसका सम्बन्ध उन नगरों से भी हो गया है जो इन नदियों के किनारे बसे हैं। जो पैदावार इन नगरों में होती है या वहाँ आती है वह शीघ्र ही, थोड़े किराये में पोर्टलैंड पहुंच जाती है, और यहां से देसावर को भेजी जाती है। इससे दुकान्दार और किसान दोनों ही अधिक खर्च से बचते हैं। दूसर यह कि पोर्टलैंड रेलवे का बड़ा भारी जंकशन है, न्यूयार्क, शिकागो, सेंटपाल, ओमाहा, साल्टलेक सिटी, वेंकोवर बी० सी०, सेनफ्रान्सिस्को आदि से रेल द्वारा इसका सम्बन्ध है। सदर्न पैसफिक कम्पनी का यह अड्डा है, मुसाफ़िरों को सब तरह का सुभीता है। इन कारणों से इसकी आबादी दिन दिन बढ़ रही है।

शहर में गली गली बिजली की गाड़ियाँ दौड़ती हैं। इर्द गिर्द के क़स्बों से सम्बन्ध है, जहाँ दो चार आने देने से आदमी जल्द पहुंच जाता है।

नगर की खूबसूरती देखने लायक है। सुन्दर सुन्दर ऊंचे भवनों से सुसज्जित साफ़ सुथरी, चौड़ी पक्की गलियां दर्शक का मन मोह लेती हैं। शहर के इर्द गिर्द पहाड़ों के दृश्य बड़े ही मनोहर हैं। बर्फ़ ढकी हुई पर्वतों की चोटियां शहर से दीख पड़ती हैं। इन पर्वतों तथा समुद्र की वायु के कारण पोर्टलैंड की आबोहवा बहुत ही स्वास्थ्यकर है।

शहर में शिक्षा का प्रबन्ध भी बहुत उत्तम है। कई अच्छे अच्छे हाई-स्कूल हैं, पुस्तकालय हैं, अस्पताल हैं, दो चार

कालेज भी हैं। हर साल, जून में यहां एक बड़ा भारी मेला होता है उसको Rose Festival अर्थात् पुष्पोत्सव कहते हैं। इसमें पुष्पों की भरमार रहती है। घर, द्वार, हवेलियां दूकान, गाड़ियां सड़कें सभी गुलाब के फूलों से सुसज्जित होती हैं। दूर दूर से लोग मेला देखने आते हैं। बड़ा आनन्द रहता है।

जब मैं पोर्टलैंड पहुंचा तब मेला खतम हो चुका था, इससे देखने में नहीं आया। हां, मैंने मेले के पोस्ट कार्ड खरीद लिये थे। उनसे इस मेले के दृश्यों का बहुत कुछ आनन्द मिला।

जून १३ से जून १८ तक—इस सप्ताह में सेंट-जान में रहा। इन दिनों सेंट–जान वाले मुकद्दमें की पेशियां पोर्टलैंड में होती थीं अतएव मुकदमे की बहस सुनने के लिए मैं पोर्ट लैंड भी चला आया करता था। भारतवासी और गोरे कुलियों से इस मुकद्दमे का सम्बन्ध था।। गोरों ने भारतीय लोगों पर ज़ियादती की थी। जज महोदय ने पक्षपात रहित होकर अपना काम किया। पोर्टलैंड के ब्रिटिश कौंसल ने भी हमारे आदमियों के साथ बड़ी सहानुभूति प्रकट की और यथाशक्ति उनकी सहायता भी की। सेंट-जान-वाली अमरिकन सज्जनों ने भी हमारे आदमियों को निर्दोष प्रकट किया और गोरे मजदूरों के अगुवा, हिक्की, की उद्दण्डता सप्रमाण सिद्ध की।

शहर के दैनिक पत्र हमारे आदमियों के विरोधी थे। क्योंकि वे मतलब के साथी हैं। उनको अपने अखबारों की बिक्री अभीष्ट है। प्रान्त के जन साधारण का मत प्रवाह भारतीय मजदूरों के प्रतिकूल है, इसलिए दैनिक पत्र, भी उसी के साथ साथ बहते हैं।

शहर में इस मुक़द्दमें की बड़ी चर्चा थी। बहुत लोग पेशी के दिन मुकद्दमें की कारररवाई देखने आया करते थे, इस तरफ़ समुद्र तट पर दूसरी दूसरी जातियों के लोग आकर अधिक बस गये हैं। अपने देश में ये लोग निर्धन थे, अब यहां आकर धनी हुए हैं। यही लोग अकस्मात् के नाती बन बैठे हैं। हम लोगों को ये परदेशी (Foreigners) बतलाते हैं, और आप अमेरिकन बनते हैं। ऐसे ही लोग अधिकतर हमारे मज़दूरों से झगड़ा करते हैं। क्योंकि इन लोगों के दिल छोटे होते हैं। पहले कभी अच्छे दिन देखे नहीं थे। अब एक ऐसे धन धान्य-पूरित देश में आगये हैं जहां सब तरह का सुभीता है, इससे अपने आपको बहुत बड़ा समझते हैं, अपने से कमज़ोर और सहायहीन पर अत्याचार करते हैं। ऐसे ही लोगों के भड़काने से यहां इस तरह के झगड़े होते हैं। मैं इन लोगों के साथ रहा हूं, मैंने कारखानों में इन लोगों के साथ काम किया है। जब तक इन लोगों को पता नहीं था कि मैं भारतीय हूं तब तक तो कुछ नहीं, सब ठीक था, ज्योंही इनको पता लगा कि मैं एक ऐसे देश का हूं जिसका कोई माई बाप नहीं है, त्योंही ये मेरे पीछे पड़ गये।

मैं अधिक समय तक सेंट-जान ही में रहा। श्रीयुत काशी रामजी ने मेरे साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया, जिनके लिए मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूं।

शनिश्चर, जून १८—आज का सारा दिन मेरा इधर उधर लोगों के पास आने जाने में ही खर्च हुआ, क्योंकि मेरा इरादा भारतीय मजदूरों को एकत्र करके एक सभा कायम का था। हमारे देश-वासियों को अभी तक एक जगह बैठना नहीं आता। उनके हृदय में मत-मतान्तरों के संस्कार घुसे हैं, धार्मिक

सहन शीलता उनमें नहीं, इसीलिए हिन्दू अपने को मुसलमान से पृथक् और सिक्ख भी अपने को मुसलमान से पृथक् समझता है। इन लोगों में अभी तक जातीयता का भाव नहीं।

सब मिला कर कोई दोसी भारतीय बन्धु यहां कारखानों में काम करते हैं।

सभा के लिए जगह दरकार हुई। मैंने पोर्टलैण्ड में यङ्ग मेन क्रिश्चियन-एसोसियेशन के मन्त्री महोदय से आज्ञा लेकर उनके समागमन में सभा करने का प्रबन्ध किया और सब लोगों को सूचना देदी कि रविवार—१६ जून को—शाम के छः बजे सब लोग पोर्टलैंड पहुंच जायें।

रविवार, जून १६—प्रात काल में वैंकोवर गया और वहां सब भाइयों से सभा में आने की प्रार्थना की।

नियत समय पर लोग आने लगे। अच्छी अच्छी पगडियां बांधे "मानर्क लम्बर कम्पनी" के सिक्ख भाई बड़े शौक से आये। सेंट जान और वेंकोवर से भी कुछ लोग आये। भजन कीर्तन के बाद मैंने सभा का उद्देश समझाया। सेंट-जान वाला मुकदमा लोगों के दिलों पर ताजा था। इसलिए उन से कहा गया कि इस झगड़े में हिन्दू मुसलमान सिक्ख सभी एक होकर न रहते तो गोरे कुली सारे ओरेगन प्रान्त से भारतीय कुलियों को मार कर निकाल देते। एक माता के पुत्र होने से सभी भाई भाई हैं। सब भाइयों को एक होकर रहना चाहिये। हम लोग परदेश में हैं, अतएव यहां हमारे देशवासी ही हमारे बन्धु हैं। यदि हम लोग यहां भी धर्म-सम्बन्धी तनसतुम में डूबे रहेंगे तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

फिर सबसे प्रार्थना की गई कि सप्ताह में एक बार अवश्य सब लोग मिला करें, जिससे सबके दिलों से मत मतान्तर के गोरखधंधे निकल जांय और जातीयता के भाव उत्पन्न हों।

२० जून से ३ जुलाई तक—कोई विशेष बात नहीं हुई। लोगों से मिलने और कल कारखाने देखने में मेरा समय गया।

जुलाई ४—आज का दिन अमेरिकन लोगों के लिये बड़े गौरव का है। आज ही के दिन अमेरिका की विजय पताका उड़ी थी। आज ही के दिन १७७६ में, अमेरिका के प्रतिनिधियों ने स्वतन्त्रता का घोषणा-पत्र दिया था। इस दिन को अमेरिकन लोग अपनी जाति का जन्म दिन मानते हैं, आज वे खूब उत्सव मनाते हैं। मैं भी एक मित्र के साथ प्रातःकाल ही भोजनादि से निवृत्त होकर बाहर निकला। हम दोनों ४ जुलाई की महिमा देखने चले। बाज़ार, दुकानें, घर आज अमेरिका के जातीय झण्डों से सुशोभित थे। श्वेत तारागणों के समूह का नील आकाश में चमकता देख किसका मन प्रसन्न नहीं होता? ऐसा सुन्दर झंडा दूसरी जाति का नहीं है। अमीर लोगों ने अपनी गाड़ियों और टोपियों को भी कौमी झंडियों से सजाया था। बाजारों में बड़ी भीड़ थी। लड़के, लड़कियां, वृद्ध, बालक, स्त्री पुरुष सभी आज बनठन कर बाजारों में घूमने निकले थे। कोई कोई रामदुलारे अपनी प्रियाओं का हाथ पकड़े हंसते बोलते जा रहे थे।

गाड़ियाँ आज खचाखच भरी हुई थीं। सभी यह आन न्दोत्सव मनाने के लिए घर से निकल पड़े थे। उत्सव के प्रोग्राम सप्ताहों पहले बना लिए गए थे।

हम दोनों मित्र भी पोर्टलैंड-वासियों के आनन्द से आनन्दित होते चले जाते थे। हमने विचार कर लिया था कि आज वेंकोवर चल कर जलसा देखेंगे। उधर कोलम्बिया के किनार कई तरह के खेल-तमाशे होने वाले थे।

धक्काधूम में हम भी गाडी पर चढ़ गये, पर इधर के धक्के गवांरी धक्के नहीं, सभ्यता के धक्के होते हैं। इनमें 'I beg your pardon —(क्षमा प्रार्थी हूँ) का आनन्द मिलता है। हृष्ट पुष्ट सुंदर नौजवान, कोट पतलून पहने अपने मित्रों से हंस हंस बातें करते थे। उनको देख कर मेरे दिल में न मालूम क्या क्या तरंगें उठने लगीं। मैं विचार-सागर में डूब गया; मेरी सब सारी भ्रान्तियां मन में घुस गईं, मेरे मित्र को इसकी कुछ भी खबर नहीं न थी। स्टेशन आ गया। उन्होंने मुझे ज़ोर से पकड़ कर हिलाया, और कहा चलो, उतरो, नदी पार करें।

तीन तीन पैसे देकर हम लोग छोटे स्टीमर पर चढ़ गये। बड़ी भीड़ थी। स्टीमर भरा हुआ था। आज हब्शी जानसन और गोरे जेफरी की घूंसे बाज़ी होने वाली थी। इसलिए कितने ही जोशीले जवान जेफरी के नाम पर करतलध्वनि करते थे।

वेंकोवर पहुंच कर मैं और मेरे दोनों मित्र इधर उधर टहलने और जगह जगह लोगों की रंग रलियां देखने लगे। कई जगह तमाशों की धूम थी। कहीं बाजा बज रहा था। एक जगह नाच की तैयारी हो रही थी। लड़के लड़कियां अपना अपना साथी चुन कर नाचने की धुन में लगे थे।

कैसा शान्त समागम था। हमारे देश के मेलों की तरह यहां शोर गुल का नाम नहीं था। सब लोग अपनी अपनी

धुन में लगे थे। स्त्रियों के झुंड के झुंड घूम रहे थे। किसी प्रकार की अव्यवस्था देखने में नहीं आई।

मैंने मित्र से कहा,—"चलो अपने देश-बन्धुओं से मिलें" मैं उनका घर जानता था। वहाँ पहुँचे तो देखते क्या हैं कि चार पाँच आदमी शराब के नशे में चूर हैं। एक दो कुछ कुछ होश में थे। उनसे मालूम हुआ कि सुबह से ही इन लोगों में शराब का दौर चल रहा है। एक आदमी शराब के कारण हवालात भी पहुँच चुका था। सिवाय उन भाइयों के जिन्होंने शराब छोड़ने का प्रण किया था, और सब उस हालत में मुब्तिला थे। सोहबत का बड़ा असर होता है। यार-दोस्त आ गये। उनके अनुरोध से इन्होंने इस तरह चार जुलाई का दिन मनाना आरम्भ किया।

दुखी होकर हम दोनों उस तरफ से निकले। हमारे साथ एक आदमी शराबी चला आता था। वह ऐसी वाहियात बातें करता था कि मेरा कलेजा मुँह को आने लगा। बड़ी मुश्किल से हम लोगों ने उससे पीछा छुड़ाया। उस समय मेरी कोई भी नसीहत काम न कर सकी।

यहाँ सोचने के लिए बहुत सामान था। एक तरफ तो हजारों शिक्षित लोगों का मेला है। कहीं कोई झगड़ा फसाद नहीं; सब आनन्द से उत्सव मना रहे हैं। दूसरी तरफ बीस पचीस अनपढ़ों की मण्डली है, जिसमें से एक हवालात की सैर कर रहा है, बाकी शराब के नशे में गाली गलौज कर रहे हैं। वृक्षों के नीचे बैठे हुए हम लोग घंटों इस बात पर विचार करते रहे।

मित्र के साथ मैं फिर पोर्टलैंड वापस आया। यहाँ सैकड़ों झुंड के झुंड लोगों को दैनिक पत्रों के दफ्तरों के पास खड़े

पाया। ये लोग हब्शी जानसन और गोरे जेफ़री की घूंसेबाजी का परिणाम जानने के उत्सुक थे। आखिर तार खड़का। गोरों के चेहरे फक हो गये। हब्शी जीत गया; गोरे की हार हुई। यह क्या हुआ! गोरा काले से हार गया, गोरों पर मानों वज्रपात हुआ। उनका अभिमान चकनाचूर होगया। ईश्वर अन्यायी नहीं, उसके लिए गोरे काले सभी बराबर हैं, जो जिस विद्या में अधिक परिश्रम करेगा, उसमें उस की जीत होगी। बाजारों में सन्नाटा सा छा गया। रंग में भंग पड़ गया। किसी को भी जेफ़री के हार जाने की उम्मीद न थी। हब्शी का पराक्रम जान कर गोरे बहुतही लज्जित हुए।

इधर काले के साथ सहानुभूति रखने वाले उसकी जीत के मारे ख़ुशी से फूले नहीं समाते थे। यह सब देखते हुए हम लोग भी अपने अपने स्थान को चले गये।

५ जुलाई से २७ जुलाई तक—इतने दिन मैं पोर्टलैण्ड में और रहा। मेरे इतने दिन ठहरने का यह कारण था कि मैं अपने भारतीय बन्धुओं की शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहता था। अमेरिका में जो भारतीय मज़दूर हैं वे सभी पञ्जाब प्रान्त के हैं, उनमें अधिकांश सिक्ख ही हैं, ये लोग विद्या हीन हैं। अशिक्षित होने के कारण ये बहुधा धोखा खाते हैं। कोई चालाक आदमी मिल गया तो वह अनायासही इनको फुसला कर इनसे रुपये ठग लेता है। कई एक ने तो इन अनपढ़ों के साथ हज़ारों रुपये के वारे न्यारे किये हैं।

पांच सप्ताह पोर्टलैंड में रह कर मैंने इन लोगों को सचेत किया। उनको समझाया कि यदि तुमसे कोई देश के कामों के लिए रुपया मांगे तो उसके जाल में मत फंसो। यदि रुपया भेजना हो तो देश भेजो। वहां स्कूलों, अनाथालयों आदि में धन की बड़ी आवश्यकता है।

२४ जुलाई को मैंने पोर्टलैण्ड से पैदल चलने का निश्चय किया। यहाँ से सनफ्रांसिस्को की ओर जाने का इरादा पक्का ठहरा। शाम को मित्रों से विदा हुआ और सैंटजाम में ही सो रहा।

जुलाई २५—प्रातःकाल सब मित्रों से मिल, मिला कर मैं निकला। ट्रिज नं० ७ को गाड़ी पर सवार होकर पोर्टलैंड आया इस समय मेरे पास छः डालर और पचहत्तर सेंट थे। सब से पहले एक्सप्रेस कम्पनी के दफ्तर में गया और पहनने के कपड़े का पैग सनफ्रांसिस्को रवाना किया। फ्रांसिस्को यहाँ से ७७२ मील दूर है। पैग का किराया एक डालर पचीस सेंट लगा।

आज का दिन खूब साफ था, बादल का नाम न था। पोर्टलैंड के बाजार में कुछ भीड़ देखने में आई। मैं भी उधर चला गया और एक किनारे खड़ा होकर देखने लगा। बहुत सी मोटर गाड़ियाँ जा रही थीं जिन पर W O W का चिह्न था। पूछने पर पता लगा कि यह चिह्न दुनिया के लकड़हारों का है। यहाँ उनकी एक सभा होगी। प्रत्येक रियासत के लकड़हारों के प्रतिनिधि अपनी अपनी मोटर-गाड़िया पर बैठे आ रहे थे। उन्हीं को लोग देख रहे थे।

वहाँ से चल कर मैं अपने मित्र से मिलने गया। प्रस्थान समय उससे भेंट कर लेना उचित समझा, पर वे न मिले। एक कागज पर अपना प्रेमाभिवादन लिख कर उनके कमरे में छोड़ आया।

इस समय साढ़े ग्यारह बज चुके थे। धूप तेज थी पर मैंने ठहरना उचित न समझा। ईस्ट-मारीसन नाम की गली से निकल कर अच्छी जल्दी मैंने कदम बढ़ाया। शहर से निकलने के लिए मैंने रेल की सड़क पकड़ना जरूरी समझा।

पाटखेंड से कर तरफ गाड़ियां आती हैं, इसलिये मैंने एक भलेमानस से सनफ्रांसिस्को वाली पटड़ी पूछी। ठीक खबर पाकर मैंने अपना रास्ता लिया।

शहर के दक्षिणी भाग को लांघता, गली कूचों से होता हुआ मैं एक छोटी नहर के किनारे पहुंचा। वहां एक दस वर्ष का लड़का मछली पकड़ रहा था। हरियाली देख कर मैं खड़ा हो गया और लड़के से पूछा—

"यह पटड़ी सेलम की ओर जाती है ?"

"हां।"

"तुम कभी सेलम गये हो ?"

"एक बार पोपा (पिता) के साथ गया था।"

"कैसा शहर है ?"

"सेलम बड़ा खूबसूरत शहर है। यही हमारी राजधानी है। इसलिए यहां बहुत अच्छी अच्छी इमारतें हैं।"

मैं (कदम उठा कर)—"अच्छा चलता हूं, मुझे दूर जाना है।"

"कहां ?"

"फ्रिस्को।"

"फ्रिस्को! क्या ऐसे ही जाओगे ? गाड़ी पर क्यों नहीं चढ़ लेते ?"

मैं (जरा हंस कर)—"ऐसे ही घूमते घूमते चले जायगें।"

"मैं आप से एक बात कहता हूं। आप मालगाड़ी पर क्यों नहीं चढ़ जाते। उससे जाने में पैसा नहीं लगता।"

"मालगाड़ी पर कौन चढ़ने देगा ?"

लड़का (मुसकरा कर)—"मैंने बहुत दफे होबो लोगों को चढ़ते देखा है। जब गाड़ी चलने लगती है तब वे चढ़ जाते हैं।"

"अच्छा, देखूगा।"

यह कह कर मैं चला। होबो—दुनिया का पहला सबक इस लड़के ने दिया। इस समय मुझे इन लोगों का कुछ भी पता न था। समय आने पर मुझे भी अमेरिकन होबो लोगों की हवा लगी, और उन सब बातों को देखने और करने की नौबत आई जिन को मैं उपन्यासों में पढ़ कर हैरान हुआ करता था।

आज बहुत कड़ी धूप थी। मारा बदन पसीने पसीने हो रहा था। दो बजने पर हुए। मुझे भूख ज़ोर की लगी। एक छोटा सा गांव नजर आया। मैं उसके पास पहुंचा। एक गरीब किसान के घर जाकर खाने को मांगा। वह किसान जर्मनी का निवासी था। उसको अच्छी तरह अंग्रेज़ी बोलना नहीं आता था। उसकी स्त्री, और बच्चे निरोग और हृष्ट-पुष्ट थे। उसने मुझे आलू रोटी मक्खन और दूध दिया। मैंने इच्छानुसार, भोजन किया। पैसे देने लगा तो उसने न लिये।

उस कृषक को धन्यवाद दकर मैं बाहर निकला। उसका घर बहुत साधारण सा था—एक पुराना दो मंजिला लकड़ी का मकान था—पर यही कृषक दो चार साल के बाद धनी हो जायगा। अभी तो नया नया इस मुल्क में आया है। अपनी पूंजी जमीन में लगा दी है और मेहनत करता है। धीरे धीरे परिश्रम सफल होगा और यही भूमि इसके लिए स्वर्णमयी हो जायगी।

मैं नाना प्रकार के विचारों में मग्न चला आता था। धूप के कारण कभी कभी वृक्षों की छाया में दम ले लेता था। चलता २ शाम के पाँच बजे मैं आरेगनसिटी में पहुंचा।

रेल की सदर्नपेसेफिक लाइन पर यह एक छोटा सा कसबा है। यह पोर्टलैंड से १५ मील पर है। इस कसबे में भी बैंक, पुस्तकालय वाचनालय और पानी साफ करने वाली एक फेक्टरी देखी। इससे इर्द गिर्द के कसबों को शुद्ध जल मिलता है।

अमेरिका के कसबों में अच्छे खासे बाजार रहते हैं। सड़कों के पार्श्वपथ (Side walks) पक्के होते हैं। ज्यों ज्यों कसबे का शहर बनता जाता है त्यों त्यों नई सड़कें और गलियाँ पक्की बनती जाती हैं। कहीं कहीं गलियों में लकड़ी के तख्ते जोड़ कर पार्श्वपथ बनाये जाते हैं। वर्षा में इन पर चलने में बड़ा सुभीता रहता है; पैरों में कीचड़ नहीं लगती। लोग इन पर चलते हैं, और गाड़ी-घोड़े बीच सड़क पर। इस प्रकार सब के लिए सुभीता रहता है। घूमता फिरता जब मैं पानी साफ करने वाली कम्पनी के कारखाने के पास पहुँचा और वहां खिड़कियों से देखने लगा तो किसी ने ऊपर से मुझे ललकारा। मैंने उधर देखा। मालूम हुआ कि ऊपर छत पर काम करने वाले मेरे इस ओर आने और देखने के विरोधी हैं और मुझको गालियाँ दे रहे हैं। ये लोग मज़दूर थे। ये परदेशियों को घृणा-दृष्टि से देखते हैं। मैं तो इस समय साफ ही परदेशी मालूम होता था। सड़क से चला आता था; चेहरे और कपड़ों पर धूल जमी हुई थी। खैर, मैं वहाँ से गालियाँ खाकर लौट आया, और कमरे की तलाश में लगा।

पच्चीस सेंट पर एक कमरा मिल गया। मुंह हाथ धोकर खाने के लिये दस पैसे का कुछ ले आया। उससे क्या होता था? पर लाचारी थी। वहीं खाकर सोने की तैयारी कर रहा था कि इतने में घर की मालकिन ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया। मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि आप ठंडे पानी की सुराही लिये खड़ी हैं। मैंने उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। जब जाने लगीं तो उन्होंने मुझसे पूछा—

"आप खाना खाने नहीं जायंगे?"

"मैं फलाहारी हूँ। मांस नहीं खाता। इसलिये होटल में जाकर क्या करूंगा।"

"होटल में आलू और दूसरी तरकारियां भी मिल सकेंगी।"

"हाँ, पर वे सब चरबी में भूनी रहती हैं। मुझे उनसे घृणा है।"

"अच्छा, देखो मैं कुछ खाने को लाती हूं।"

मैंने बहुतेरा मना किया, पर वह कब मानने वाली थी। झट कुछ आलुओं का मुरब्बा, रोटी, दूध और मक्खन ले आई और रख कर चली गई। मुझे धन्यवाद भी देने का अवसर न दिया।

मैंने घुटने टेक भूमि पर आसन लगाया और उस सर्व शक्तिमान् करुणासिन्धु प्रभु को धन्यवाद दिया, जिसकी कृपा से मुझे ऐसी भद्र रमणी के दर्शन हुए। प्रार्थना से निश्चिन्त होकर मैंने भोजन किया। फिर शान्त चित्त होकर शय्या पर लेटा।

जुलाई २५—प्रातःकाल साढ़े पाँच बजे उठकर मैंने हाथ मुंह धोये और अपना रास्ता पकड़ा। ठंड में भ्रमण करने से

बड़ा मज़ा आया। मक्की, गेहूं आदि खेतों में लहलहा रहे थे। कहीं कहीं घास के खेतों में गाय, बैल आदि चरते थे। कहीं शूकर देवता अपने परिवार के साथ विहार करते देख पड़ते थे। बड़े आनन्द का समय था। आज अधिक धूप भी न थी। घूमता-फिरता मैं एक छोटी सी नदी के किनारे पहुंचा। वहां एक पेड़ की छाया में बैठ गया। बहुत देर तक वहीं बैठा बैठा यहां के किसानों की अवस्था के साथ भारतवर्ष के किसानों की अवस्था का मिलान करता रहा। भारतीय किसानों की अवस्था पर बहुत अफसोस हुआ। परन्तु शीघ्र ही भाव बदल गया और अपनी धुन में गाने लगा—"सब दिन होत न एक समान, भारत क्यों रुदन मचावे।" फिर वहां से उठ आगे बढ़ा। आज मैं घोड़े-गाड़ी की सड़क पर चल रहा था, क्यों कि इधर के दृश्य मनोहर थे। गर्द के दबाने के लिए इन सड़कों पर अलकतरा (Coal-Tar) छिड़का जाता है। उस से सड़कों की मिट्टी एक दम दब जाती है। गाड़ी, घोड़े चलने से भी धूल नहीं उड़ती।

ओरगन रियासत स्वाधीन है। यहां का हर एक प्रान्त मानो एक प्रतिनिधिसत्ताक राज्य है। लोग अपने आप बादशाह हैं। अपना प्रबन्ध आप करते हैं। अपने कानून आप पास करते हैं।

यहां से आगे बढ़कर मैंने डीटो नामक एक आठ दस घर का गांव देखा। उस समय बारह बज चुके थे। वहां एक घर के इर्द गिर्द लकड़ियों का अहाता था। उसका दरवाज़ा खोल मैं निधड़क अन्दर चला गया। घर के अन्दर नहीं किन्तु अहाते के अन्दर। वहां घर के पीछे छाया में आ कर मैं एक लकड़ी पर बैठ गया। एक छोटा बालक खेल रहा था। मैंने उसे बुलाया—

लड़का एक छोटी गुड़िया से खेल रहा था। मुझे देख कर वह डरा नहीं किन्तु हँस कर मुझसे कहने लगा—

"देखो मेरी गुडिया ?" ऐसा कह कर गुड़िया खींचता हुआ वह मेरे पास आया। कैसा प्यारा बच्चा था, गहरी नीली आँखे, बाल भूरे, हाथ पैर मजबूत गालों पर लाली, सुफेद कपड़े पहने बहुत ही भला मालूम होता था। मैंने पास बुला कर पूछा—

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मेरियन"

थोड़ी ही देर में मेरियन मुझसे हिल गया। बहुत देर तक वह मेरे साथ खेलता रहा। कुछ देर बाद अन्दर से आवाज़ आई—"मरियन ! मरियन !"

-रियन अन्दर गया और अपनी माता को साथ लेकर बाहर आया। उसे देखकर मैं खड़ा हो गया और टोपी सिर से उतार ली। वह युवती बड़ी नम्रता से बोली—

"आप धूप में न खड़े रहिये, इधर आकर बैठ जाइए। मेरे पति आते होंगे, उनके आने पर भोजन कीजिएगा।"

देवी इतना कह कर अन्दर चली गई और मैं साये में बैठ गया।

थोड़ी देर में मिस्टर डेविडसन, उस युवती के पति, आये। पहले अन्दर गये। फिर बाहर आकर मुझे लिवा ले गये, और हाथ मुह धोने के लिए जल, साबुन और साफ़ अँगोछा दिया। मैंने मुह धोया और अपनी कघी से बाल साफ़ किये।

मैं—"हाँ, उसके भी, और, और बातों के भी सम्बन्ध में।"

मिस्टर डे०—"प्रेजिडेण्ट रोज़वेल्ट इन बुराइयों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।"

मैं (ज़रा धीरे से)—"उम्मेद नहीं कि प्रेजिडेण्ट रोज़वेल्ट कामयाब हों।"

मिस्टर डे०—"क्यों ?"

मैं—"प्रेज़िडेण्ट रोज़वेल्ट साम्राज्यपद्धति (Imperialism) के पक्षपाती हैं। एक बात और भी है। खाली कानून पास कर देने से पूँजी वालों के पक्ष नहीं कट सकते। जो धनवान हैं और जिन्होंने अन्याय पर कमर कसी है वे कानून बनाने वालों तथा क़ानून के अनुसार फ़ैसला करने वालों को मोल ले लेते हैं। बस हो गया खातमा! गरीब बेचारे मारे गये।"

मिस्टर डेडिफस्ला थोड़ी देर चुप रहे। फिर युवती ने कहा—

"आपने तो हमारे देश की बहुत सी बातें जान लीं। हम लोग भी उतना नहीं जानते।"

मैं (हँस कर)—"बहुत तो नहीं, थोड़ा अवश्य सीखा है। यही बातें मैंने विश्वविद्यालय में पढ़ी भी हैं—राजनीति-विज्ञान, समाज—विज्ञान और शिक्षा-विज्ञान।"

युवती—"अच्छा, आयोवा रियासत की गवर्नमेंट तो आपको पसन्द है ?"

मैं (हँस कर)—"क्या कहना है। यहाँ की गवर्नमेंट लोगों के ठीक हाथ में है।"

युवती—"यह देश क्या है। धीरे धीरे सब बुराइयाँ दूर हो जायँगी।"

मैं—"बेशक, इस बात को मैं मानता हूं।"

भोजन से निश्चिन्त हो कर मैंने मिस्टर हेचिन्सन से उनके विषय में कुछ बात चीत की, तो पता लगा कि उनके पूर्वज हालेण्ड से इस स्वतन्त्र देश में आये थे। पहिले वह पोर्टलेंड में कुछ काम करते थे। पीछे यह सोचा कि कृषि-कर्म सब से अच्छा है। अपनी पूंजी से भूमि मोल लेली। अब यहीं, स्त्री सहित रहते हैं। ये खुद खेती का काम करते हैं, जरूरत होने पर मजदूर भी रख लेते हैं; मजे में काम चला जाता है।

खाना खा चुकने पर मिस्टर हेचिन्सन को काम करने जाना था। मुझे कह गये कि आप बाहर साये में कुरसी पर सुस्ता लीजिये और जी में आवे तो फल तोड़ कर खाइये। खूब आराम करके जाइयेगा।

वे तो चले गये। मैं बाहर बारामदे में कुरसी पर बैठ कर आराम लेने लगा।

तीन बजे के करीब मैंने चलने की ठानी। कुछ फल तोड़ कर ले लिये। मिस्टर हेचिन्सन कुछ काम के लिये घर आये थे। मैंने उनसे विदा मांगी और उन्हें धन्यवाद देकर अपनी राह ली। मेरियन और उसकी माता शायद सो गये थे, इस लिये उनसे जाते समय भेंट न हो सकी।

पाँच बजे मैं उडबर्न पहुंचा। यहां से सेलम थोड़ी ही दूर है। मैंने सोचा कि प्रातःकाल उठ कर यहाँ आऊंगा, इसलिये रात को सोने का स्थान ढूंढा। कमरे का केराया यहां पचास सेंट मांगते थे। मैंने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि यहां से बिजली की गाड़ी सेलम जाती है और उसका किराया भी कम है। इसलिये उस पर चढ़ कर शीघ्र ही सेलम पहुंचा।

मैं—"हाँ, उसके भी, और, और बातों के भी सम्बन्ध में।"

मिस्टर डे०—"प्रेसिडेण्ट रोजवेल्ट उन बुराइयों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।"

मैं (ज़रा धीरे से)—"उम्मेद नहीं कि प्रेजिडेण्ट रोज़वेल्ट कामयाब हों।"

मिस्टर डे०—"क्यों?"

मैं—"प्रेजिडेण्ट रोज़वेल्ट साम्राज्यपद्धति (Imperialism) के पक्षपाती हैं। एक बात और भी है। खाली क़ानून पास कर देने से पूँजी वालों के पञ्जे नहीं कट सकते। जो धनवान हैं और जिन्होंने अन्याय पर कमर कसी है वे क़ानून बनाने वालों तथा क़ानून के अनुसार फ़ैसला करने वालों को मोल ले लेते हैं। बस हो गया खातमा। गरीब बेचारे मारे गये।"

मिस्टर डेविडसन थोड़ी देरी चुप रहे। फिर युवती ने कहा—

"आपने तो हमारे देश की बहुत सी बातें जान लीं। हम लोग भी उतना नहीं जानते।"

मैं (हँस कर)—"बहुत तो नहीं, थोड़ा अवश्य सीखा है। यही बातें मैंने विश्वविद्यालय में पढ़ी भी हैं—राजनीति-विज्ञान, समाज-विज्ञान और शिक्षण-विज्ञान।"

युवती—"अच्छा, ओरेगन रियासत की गवर्नमेंट तो आपको पसन्द है?"

मैं (हँस कर)—"क्या कहना है। यहाँ की गवर्नमेंट लोगों के ठीक हाथ में है।"

युवती—"यह देश क्या है। धीरे धीरे सब बुराइयाँ दूर हो जाँयगी।"

मैं—"बेशक, इस बात को मैं मानता हूं।"

भोजन से निश्चिन्त हो कर मैंने मिस्टर डेविक्सन से उनके विषय में कुछ बात चीत की, तो पता लगा कि उनके पूर्वज हालैण्ड से इस स्वतन्त्र देश में आये थे। पहिले वह पोर्टलैंड में कुछ काम करते थे। पीछे यह सोचा कि कृषि-कर्म सब से अच्छा है। अपनी पूंजी से भूमि मोल लेली। अब यहीं स्त्री सहित रहते हैं। ये खुद खेती का काम करते हैं, जरूरत होने पर मज़दूर भी रख लेते हैं, मज़े में काम चला आता है।

खाना खा चुकने पर मिस्टर डेविक्सन को काम करने जाना था। मुझे कह गये कि आप बाहर बरामदे में कुरसी पर सुस्ता लीजिये और जी में आवे तो फल तोड़ कर खाइये। खूब आराम करके जाइयेगा।

वे तो चले गये। मैं बाहर बरामदे में कुरसी पर बैठ कर आराम लेने लगा।

तीन बजे के करीब मैंने चलने की ठानी। कुछ फल तोड़ कर ले लिये। मिस्टर डेविक्सन कुछ काम के लिये घर आये थे। मैंने उनसे विदा मांगी और उन्हें धन्यवाद देकर अपनी राह ली। मेरियन और उसकी माता शायद सो गये थे, इस लिये उनसे जाते समय भेंट न हो सकी।

पाँच बजे मैं डनवर्स पहुंचा। यहां से सेलम थोड़ी ही दूर है। मैंने सोचा कि प्रात काल उठ कर वहाँ जाऊंगा, इसलिये रात को सोने का स्थान ढूंढा। कमरे का किराया वहां पचास सेंट मांगते थे। मैंने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि यहां से बिजली की गाड़ी सेलम जाती है और उसका किराया भी कम है। इसलिये उस पर चढ़ कर शीघ्र ही सेलम पहुंचा।

रात को सेलम की शोभा दर्शनीय थी। बाज़ारों में ऐसा मालूम होता था जैसे दीपावली हो। बिजली से शोभावृद्धि के काम खूब लिये जाते हैं।

घूमते फिरते एक भद्र पुरुष, मिस्टर ग्रेहम से भेंट हुई। उनकी सहायता से एक सस्ता कमरा प्राप्त किया। वहाँ अपने पास जो फल थे उन्हीं को खाकर सो रहा।

जुलाई २७—प्रातःकाल हाथ मुंह धोने पर सबसे पहले भोजन की सूझी। एक जगह थोड़े में काम चलता था। वहां से दस पैसे में क्षुधानिवृत्ति करके सेलम शहर देखने चला।

सेलम आरेगन की राजधानी है। विलामेट तराई के ऐन बीच में होने के कारण यहाँ नगर वृद्धि के सब सामान मौजूद हैं। आबोहवा बहुत अच्छी है। भूमि इर्द गिर्द की बड़ी उपजाऊ है, और चारों ओर के दृश्य भी बड़े सुन्दर हैं। जिस दिन आकाश साफ़ रहता है उस दिन पर्वतों की पाँच चोटियाँ बर्फ से ढकी हुई दीख पड़ती हैं।

इस शहर की आबादी १८,००० आदमियों की है। सड़कें और गलियाँ चौड़ी तथा फलदार वृक्षों से शोभायमान हैं। कई एक गलियाँ सौ फ़ीट चौड़ी हैं। घरों के आस पास भी फलदार पेड़ हैं।

शहर की बड़ी बड़ी इमारतें देखने लायक हैं। मैं सब से पहले राजधानी की इमारत (Capital Building) देखने गया। कहते हैं इसमें तीन लाख रुपये से अधिक खर्च हुआ है। बहुत भारी इमारत है। इसके भीतर एक विशाल पुस्तकालय है। मैंने घूम कर सब देखा। पुस्तकालय की सुव्यवस्था

यिका (Lady-Superintendent) से कुछ पुस्तकें ले कर मैंने अपने एक मित्र को भेजीं।

शहर में और भी कई अच्छी इमारतें हैं। एक का नाम है फिडरल बिल्डिंग (Federal Building) इसमें साढ़े तीन लाख रुपये खर्च हुये हैं। अदालत की इमारत में भी उतने ही रुपये लगे हैं। सिटी हाल ढाई लाख के खर्च से बना है। एक बड़ा भारी हाई स्कूल है। उसकी लागत ढाई लाख पचीस हज़ार रुपये की है। दूसरे छोटे स्कूलों के लिए कई लाख रुपये खर्च किये गये हैं। एक विश्वविद्यालय भी है जिसको विलामेट-यूनीवर्सिटी कहते हैं। और भी कई एक उपयोगी पाठशालायें हैं। यहां अंधे, बहरे और गूंगे बालक तथा बालिकायें पढ़ती हैं। एक सुधारक शिक्षालय है, जहां उद्दण्ड बालक रक्खे जाते हैं। अमेरिका के असली बाशिन्दों के लिये भी एक स्कूल है, जिसको 'Government Indian Training School" कहते हैं।

सेलम के इर्द गिर्द फलगिर्दों की भरमार है। सेब, नाशपाती, बेर, करौंदा, अखरोट आदि खूब होते हैं। असल में सेलम (Cherry City) कहते हैं। चेरी फल कई रंग के होते हैं। भारत में यह फल अल्मोड़ा जिले में होता है। यह खाने में खट्टा मीठा और मोठा दोनों तरह का होता है। यह आलूचे की शकल का होता है। इसकी गुठली भी वैसी ही होती है। मगर आलूचा इससे जरा बड़ा होता है। चेरी के रंग में विभिन्नता है। लाल, सुरखी लिये हुए सफेद, काला—इसी तरह चार पांच प्रकार के चेरी के फल होते हैं।

फलों के अतिरिक्त यहां विलामेट तराई में हाप (Hop) नामक एक फूल की फसल होती है। यह बेलों की तरह

लगाया जाता है। फसल पर फूल तोड़ लिये जाते हैं। इन्हीं फूलों से शराब बनती है, जिससे लोग करोड़ों रुपये कमाते हैं। आस पास की बस्ती से हर साल तीस हजार से अधिक मजदूर हाप चुनने के लिये यहां आते हैं। उनको सेरों के हिसाब से मजदूरी मिलती है। एक सेर चुनने वाले को एक आने से लेकर डेढ़ आने तक मिलता है। कोई २ दिन भर में साढ़े तीन मन तक चुनलेते हैं। इस तरह वे आठ नौ रुपये रोज कमाते हैं। जापानी लोग इन दिनों खूब रुपया कमाते हैं, पर हाप चुनने का काम केवल छः सात सप्ताह रहता है मैंने भी यह काम किया है।

राजधानी, पागलखाना आदि देख तथा और कामों से निवृत्त हो मैंने चलने की ठानी। सेलम से आगे कुछ दूर पर रियासत का रिफ़ार्म-स्कूल है। यह स्थान बहुत ऊंची पहाड़ी पर बना है। बारह बजे के बाद मैं वहां पहुचा। दरवाजे पर एक लड़का मिला। उसने अन्दर ले जाकर मुझे अपने प्रिंसिपल से मिलाया। उसकी आज्ञा से मैंने सारा स्कूल घूम कर देखा। यहां वे लड़के लिये जाते हैं जो अपने मां-बाप के वश के नहीं होते। कुल ८५ लड़के हैं। उनके लिए पढ़ाने लिखाने, खेलने-कूदने आदि का बहुत अच्छा प्रबन्ध है। रियासत इसका सब खर्च देती है।

वहां से निकल कर मैंने आगे पैर बढ़ाया। आज मु बहुत दूर जाना था, इसलिए जल्दी २ चला। अलबनी शा में मेरा एक मित्र रहता है। यही सोचकर समझा कि आज रात उसके यहां बिताऊं। न इधर देखा, न उधर, बस च हो गया। छः बजते २ टरनर से मेरियन होता हुआ जेफरस पहुंच गया। जरा भी दम नहीं ली। बराबर चला ही ग और रात होते २ अलबनी में दाखिल हो गया।

मेरे मित्र, मिस्टर थीम, यहां रहते हैं। मैं उनके घर पहुंचा तो आप अपना आटोमोबील (मोटर गाड़ी) साफ करने में लग थे। मुझे देख कर हैरान हो बोले —

"हेलो देवा। तुम यहां कहाँ?"

मैं (हंस कर) —"इसी तरह घूमता फिरता आ निकला दिल में आया, चलू आज आपको कष्ट दूं।"

'कष्ट! अच्छा कहा। पर यह तो बताओ कहां से आते हो?"

"पोर्टलेन्ड से पैदल आता हू।

"ताअज्जुब है कि हम लोगों ने तुमको नहीं देखा। मैं और मेरी स्त्री दानों आज ही पोर्टलेण्ड से वापिस आये हैं। हम लोग आटोमोबील पर थे। क्या ही अच्छा होता यदि तुम रास्ते में मिल जाते।"

मैं (मुस्कुरा कर)—"मेरी ऐसी किस्मत कहां।" मैंने फिर अपना लहजा बदल कर कहा—

"क्या इतनी जगह आपके आटोमोबील में थी?"

"जगह करने से हो जाती है, हमने रास्ते में एक आदमी को इसी तरह बिठा लिया था और उसे दस मील ले आये थे। अच्छा आओ, अन्दर चलें। तुम थके हुए हो।

चुपचाप मैं अपने मित्र के साथ हो लिया। उन्होंने पहले आटोमोबील को ठिकाने रक्खा। फिर मुझे घर के अन्दर ले गये।

उनकी स्त्री से मैं पहिले ही से परिचित था। बहुत ही नम्र स्वभाव वाली हैं। एक विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट हैं

बड़े प्रेम से मुझे भोजन कराया। मैं पहले इन लोगों के यहाँ आ चुका था। मेरे खान पान से ये लोग वाकिफ थे, इसलिए मेरी इच्छानुसार भोजन दिया।

खाना खाने के बाद कुछ देर बाद वार्तालाप हुआ। पीछे मेरे सोने का प्रबन्ध एक दूसरे कमरे में कर दिया गया। साफ सुथरे बिस्तरे पर मैं मैले बदन कैसे सो सकता था। कपड़े उतार कर स्नानगृह में घुस गया और खूब मल २ कर नहाया। फिर निश्चिन्त हो सो गया।

जुलाई २८—मेरे मित्र मिस्टर बी० ने मुझे एक दो दिन रहने का अनुरोध किया। मेरी भी इच्छा कम से कम एक दिन ठहरने की अवश्य थी, क्योंकि, कपड़े धोने थे। रास्ते की धूल से कपड़े मैले हो गये थे। पसीने के कारण भीतर की बनियाइन बहुत मैली हो गई थी, इस लिए प्रातःकाल के नाश्ते से फारिग होकर मैंने धोने का काम शुरू किया।

यहाँ घरों में कपड़े धोने का सब सामान तैयार रहता। एक अलाहदा कमरे में दो कुण्ड होते हैं। उनमें ठंडे और गरम पानी के नल रहते हैं। गरम पानी कहीं बाहर से नहीं आता, घर में ही उसका प्रबन्ध होता है। यह इस प्रकार है—रोटी पकाने के बड़े चूल्हे के भीतर से एक ठंडे पानी का नल आता जाता है। उस नल का सम्बन्ध एक टीन के बड़े बोगदे से होता है। उस बोगद में पानी रहता है। जब चूल्हा गर्म होता है तब उसकी गर्मी से नल का पानी गरम होकर बोगदे में जाता है और वहाँ से दोनों कुण्डों के नलों द्वारा बाहर निकलता है। यह गरम पानी उस बोगदे में भरा रहता है। जब जरूरत होती है तब उसे काम में लाते हैं।

सभी घरों में ठंडे और गरम पानी का ऐसा ही इन्त-जाम रहता है। बावर्चीखाने में भी ठण्डे और गरम पानी के

मल धोते हैं। इससे बर्तन धोने में बड़ा सुभीता रहता है। नहाने के कमरे भी ऐसा ही प्रबन्ध रहता है। हमारे देश की तरह बर्तनों को घिसने में घंटों समय खर्च नहीं करते। ईश्वरदत्त बुद्धि को काम में लाकर वे सारी रुकावटों को दूर करने का यत्न करते हैं। पायखाना ऐसा स्वच्छ और शुद्ध रहता है कि कहने की बात नहीं। नहाने का टब भी प्राय पायखाने वाले कमरे में ही रहता है, इस लिए ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि दुर्गन्धि का नाम न रहे। सब मैला बड़े २ नलों द्वारा नीचे से बाहर निकल जाता है और किसी बड़ी नदी या झील में जा गिरता है।

काशी में भी ऐसा ही इन्तज़ाम पुराने समय से चला आता है, परन्तु वह ऐसा भद्दा और निकम्मा है कि उससे लाभ के बदले उलटी हानि होती है। क्या ही अच्छा हो यदि भारत के बड़े २ शहरों की म्युनिसिपिल्टियाँ मल-मूत्र आदि दूर करने का ऐसा ही अच्छा प्रबन्ध कर दें जैसा कि अमरीका में है। ऐसा होने से सब बीमारियाँ दूर भाग जाय और लोगों में नई जान आ जाय।

बिजली की रोशनी का यहां पर २प्रबन्ध है। खाने पकाने के लिये गैस काम में लाते हैं। इस गैस से बड़ा आराम मिलता है। आंखें फोड़नी नहीं पड़ती, हमारे देश में स्त्रियां बेचारी चूल्हा फूंक २ कर हैरान होती हैं—आंखों से पानी बहता आता है। गर्मी के दिनों में तो बेचारियाँ भुन सी जाती हैं, पर हमें कुछ उपाय उन अबलाओं के दुःख दूर करने का नहीं सूझता। यदि खाना समय पर तैयार नहीं होता तो कोई धर्म्मात्मा उन पर अत्याचार करते हैं। यहाँ अमरीका की रमणियों को घर के आराम का सारा सामान प्राप्त है, ज़रासी

दियासलाई लगाने पर गैस जलने लगती है, उससे जरा देर ही में खाना तैयार हो जाता है।

घर को गरम रखने का भी यहां बहुत अच्छा प्रबन्ध है। यह काम रेडियेटर्स (Radiators) नामक कलों से होता है। हमारे यहां लोग ठिठुर २ कर मरते हैं, यह दुःख थोड़े उपाय से दूर हो सकता है, कुछ लम्बा चौड़ा साइन्स इसमें दर्कार नहीं। साधारण सा स्टोव (Stove) लगा देने से कमरा गरम रह सकता है। स्टोव एक प्रकार का लोहे की चादर का ढक्कन दार चूल्हा होता है, जिसके ऊपर की तरफ दो बड़े सूराख होते हैं और एक छोटा सूराख हवा आने के लिए रहता है। ऊपर के बड़े सूराख द्वारा लकड़ी जाती है और दूसरा सूराख धुआ बाहर निकलने के काम का होता है। इस सूराख में एक टीन का नल लगा रहता है जो धुए को घर से बाहर ले जाता है। जिन कमरों में यह चूल्हे लगे रहते हैं वहां सर्दियों में बड़ा आराम मिलता है। हमारे यहां घरों में यह सब कुछ लगाया जा सकता है। पर हम लोग इतने दरिद्री और आलसी हैं कि अपनी तकलीफ के दूर करने के उपाय ही नहीं सोचते। हम लोग केवल लकीर के फकीर हैं।

बारह बजे के करीब मैं कपड़े धोकर निश्चिन्त होगया। सब खाना खाया। खाने के बाद मैंने सोचा कि इन लोगों का भी कुछ काम करना चाहिये। अपने मित्र की स्त्री के मना करने पर भी मैं अपने इरादे से न हटा। घर को मैंने अच्छी तरह साफ किया, झाड़ा बुहारा, फिर गीले कपड़े से फर्श को धोया। यहां के घर लकड़ी के होते हैं, फर्श भी लकड़ी ही का होता है इस लिए हफ्ते में दो एक बार फर्श को गीले कपड़े से धो डालते हैं, दूसरे तीसरे दिन झाड़ बुहार देते हैं,

इससे घर ऐसे साफ सुथरे रहते हैं कि देख कर तबीयत खुश हो जाती है।

चार बजे मैं इस काम से फ़ारिग हुआ, फिर पुस्तक पढ़ने लगा। पांच बजे के बाद मित्र भी आ गया। हम लोग घर के बाहिर घास पर बैठे हवा खाने लगे। आज गर्मी थी, लोग घरों से निकल २ कर अपने बच्चों को छोटी २ गाड़ियों में बैठा कर घुमा रहे थे। बड़े २ लड़के और लड़कियां गली में खेल रही थीं। गेंद फेंक फेंक कर वे पकड़ते थे, और हसते जाते थे। यह दृश्य कैसा भला जान पड़ता था। क़रीब २ सभी लोग व्यायाम करते हैं, बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के लोगों तक सभी को शरीर रक्षा का ख्याल है। यदि अमरीका में मांस खाने का अधिक रिवाज न हो, यदि यहां के लोग प्रकृति की उपासना थोड़ी कम कर दें तो अमरीका देवताओं का देश बन जाय।

मेरे मित्र के पास उनका एक पड़ोसी आ बैठा। मित्र ने उनसे मेरा परिचय कराया, पड़ोसी ने मुझसे पूछा—

"क्या आप इस देश को पसन्द करते हैं ?"

"आपका देश बहुत अच्छा है।"

"क्या आप अपने देश से इसको अधिक पसन्द करते हैं ?"

मैंने सिर हिला कर कहा—"नहीं ! मुझे अपना देश अधिक पसन्द है।" इस पर पड़ोसी महाशय को कुछ आश्चर्य हुआ और बोले—"आपके देश में सदा प्लेग रहता है। आपके देश में लाखों लोग अकाल से मरते हैं खाने को नहीं यहां सब प्रकार का आनन्द है। मैं हैरान हूं, आप

लकड़ी के पलंग भी होते हैं। उनमें यदि खटमल पड़ भी जायँ तो औषधियों से दूर कर देते हैं।

खिड़कियों के पर्दे गिरा कर मैंने कपड़े उतारे। दहिले प्रभु को धन्यवाद दिया, बाद में सो गया।

जुलाई २६—आज देर से चल सका। जब मैं सड़क पर पहुँचा तो दस बज गये थे। मित्र के साथ घूमने और उनकी स्त्री से विदा होने में देर हो गई थी। आज गज़ब की धूप थी।

तीन बजे के करीब मैं एक घर के पास पहुँचा, बहुत भूखा था। दस पैसे देकर घर वाले किसान से मैंने कुछ खाने को लिया और चल दिया, जब मड़ी नामक जगह के पास पहुँचा तो सूर्य्य अस्त होने पर था। वहां बहुत से मज़दूर सड़क पर काम कर रहे थे। मड़ी में कोई स्टेशन नहीं; खाली रेलगाड़ी खड़ी होने के लिये दूसरी पटरी डाली गई है। एक ओर छोटी सी पटरी पर कुछ और मज़दूर-गाड़ियां खड़ी थीं। उन्हीं में ये लोग रहते थे। जब मैं मड़ी पहुँचा, ये लोग खाना खाकर सड़क पर बैठे हवा खा रहे थे। मैं भी इन्हीं के पास आ बैठा। ये लोग ग्रीक थे। इनमें से एक, जो थोड़ी अंगरेजी जानता था, मुझसे बोला—

"क्या तुम भूखे हो।"

मैंने कहा—"हां"

तब उसने बावर्ची से कहा कि इस आदमी को कुछ खाने को दो। उसने मुझे रोटी दूध और चाय दी। थोड़ी सी लाड़ भी मैंने माँगी और ज्यों त्यों करके अपना पेट भरा। इससे निपट कर मैं सड़क पर आ बैठा। उस ग्रीक ने, जो अङ्गरेजी जानता था, मुझसे मेरा हाल पूछा। मैंने थोड़े शब्दों में अपनी

व्यवस्था कह सुनाई। तब बहुतसे ग्रीक मेरे इर्द गिर्द आ बैठे। क्योंकि उनके दोभाषिये ने उन्हें मेरी बातें बतला दी थीं। ये लोग अपनी टूटी फूटी अंगरेज़ी में मुझ पर अपने दिल के भाव प्रकट करने लगे।

इस प्रकार कुछ देर तक वार्तालाप होता रहा। मुझ से दोभाषिये ने पूछा—"आप कहां सोयेंगे?"

मैंने कहा—"यहीं सड़क पर सोजाऊंगा।" उसको, न जाने क्यों, यह सुनकर बड़ा दुख हुआ। वह उठकर कहीं गया।

आध घन्टे बाद उसने कुछ लाकर मेरी जेब में डाल दिया और बोला—"आपकी हम लोग कुछ भी सेवा नहीं कर सकते। आप यहां कहां सोवेंगे? यह जगह आप के लायक नहीं। आप यूजीन जाइये वहां किसी होटल में जाकर सोइयेगा"।

मैंने बहुत कहा, पर उस प्रेमी ने न माना। गाड़ी आनेही वाली थी। मुझे ज़बरदस्ती उसने गाड़ी में बिठा दिया। तब ग्रीक मज़दूरों ने रेल चलते समय प्रेम-पूर्वक टोपियां रूमाल हिला हिलाकर मुझे विदा किया।

"वाह रे प्रेम! इन लोगों के साथ मेरा क्या रिश्ता था? इनका देश यूनान, मेरी जन्म भूमि भारत! इनकी भाषा यूनानी, मेरी भाषा हिन्दी। ये लोग मेरी बात तक नहीं समझ सकते, तिसपर इनका प्रेम। ये क्यों? ये लोग गरीब हैं। सारा दिन मजदूरी करके सख्त धूप सहकर रुपया कमाते हैं। अपना देश छोड़ कर यहां ये केवल रुपया कमाने आये हैं। इन्होंने मुझ में क्या बात देखी जो इतना प्रेम प्रगट किया।" रेल चली जाती थी और मैं इन्हीं विचारों में मग्न था। मैंने इन लोगों से कहा था कि मैं अपने देश जा कर निर्धन लोगों में शिक्षा प्रचार करूंगा। क्या इस बात ने इनपर असर

किया ? ये लोग परदेशी हैं, मैं भी परदेशी हूं । इनको मेरे देश के निर्धन लोगों से क्या सम्बन्ध ? इस प्रकार तर्क वितर्क करता हुआ मैं बैठा था कि टिकटवाले ने आकर टिकट मांगा। मैंने उसको टिकट के पैसे दे दिये। जेब देखने पर मालूम हुआ कि उन प्रेमी मज़दूरों ने ग्यारह रुपये मेरी जेब में डाले थे। यूजीन थोड़ी ही दूर था। जब टिकट वाले ने "यूजीन! यूजीन!" पुकारा तब मैं उठा और गाड़ी से निकल स्टेशन पर हो लिया। यूजीन में मैं पहिले रह चुका था। १९०७ के दिसम्बर में मैं यहां ओरेगन विश्वविद्यालय में भर्ती होने के लिये आया था और जून १९०८ तक मैं यूजीन में रहा था। ओरेगन स्टेट का विश्वविद्यालय यहीं पर है। यह छोटा सा कस्बा विलामेट नदी के किनारे बसा है।

इसकी शोभा क्या वर्णन करूं। मैंने जो दिन यहाँ काटे वे बड़े ही आनन्द के थे। यहां शराब बेचना कानूनन मना है इसी से यहां भद्र लोग बसते हैं। बारह हजार की आबादी के इस कस्बे में सब तरह के आराम हैं। बिजली की गाड़ियां गलियों में दौड़ती फिरती हैं। अच्छे अच्छे हाई स्कूल हैं। पुस्तकालय हैं। साफ सुथरी गलियां हैं, यहां के मकान देख तबीयत खुश हो जाती है।

विश्वविद्यालय के इर्द गिर्द की वायु बहुत स्वच्छ है। विलामेट से निकली हुई एक नहर पास ही बहती है। उसके दोनों किनारों पर ऐसे सघन वृक्ष हैं कि उनकी डालियां आपस में प्रेम पूर्वक हाथ मिलाती हैं। गर्मियों में छोटी छोटी नौकाओं पर बैठे हुए प्रेमी युवक अपनी प्रियतमाओं के साथ क्या ही भले मालूम होते हैं। ठंडी ठंडी हवा पेड़ों का साया, जल में नाव,-प्रेम पात्र सखा साथ—वाहरे जीवन! सब स्वतंत्रता के फल हैं। अहा शिक्षा प्रचार से स्त्री पुरुष

दोनों विद्या का आनन्द लेते हैं यहीं जीवन का सच्चा सुख प्राप्त होता है।

प्रकृति ने इस प्रान्त पर बड़ी कृपा की है। आरेगन का यह प्रान्त विलामट की तराई Willamette Valley के नाम से प्रसिद्ध है।

ये तराई १६० मील लम्बी और ६० मील के करीब चौड़ी है। यह प्रान्त बहुत ही सरसब्ज़ है। पानी की कमी नहीं। वर्षा खूब होती है। सब तरह की फ़सल फूलती फलती है। छोटी २ नदियां पहाड़ियां, वृक्षों के कुञ्ज और नातिशीत, नातिउष्ण आबहवा ने इस प्रान्त का स्वर्ग बना रक्खा है। हर तरह के फल फूल यहां होते हैं। सर्दी बहुत नहीं पड़ती; जनवरी में थोड़ी बर्फ़ गिर जाती है। सब तरफ हरियाली ही हरियाली नज़र आती है। कृषकों के लिए यह भूमि स्वर्णमयी है।

इस तराई के बड़े बड़े शहर—पोर्टलैण्ड, आरेगनसिटी, सेलम, अलबनी और यूजीन हैं।

अलबनी की आबादी सात हज़ार है। यह छोटा सा सुहावना कस्बा है। यहां से रेल की एक लाइन कारवालिस को गई है, जो थोड़ी ही दूर पर है। यहीं आरेगन का कृषि कालिज है, जहां से हमारे कई एक भारतीय बन्धुओं ने उपाधियां प्राप्त की हैं।

घूमता फिरता साढ़े नौ बजे के करीब में विश्वविद्यालय की इमारतों के करीब पहुंचा। आज कल छुट्टियों के दिन थे इससे बहुत कम विद्यार्थी विद्यालय में रहते हैं। जो पढ़ाई

गर्मियों में होती है उसी के छात्र इस समय यहाँ रहते हैं। इस कारण मुझे पूरी आशा थी कि यहाँ सोने का प्रबन्ध हो जायगा। अपनी जान पहचान का कोई न कोई छात्र अवश्य ही मिल-जायगा, अतएव कमरा मिलने में और भी सुभीता होगा। यही सोचकर मैंने विद्यालय में जाना उचित समझा था।

जाने पर पता लगा कि मेरा मित्र मिस्टर निकलस यहीं पर है। पर वह कमरे में न था, कहीं घूमने गया था। विद्यालय में सिर्फ पाँच दिन पढ़ाई होती है, शनिवार को छुट्टी रहती है, आज शुक्रवार था। इस कारण किसी से मिलने के लिये मेरा मित्र बाहर गया था। मैंने बेहतर यही समझा कि जब तक वह आवे तब तक यहीं कहीं घूम फिर कर समय काटना चाहिये। दस बज चुके थे। मैं टहलने के लिये पास की गली में होलिया। थोड़ी दूर जाने पर किसी के पियानो बजाने और मीठा आलाप करने की आवाज आई। मैं उसी ओर बढ़ा। एक घर के नीचे के कमरे में कोई गा रहा था। पास आने पर खिड़की में से मैंने एक लड़की को पियानो के सामने बैठी हुई देखा। बिजली की रोशनी उसके दिव्य मुख पर पड़ रही थी और गाने के साथ उस के सुन्दर चेहरे पर झलित होते थे। उसकी उस समय की छटा देखने योग्य थी। क्यों न हो? शुद्ध पवित्र उच्च भावों के समान मनुष्य के मुख को कौन पदार्थ सुन्दर और उज्वल कर सकता है? और गान भी क्या था? देशभक्ति पूर्ण फ्रांस देश का वह मर्म भेदी गान जिसकी धुन से उत्साहित हो फ्रांस वालों ने बड़े विकट समय में अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिये अपना जीवन, अपना सर्वस्व मातृभूमि के अर्पण कर दिया था और अन्त में विजय पा अपने देश के उत्थान की नींव डाली। अच्छे गान का भी मनुष्य के चित्त पर विचित्र प्रभाव पड़ता है। क्या भारतवर्ष

मैं भी ऐसे पवित्र जातीय गान रास्ते २ कभी सुनाई देंगे ? इस गान ने मेरे हृदय पर जादू सा असर किया। अपने देश का प्राचीन इतिहास मेरी आंखों के सामने आने लगा—अपनी प्राचीन मर्यादा और वर्तमान हीन दशा पर विचार कर दुःख उमड़ने लगा। हे ईश्वर ! भारतवासियों को सुबुद्धि दो कि वे अपने देश के बाहर निकल कर यहां आकर देखें कि किस प्रकार के जातीय भाव यहां के लोगों को प्रोत्साहित कर रहे हैं !

एक मूर्ति की तरह मैं खड़ा रह गया। टकटकी लगाए उस देवी की ओर देख रहा था। उसके हृदय से जो भाव निकलते थे वे राग में जान डाल देते थे। उसके स्वर में जीती जागती शक्ति थी। मीठे स्वर और करुण-रस भरे हुए भाव अद्भुत असर पैदा करते थे। मैं वहां से हटा और चुपचाप चल दिया। विश्वविद्यालय के निकट आकर एक पेड़ के तले बैठ गया। मुझ पर क्या गुज़री, रात कैसे कटी, परमात्मा ही जानता है।

जुलाई २०—दूसरे दिन मित्र मिकलस से भेंट हुई। उसके अनुरोध से आज यूजीन में ही ठहर गया। दिन भर घूमने फिरने और अपने पुराने मित्रों से मिलने ही में कटा। प्रेज़िडेन्ट कैम्बल के घर गया। उनसे वार्तालाप हुआ। उनकी स्त्री से मेरी पहले की जान पहिचान थी। उसने बहुत सी बातें पूछीं। फिर प्रोफ़ेसर यङ्ग के दर्शन किये। आज विद्यालय के बड़े दीवानख़ाने में विद्यार्थियों का नाचना गाना था। मेरा मित्र उसी में फंसा रहा। मुझे ऐसी बातें पसन्द नहीं, इस लिये मैंने सोने की तय्यारी की। मित्र ने सब प्रबन्ध कर दिया था। मैंने रात आराम से काटी।

जुलाई ३१—आज का दिन बहुत ठण्डा था। प्रातःकाल ही मित्र निकोलस से विदा हो मैंने सड़क पकड़ी। यूजीन के पास ही थोड़ी दूर पर स्प्रिंगफील्ड नामक गाँव है। उधर से ही मुझे जाना था। विलामेट नदी के किनारे, प्रकृति का आनन्द लेता हुआ मैं चला। चारों ओर सबज़ी थी। यहां सांप बिच्छू आदि का नाम नहीं। घास पर कहीं भी बैठ जाइये, कुछ डर नहीं। स्प्रिंगफील्ड से थोड़ी दूर पर मेकजी नाम की एक छोटी सी नदी बहती है। उसका पानी ऐसा स्वच्छ है कि जल में पैसा फैंकने से देख पड़ता है।

आनन्द से मैं सड़क पर चला आ रहा था। किसान लोग अपने कामों में लगे थे। ये फ़सल के दिन हैं। इन दिनों कृषक अपने काम में मस्त रहते हैं। जहां पानी की अधिक जरूरत है वहां पवन-चक्कियां लगी हैं। कैसा अच्छा इन्तज़ाम है। हवा से आप ही आप चक्की चलती है और पानी निकलता है। न बैलों की जरूरत, न हांकने वाले आदमी की, आप ही आप सब काम हो रहा है। एक हमारा देश है, जहां वही चमड़े के चरसे, वही बैलों की जोड़ी, वही उतार चढ़ाव, वही जहालत की टोकरी, ऐसी दशा में कैसे उन्नति हो सकती है। बेबस मेरे मुंह से निकला—

"कब तक पीओगे प्याले, भारत के रहने वालो।
अब आँखें खोल देखो, हिन्दोस्तान वालो।
गैरों ने तुमको लूटा, सदियों से तुम को मारा,
क्यों बेखबर पड़े हो, भारत के नौनिहालो।
कपड़ा रहा न तन पै, खाने को कुछ नहीं है,
करते गदागिरी हो, शाहों के नाम वालो।

सुन्दर भवन कहाँ थे, रत्नों से जो जड़े थे ;
उन का पता नहीं है, भारी गुमान वालो ।
सन्तान जो तुम्हारी, फिरती हैं मारी मारी,
करती है आदेशकारी, भीष्म के नाम वालो।
आपस की फूट आई, हम पर यह रंग लाई,
सबही तो मार खाई, ऊंचे निशान वालो ।
"

इस प्रकार अपने दिल के फफोले फोड़ता हुआ चला जाता था। दो पहर को मैं धाकर पहुँचा। वहाँ कुछ रोटी और लोड मोल ले कर खाई। ठंडा पानी पिया और चला। रास्ते में एक आदमी मोटर में बैठा चला आ रहा था। मुझे देख कर वह बोला—"चढ़ोगे" मैंने दिल में कहा—अन्धे को क्या चाहिये ? दो आँखें। "जी हाँ यदि आप की मेहरबानी हो तो।" उस ने मोटर खड़ा कर दिया और मैं चढ़ गया। फिर क्या था मोटर मानो हवा हो गया।

रास्ते में उस भद्रपुरुष ने मुझ से मेरा हाल पूछा। मैंने कहा मैं यात्री हूं, यह देश देखने के लिये घूम रहा हूं। इस भले आदमी को आज रोज़बर्ग पहुंचना था, और मुझे भी वहीं जाना था। इस कारण मेरी बन आई, क्योंकि रोज़बर्ग यहाँ से फ़ासले पर है।

विलमेट घाटी से निकल कर हम लोग उम्पका घाटी में आये। यह घाटी अभी अच्छी तरह आबाद नहीं हुई। जङ्गलों और पहाड़ियों में से हम लोग आ रहे थे। बड़े बड़े पेड़ आकाश से बातें करते हुए भयङ्कर जान पड़ते थे। सड़क पहाड़ियों के बीच से ऊपर नीचे चक्कर काटती हुई जाती है।

कभी कभी मैदान आ जाता है, जहाँ खेतों में पशु चरते देख पड़ते थे। उस भद्र पुरुष से मुझे मालूम हुआ कि तेईस अरब फ़ीट से अधिक लकड़ी इसमें है। समय आवेगा जब यह सब कट कटा कर २३००००००००) रुपये के रूप में हो जायगी।

शाम को हम लोग रोज़बर्ग पहुंच गये और उस भद्र पुरुष को मैंने अनेक अनेक धन्यवाद दिए। उस की बदौलत आज अच्छी सैर हो गई। मैं क़सबे की ओर बढ़ा और होटल तलाश करने के लिए स्टेशन के पास पहुंचा। वहाँ एक गाड़ी को आते देखा। उस से झपट कर बचने की कोशिश में मेरे ठोकर लगी और मैं गिर गया। ख़ैर हुई जो कटने से बच गया, तो भी सख़्त चोट लगी। बड़ी मुश्किल से मैंने होटल तलाश कर पाया। थोड़ा खाना खा कर बिस्तरे पर जा पड़ा। रात को टाँग में दर्द होने के कारण नींद न आई।

अगस्त १—पोर्टलेयड से १९८ मील के फ़ासले पर, उम्प का तराई में, रोज़बर्ग एक अच्छा बड़ा कसबा है। इसकी आबादी साढ़े पाँच हज़ार है। डगलस कौन्टी की यह राज धानी समझिये। इस क़सबे में आधुनिक वैज्ञानिक भोगा के सब सामान हैं। स्वच्छ जल, अग्नि संरक्षक यन्त्र, मैला लेजाने वाले नल, अच्छी पक्की गलियां, बिजली प्रकाशित घर, टेलीफ़ोन—कहना क्या, सभी कुछ इस साढ़े पाँच हज़ार की आबादी के क़सबे में विद्यमान है।

डगलस कौन्टी की पैदावार बतला देना भी अनुचित न होगा। इस तराई में गेहूं, ओट, मकई, अलफाल्फा घास, बादाम, अखरोट, सेब, नाशपाती, प्लम, आड़ू, चेरी, अंजीर, अंगूर, पैदा होते हैं। यहाँ की भूमि अच्छी उपजाऊ है। वर्ष

में ३५ इंच तक जल बरसता है। आबपाशी की आवश्यकता नहीं। गाय बैल खूब मोटे ताज़े होते हैं। दूध मक्खन बढ़िया मिलता है। किसान लोग शहद की मक्खियां मुरगियाँ, सूअर, भेड़ पाल कर भी बहुत लाभ उठाते हैं।

जाड़े में यहां अधिक शीत नहीं पड़ता। कभी थोड़ा बर्फ गिर गया, पर ठहरता नहीं। गरमियों में न अधिक गरमी। आज कल अगस्त में मैं कमरे के अन्दर कपड़ा ओढ़ कर सोया था।

मैं यहां अधिक नहीं ठहरा, सवेरा होते ही, इधर उधर चक्कर लगा, शहर की चहल पहल देख, आठ बजे के करीब मैं चल पड़ा। बारह बजे ब्लोल नामक गांव में जाकर पहुंचा। एक दुकानदार ने राह चलतों के लिए साधारण सा होटल खोल रक्खा है, उसको १५ सेन्ट देकर अपनी इच्छानुकूल भोजन किया। फिर चला। रेल यहां एक छोटे से नाले के किनारे किनारे आती है, अलफालफा घास के खेत ही खेत दिखाई देते हैं। बाग बगीचे भी आरम्भ हो गये थे।

साढ़े चार बजे मर्टेल क्रीक आकर पहुंचा। आज यहीं विश्राम करने की सलाह थी। दिन भर में २२ मील चला, शरीर में दर्द था। एक होटल सड़क के किनारे पर था। उसी में जाकर ठहर गया। २५ सेन्ट एक रात के दिये। रात को सो नहीं सका। नाक बन्द हो जाती थी। सारी रात कष्ट रहा।

अगस्त २—मर्टल क्रीक में लकड़ी की मिलें हैं। बहुत से मज़दूर इनमें काम करते हैं। वही लोग यहां रहते हैं।

नाक का कष्ट होने के कारण मैंने ग्रान्टस-पास तक रेल का टिकट खरीद लिया। १२ बजे की ट्रेन में चढ़ कर दो बजे

दोपहर को वहां पहुंचा। रास्ते में रिडल तक अलफालफा खेत और उद्यान देखने में आये। रेल के किनारे का दृश्य मनोहर है। सदर्न पेसेफिक कम्पनी ने अपनी सड़क नदी नालों के किनारे किनारे बनाई है। जहां तक हो सका है, नैसर्गिक दृश्य छूटने नहीं दिये। दोनों ओर फलों से लदे हुये वृक्ष दिखाई देते हैं।

"ग्रान्टस पास" रोगरिवर तराई में है। इसकी आबादी भी ६००० की है। इसके इरद गिरद की भूम सेब, नाशपाती और अंगूरों के लिये बड़ी अच्छी है। पश्चिम के और कस्बों की तरह इसकी आबादी भी बहुत शीघ्र बढ़ रही है।

मेरे पास केवल पचास सेन्ट रह गये थे। एक दूकान से रोटी और मूंग खरीदे। कस्बे से बाहर थोड़ी दूर, पर एक मालगाड़ी के साये में बैठ कर, पेट पूजा में लग गया। दो मज़दूर माल गाड़ी में लकड़ी भर रहे थे। उन्होंने मुझे होबो समझा। मेरी ओर देख देख कर वे हसते थे।

पेट पूजा कर मैंने फिर सड़क पकड़ी। बुड़विल नामक गांव में पहुचने का निश्चय था। यह गांव यहां से १० मील की दूरी पर है। छः बजे शाम को मैं वहां पहुंच गया। बहुत दिनों से पेट भर खाना न मिलने के कारण तबीयत ज़रा परेशान थी। इधर उधर घूम कर भोजन की खोज की, पर कहीं काम न बना। मुझे सोने की बड़ी चिन्ता थी। रात को कहां डगा लगेगा? यही फ़िकर हो रहा था। मालगाड़ी के आने का समय था इस लिये मैं डीपो की ओर चला गया और स्टेशन के निकट टहलने लगा। जब गाड़ी आई तो उस में से एक होबो उतरा। गाड़ी चली गई। वह होबो मेरी

श्रोर आया। क्यों कि मेरे भी कपड़े मैले हो रहे थे। मेरे पास आकर कहने लगा—

"किधर जाओगे ?"

"केलेफोर्निया की श्रोर जाऊंगा।"

"मैं तो उधर से आता ही हूं। मेरा धावा पोर्टलेण्ड (ओरेगन) की ओर है।"

"अच्छा। आप उधर जाइये। लेकिन कुछ खाने पीने की तजवीज़ बतलाओ।"

"वाह, खूब कही! आओ मेरे साथ।"

मैं उसके पीछे पीछे चला। गांव के बाहर थोड़े फ़ासले पर प्रूनों का बगीचा था। उसके पास जाकर वह बोला—

"लो, पेट भर प्रून खाओ।"

लोहे की तार फाँद कर वह बगीचे के अन्दर चला गया और प्रून तोड़ कर अपनी जेबें भरने लगा। जब उसकी मनोवाञ्छा पूरी होगई तो वह बगीचे से बाहर आया। रेल की सड़क पर बैठ कर हम दोनों प्रून खाने लगे। फल अभी अच्छी प्रकार पके नहीं थे, पर हां क्षुधा को शान्ति कर सकते थे।

जब ज़रा पेट से छुटकारा पाया तो सोने का फ़िकर हुआ। मैंने उस होबो से पूछा—

"अब कहीं सोने का भी बन्दोबस्त करो!"

होबो हंस कर बोला—

"वाह इसकी क्या फ़िकर है। वह सामने जो खलियान दिखाई देता है उसी में चल लेटेंगे।" परन्तु मैं अभी तक

पक्का होयो नहीं बना था, मैं कभी घास में नहीं सोया था। इस लिए वहां से उठ कर मैं फिर गाय की ओर चला। गाव में जाकर मैंने होटल तलाश किया। पचीस सेन्ट एक रात के देने पड़े। भूखा ही सो रहा।

अगस्त ३—धुड़विल भारतीय ढग का गांव है। बीच में एक वृक्ष, उसके इर्द गिर्द अर्धचन्द्राकार में घर बने हुए हैं। दुकानें भी साधारण ही हैं। वृक्ष के नीचे हल सरगड आदि पड़े थे और पास ही गैया बँधी हुई थी। इस गाव को देख कर मुझे अपने यहां के ग्राम याद आगये। इधर उधर चक्कर लगा कर मैं सवेरे सात बजे धुड़विल से निकला। अब मेरा धावा फीनिक्स की तरफ था, क्यों कि फीनिक्स में मेरे मित्र मिस्टर स्काट रहते थे। उनसे मिलने की बड़ी उत्कंठा थी। इस लिए क़दम बढ़ा जल्दी जल्दी चला। यहां से कई मील तक भूमि पजाब के बार इलाके की तरह—बिलकुल चौरस मैदान उसमें छोटी छोटी झाड़िया चली गई हैं। दूर तक निगाह दौडाओ, कोई चीज दृष्टि की रोकने वाली नहीं है। दो बजे के क़रीब मैं मेडफोर्ड पहुंच गया। ओरेगन रियासत की जैक्सन कौन्टी का यह सबसे बड़ा शहर है। इस प्रान्तिक भूमि को रोग-रिवर-वैली (Rogue river valley) कहते हैं। मेडफोर्ड की आबादी ग्यारह हज़ार के क़रीब है। इस की सड़कें पेस्फाल्ट (Asphalt) की बनी हैं और अठारह मील के पार्श्वपर्थ इस छोटे से शहर की शोभा बढ़ाते हैं। मैला लेजाने वाले नलों का इन्तजाम बहुत अच्छा है। लाखों रुपय की कीमत के होटल बन हैं। बहुत अच्छे अच्छे हस्प ताल भी बने हैं। कारनेगी महाराज ने यहां भी एक लाइब्रेरी बनवा दी है। नगर के बच्चों के लिये बड़े अच्छे अच्छे स्कूल बने हैं। कहना क्या, मेडफोर्ड एक आधुनिक वैज्ञानिक ढंग

का बना हुआ उन्नत नगर है। इसके इर्द गिर्द की भूमि बढ़िया सेब और नाशपती पैदा करने के कारण बहुत लोगों को इधर आकर्षित करती है।

चलते चलते रास्ते में मैं एक बगीचे के पास खड़ा हो गया। वहां माली लोग वृक्षों को स्नान करा रहे थे। मेरे पूछने पर मालूम हुआ कि वे तम्बाकू के रस को वृक्षों पर छिड़क रहे हैं। इससे फलों के कीड़े शीघ्र मर जाते हैं। अपनी गवर्नमेंट को ये लोग अढ़ाई डालर एकड़ सालाना सिंचाई का लगान देते हैं।

सत्ताईस मील चल कर छः बजे के करीब मैं कीनिमस पहुंच गया। मिस्टर स्काट का घर मालूम नहीं था। उसकी पूछपाछ में भटकते भटकते सन्ध्या हो गई। वे शहर से दो ढाई मील के फ़ासले पर रहते थे। मैंने बहुतेरा यत्न किया कि उनके घर का पता लग जाय परन्तु कार्य-सिद्धि न हुई। पहाड़ियों में भटकते भटकते अंधेरा हो गया। दूर तक कहीं मकान दिखाई न देता था। मैं घबरा गया कि अब कैसे गुज़ारा होगा। पहिले सलाह हुई कि पेड़ पर बैठ कर रात काटूं। इतने में टन! टन! की आवाज़ मेरे कान में पहुंची। अंधेरे में दिखाई तो कुछ नहीं देता था परन्तु जब जब टन, टन, की आवाज मेरे कान में पहुंचती, मुझे धैर्य हो जाता था कि मैं किसी घर के निकट हूं। क्योंकि यह आवाज पशुओं की गर्दनों में पड़ी हुई घंटियों से आती थी। धीरे २ मैं उधर चला। पौन मील के फ़ासले पर जाकर मुझे एक घर दिखाई दिया। बाहर खलिहान में गौवा बंधी थीं। उन्हीं की गर्दनों में घंटियां खटक रही थीं। मकान के निकट जाकर मैंने एक किसान को अपने परिवार के साथ बाहर कुर्सियों पर

वैद ऐसा। मेरा इन लोगों ने बड़ा सत्कार किया। खाने को दिया और सोने के लिये खटिया का भी प्रबन्ध कर दिया। यह किसान दक्षिणी रियासतों का रहने वाला था। प्राय ये लोग बड़े आतिथ्यसेवी होते हैं। रात को यहीं सो रहा।

अगस्त ६ से ७ तक—सवेरे उठ कर मैं फिर मिस्टर स्काट की तलाश में चला। आखिर मकान मिल गया। मेरा मित्र मुझे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसके छोटे से मकान में सब प्रबन्ध ठीक २ था। एक जापानी नौकर अपनी स्त्री सहित मिस्टर स्काट के यहां काम करता था। ये दोनों, जापान से मेरे मित्र के साथ आये थे। इस मकान के कुल पांच कमरे थे। बैठक, रसोईघर, शौचगृह, शयनागार और एक कमरा जापानी नौकर और उसकी स्त्री के लिये था। मिस्टर स्काट ने शिक्षा विभाग की नौकरी छोड़ कृषकों का जीवन इख्तियार किया था। अठारह हजार रुपये लगा कर यह सब भूमि खरीदी थी और दिन रात उसकी उपज बढ़ाने में दत्तचित्त थे।

नहा धोकर मैंने खाना खाया। इसके बाद मिस्टर स्काट का बगीचा देखने चला। इनके बगीचे में सेब नाशपती और आडुओं के वृक्ष अधिक हैं। तीन प्रकार के सेब स्पिट्‌ज़नबर्ग न्यूटाउन, जोनाथन इस प्रान्त में अधिक होते हैं। पहिला स्पिट्‌ज़नबर्ग, गहरे लाल रङ्ग का सेब होता है। सात वर्ष की उमर में इसको फल लगने लगते हैं और मंडी में इस का दाम बहुत अधिक पड़ता है। दूसरा न्यू टाउन कुछ जर्दी लिये हुए रंग का सेब होता है। इसको छः वर्ष की उमर में फल लगते हैं। तीसरा जोनाथन भी लाल रंग का सेब होता है। इसको चार वर्ष की उमर में ही फल लगने लगता है।

अब ज़रा नाशपातियों की भी सुनिये। पहिले क़िस्म बार्टलेट बहुत लाभदायक होती है। बाजार में इसका दाम पौने दो डालर से दो डालर एक सन्दूक के पड़ते हैं, और एक सन्दूक में एक सौ बीस से लेकर एक सौ पचासी तक नाशपाती आती हैं। दूसरी क़िस्म का नाम न्यू-रेड पेंझो है। यह सेप्टेम्बर में फलती है परन्तु बार्टलेट की तरह अधिक नहीं फलती। बाजार में इसकी कीमत दो से लेकर तीन डालर तक एक सन्दूक की पड़ती है। तीसरी क़िस्म का नाम विन्टर नैलिस है। यह अक्तूबर में फलती है। पहिली दो क़िस्मों से यह फल छोटा होता है। इसका दाम बढ़ता घटता रहता है। इन वृक्षों को पाचवें वर्ष में फल लगते हैं।

अब थोड़ा सा हाल आडुओं का भी सुन लीजिए। इस की पहली क़िस्म का नाम अर्ली-एलेक्ज़ेन्डर है। यह जुलाई में फलने लगता है और इसका गूदा गुठली से चिपटा रहता है। यह तिजारत के लायक नहीं होता। दूसरी क़िस्म का नाम हेलज-अर्ली-काफोर्ड है। यह मध्य जुलाई से पकने लगता है। इसका गूदा गुठली से नहीं चिपटता। तीसरी क़िस्म का अर्ली-क्राफोर्ड है। यह पीलापन लिये हुए देखने में बहुत अच्छा होता है। इसका गूदा भी बीज से नहीं चिपटता और देश देशान्तर जाने के लिये भी बहुत अच्छा है। चौथी क़िस्म का नाम कार्मेन है। यह भी अर्ली मायल बहुत बड़ा आडू होता है। इसका गूदा भी गुठली से नहीं चिपटता। दूर २ मण्डियों में घूमने के लिये यह बड़े काम का फल है। आडुओं के वृक्षों को तीसरे साल फल लगता है। इन वृक्षों के बीच की ज़मीन में टुमाटो और मकई बोते हैं। साल में छः बार वृक्षों को स्नान कराया जाता

है। पहिला स्नान चूना गंधक (Lime sulpher) से कराते हैं जबकि बसन्त ऋतु में वृक्षों की कलियां खिलती हैं। इस स्नान का प्रभाव यह होता है कि वृक्षों को कोई बीमारी अथवा छोटे कीड़े नहीं लगते। इसके बाद मई, जून, जुलाई और अगस्त के महीनों में चार स्नान सीसालित (Leap arsonate) से करवाते हैं। इनसे बदरपतंग (Codling moth) नाम का कीड़ा वृक्षों को नहीं लगता। आखीर का स्नान दिसम्बर में फल चुन लेने के बाद करवाते हैं। इससे रहे सहे शिलीन्ध्र, तरुयूका आदि (Fungus, aphis, eggs) और शल्क सम्बन्धी कीट भी (Scal b) नष्ट हो जाते हैं। यह आखिरी स्नान भी (Lime sulphur) से करवाते हैं।

स्काट के साथ मैं उनके बगीचे में गया और हम लोग दिन भर सेब के वृक्षों को सीसालित (Lead arseunte) से स्नान कराते रहे। मिस्टर स्काट के एक दोस्त का लड़का बेंडलगमेल भी यहां आया हुआ था। मजदूरों के कपड़े पहिन यह भी हमारे साथ काम करता था। आठ वर्ष का यह लड़का मेहनत मजदूरी के काम से बिलकुल नहीं घबड़ाता था। वह और मैं दोनों एक दिन घर के सामने की पहाड़ी पर गये। उस पहाड़ी से इर्द गिर्द का दृश्य भली प्रकार दिखाई पड़ता था। वेशलीस नामी शहर बिलकुल पास ही मालूम होता था।

अपने मित्र के साथ मेरी कई एक विषयों पर बातचीत हुई। स्काट के विचार वेदान्त की ओर झुकते थे। वे ये चाहते थे कि मैं वेदान्त धर्म के प्रचार करने में अपना जीवन व्यतीत करूं। मैंने उनसे कहा कि जब तक मेरे देश की राजनीतिक दशा नहीं सुधरती तब तक हम लोगों का कोई हक

नहीं कि हम पाश्चात्य देशों के लोगों को धर्म की शिक्षा दें। क्योंकि पाश्चात्य देशों के सर्वसाधारण लोगों के दिलों में भारतवर्ष के लिये कोई इज्ज़त नहीं है। जब तक हम अपने धर्म को अमली जामा पहिना कर कुछ करके नहीं दिखला देते तब तक वेदान्त की फिलोसोफी का प्रचार करना व्यर्थ का बकवाद मात्र है। मेरे मित्र मुझे यही प्रेरणा करते थे कि मैं भारतवर्ष की राजनीतिक सेवा के काम को छोड़ कर वेदान्त उपदेश का ही काम करू।

अगस्त ७ को रविवार था। आज का दिन सब मैले कुचैले कपड़े धोने में गुज़रा। थोड़ी फ़ुरसत मिलने पर विर्जिनियन नामक उपन्यास पढ़ता रहा। इसके बाद सो गया।

अगस्त ८—आज सवेरे ही शौचादि से निवृत्त हो कर खाना खाकर आठ बजे के क़रीब मैं, मैमस और मिसेज़ स्काट फिटन में बैठ कर टेलेन्ट की ओर चले। स्काट की तबीअत अच्छी नहीं थी, इस कारण वे मेरे साथ न चल सके। टेलेन्ट एक छोटा सा गाव है और मिस्टर स्काट के घर से थोड़ी दूर के फ़ासले पर है। मेडम स्काट मुझे वहां तक पहुंचाने गईं। टेलेन्ट पहुँच कर मैंने उनसे विदा मांगी और पेशलैन्ड की ओर पैदल चला। दस बजे के क़रीब मैं पेशलैन्ड पहुंच गया। यहां डाकखान में आकर अपनी चिट्ठियों के विषय में पूछ ताछ की। एक चिट्ठी में पांच डालर का मनीआर्डर था जो कि पोर्टलैन्ड के मिस्टर किम ने भेजे थे। पोस्ट आफिस से निबट कर मैं शहर देखने चला। पेशलेन्ड भी रोग रिवर घाटी में है। इसकी आबादी सात हज़ार से अधिक है। यहां अच्छे अच्छे मकान बने हैं। बड़ी बड़ी चौड़ी गलियां और पक्की सड़कें इस छोटे से नगर की शोभा बढ़ाती हैं। आरगम

को मोहित करती है। इसमें सन्देह नहीं कि आरेगन के नैसर्गिक दृश्य संसार में अपना स्थान उच्च रखते हैं।

पश्चिमी आरेगन का भाग शीत में भी मौसम बहुत ज़्यादा उष्ण है। पैसिफिक महासागर, अपनी उष्ण वायु लहरों से, इस भाग को वनस्पति के लिये अधिक उपयोगी बना रहा है। बड़े बड़े जंगल इस भाग में हैं। कृषि, दुग्ध, व्यवसाय और कला की वृद्धि के लिए यह भाग बड़े ही काम का है।

विलामेट घाटी चार हज़ार वर्ग मील के करीब है। इसकी आबादी चार लाख है, तो भी इसमें अभी बहुत आदमियों की खपत हो सकती है। अन्य घाटियों में अभी बहुत थोड़ी आबादी हुई है। आरेगन रियासत में कम से कम दो करोड़ आत्मायें आनन्द से रह सकती हैं। इस रियासत के पूर्वीय भाग की भूमि दूसरे प्रकार की है। पैसिफिक महासागर का इस पर प्रभाव नहीं पड़ता। कैस्केड पर्वत श्रेणियों के पूर्व में जो भूमि है वह गेहूं की उपज के लिए बहुत अच्छी है। यहां ऊंची नीची पहाड़ियां दिखाई नहीं देतीं। बड़े बड़े चौरस मैदान गेहूं की खेती के लिए बड़े काम के हैं। सूर्य देवता भी इस भाग पर अधिक कृपा रखते हैं और जाड़ों में बर्फ भी पड़ जाती है। इस भाग से गेहूं, बैल, भेड़ आदि बिकने को बाहर जाते हैं। यदि इस भाग में सिंचाई का प्रबन्ध हो जाय तो इस भाग की उपयोगिता बहुत बढ़ जायगी। स्टेट गवर्नमेंट इस बात का उद्योग कर रही है। रेलों की कंपनियां भी इधर अपना कदम बढ़ा रही हैं। धीरे धीरे रेलों के बन जाने से उपज को मण्डी में लाने का सुभीता हो जायगा, और दाम भी चौगुनी पचगुनी हो जायगी।

युनाईटेड स्टेट्स गवर्नमेंट के विद्वान प्रोफेसर विथकूम्ब का यह कथन है कि आरेगन की छः करोड़ साढ़े पन्द्रह लाख

एकड़ ज़मीन लोगों के वास्ते बड़ी लाभदायक है। इस समय चालीस लाख एकड़ से कम भूमि काम में लाई जाती है। बाकी ज़मीन खाली पड़ी है। कृषि के लिये यहां की ज़मीन बहुत बढ़िया है और जब सब भूमि को काम में लाया जायगा तो आरेगन कि उपज पचास करोड़ डालर सालाना की हो जायगी। यदि आरेगन के दक्षिणी और पूर्वीय भाग को अच्छी तरह से काम में लाया जाय और बुद्धिमत्ता से सिंचाई की जाय तो लाखों गृहस्थियों के लिये यह रियासत स्वर्गधाम बन सकती है।

गवर्नमेंट के पास कई हज़ार एकड़ ज़मीन देने के लिये है। दिन प्रतिदिन यूरोप और पूर्वीय अमरिका से लोग पैसिफ़िक कोस्ट पर आ कर बस रहे हैं। आरेगन की आबादी भी बढ़ रही है। आरेगन के सेब इंग्लैंड और स्काटलैण्ड तक बिकने जाते हैं। जापान, चीन के लोग भी आरेगन के फलों को खाते हैं। इससे पता लग सकता है कि जब यहां पर काफ़ी आबादी हो जायगी तो यहां के मेवे संसार की मण्डियों में बिकने लगेंगे।

हैं परन्तु जो बहुत मोटी और मजबूत होती है। अमरीकन गवर्नमेण्ट ने आरेगन रियासत के बड़े २ जंगलों को अपनी रक्षा में ले लिया है।

इस रियासत में सोना, चांदी, तांबा और कोयले की खानें हैं, और यह व्यवसाय भी दिन ब दिन बढ़ रहा है। रियासत को करीब तीन लाख डालर की सालाना आमदनी इस व्यवसाय से है।

थोड़ा मछलियों का भी हाल सुन लीजिये। इस रियासत को करोड़ों रुपयों का फायदा मछलियों द्वारा होता है। करीब चालीस लाख डालर की सामन मछली कालम्बिया नदी से पकड़ी जाती है। गवर्नमेंट की ओर से ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि कभी भी इस मछली का टोटा न हो। रियासत में बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं, जो इन मछलियों को डिब्बों में डाल अपने अपने लेबल लगा देशदेशान्तरों को भेजती हैं। करीब पच्चीस लाख डालर हर साल मजदूरी आदि में खर्च होते हैं और कुल पचास लाख डालर की पूंजी इन कम्पनियों में लगी है। अमरीकन गवर्नमेंट ने अपने योग्य प्रबन्धकर्ताओं के द्वारा इन मछलियों की वृद्धि का काम अपने हाथ में लिया हुआ है। इसलिये यह आशा रहती है कि रियासत को सदा इस प्रकार की आमदनी होती रहेगी।

अब हम दो चार शब्द आरेगन के "हाप्स" के विषय में कहेंगे। हाप एक प्रकार का फूल होता है। यह शराब बनाने के काम में आता है। क़रीब एक लाख बीस हजार थैले हाप हर साल यहाँ पैदा होते हैं, और दिनों दिन बढ़ते ही जायंगे, क्योंकि इसकी अच्छी लाभदायक फ़सल होती है। भेड़ों से भी यहां खूब काम लिया जाता है। क़रीब दो

एकड़ ज़मीन लोगों के वास्ते बड़ी लाभदायक है। इस समय चालीस लाख एकड़ से कम भूमि काम में लाई जाती है। बाकी ज़मीन खाली पड़ी है। कृषि के लिये यहां की ज़मीन बहुत बढ़िया है और जब सब भूमि को काम में लाया जायगा तो आरेगन कि उपज पचास करोड़ डालर सालाना की हो जायगी। यदि आरेगन के दक्षिणी और पूर्वीय भाग को अच्छी तरह से काम में लाया जाय और बुद्धिमत्ता से सिंचाई की जाय तो लाखों गृहस्थियों के लिये यह रियासत स्वर्गधाम बन सकती है।

गवर्नमेंट के पास कई हज़ार एकड़ ज़मीन देने के लिये है। दिन प्रतिदिन यूरोप और पूर्वीय अमरिका से लोग पैसिफिक कोस्ट पर आ कर बस रहे हैं। आरेगन की आबादी भी बढ़ रही है। आरेगन के सेब इंगलैण्ड और स्काटलैंण्ड तक बिकने जाते हैं। जापान, चीन के लोग भी आरेगन के फलों को खाते हैं। इससे पता लग सकता है कि जब यहां पर काफ़ी आबादी हो जायगी तो यहां के मेवे संसार की मण्डियों में बिकने लगेंगे।

फलों के अतिरिक्त इस रियासत में लकड़ी की तिजारत भी बहुत होती है। करीब दो करोड़ इकतीस लाख डालर की लकड़ी यहां पर सालाना कटती है, और चार अर्ब फीट लकड़ी अभी तक मौजूद है। पोर्टलैण्ड की मिलों में बाईस लाख पचास हज़ार फीट लकड़ी रोज़ कटती है। संसार के किसी भी शहर में इतनी लकड़ी नहीं कटती। आरेगन की पैदावार संसार की मण्डियों में शीघ्र बिक जाती है। यहां का फर (देवदारू) लकड़ी दूर दूर तक बिकने जाती है। फिर एक प्रकार की लकड़ी है, जिस को आसानी से काट छांट सक

हमारे अधिकांश पाठक इन राजनीतिक परिभाषाओं के अर्थ नहीं जानते होंगे, इस लिये सब से पहिले हम इन राजनीतिक शब्दों की व्याख्या करते हैं—

पहिला आस्ट्रेलियन व्होट प्रथा—उस ढंग का नाम है जिस के द्वारा व्होट देने वालों को राय देने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है; जिस में किसी को रिश्वत खाने का अवसर नहीं मिलता। साथ ही बाहरी आदमियों को यह भी पता नहीं लगता कि कौन पुरुष किसके लिए व्होट देता है, ताकि धूर्त लोग अपनी चालाकियों द्वारा भीरु मनुष्यो पर कोई हथकंडे न जमा सकें। यह कानून ओरेगन रियासत में १८८९ में पास किया गया था।

दूसरी बात व्होट—रजिस्ट्री के सम्बन्ध में है। इस क़ानून के अनुसार हर एक राय देने वाले को व्होट देने से पहिले अपना नाम रजिस्टर्ड कराना पड़ता है। चुनाव होने से एक महीना पहिले व्होट देने वालों की रजिस्ट्री होती है, और प्रारम्भिक चुनाव से दश दिन पहिले रजिस्ट्री कराना बन्द हो जाता है। प्रारम्भिक चुनाव के चार दिन बाद फिर रजिस्ट्री आरम्भ हो जाती है और असल चुनाव के बीस दिन पहिले तक बराबर जारी रहती है। व्होट देने वाला या तो खुद रजिस्ट्री-दफ्तर में जाये या किसी मजिस्ट्रेट के सामने रजिस्टर फार्म पर हस्ताक्षर करके रजिस्ट्री-दफ्तर में भिजवा दे। रजिस्ट्री की पुस्तकों पर व्होट देने वाले का पूरा नाम, उसका रजिस्ट्री नंबर, रजिस्ट्री होने की तिथि, उसका पेशा, आयु, जन्मस्थान, अमरीकन बनने की तिथि तथा उसका निवास स्थान लिखा रहता है, और साथ ही उसके मकान का नम्बर, गली का नाम तथा कमरे की संख्या भी दर्ज रहती है। इन सब सावधानियों का अभिप्राय यह है कि कोई पुरुष

करोड़ पौंड ऊन हर साल भेड़ों से उतारी जाती है। रियासत की आबहवा इस व्यवसाय के लिये भी बड़े काम की है। बहुत सी मिलें इस का पक्का माल तय्यार करती हैं। ऊन विद्या-विशारदों का मत है कि यह रियासत ऊनी पक्का माल तय्यार करने में आदर्श रूप है।

पश्चिमी आरेगन में बकरियां बहुत होती हैं। किसानों को इन से बड़ा लाभ होता है। इन के बालों से भी अच्छा खासा लाभ उठाते हैं।

आरेगन में स्टेट विश्वविद्यालय के अतिरिक्त कई एक विश्वविद्यालय और कालेज हैं इन में से प्रसिद्ध यह हैं—पैसिफिक विश्वविद्यालय, विलामेट विश्वविद्यालय, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, वेनिल्डिकून कालेज, पैसिफिक कालेज, मेक्मिनविल्ल कालेज, अलबनी कालेज, तथा रीड इन्स्टीटयूट। रियासत की तरफ़ से एक वैज्ञानिक कृषि कालेज कारवालिस में स्थापित है जहां पर कृषि के असली ढङ्ग सिखाये जाते हैं।

हम ने आरेगन के सम्बन्ध में खास बातों का जिक्र कर दिया है। केवल एक बात और कहनी है। आरेगन की शासन प्रणाली तमाम युनाइटेड स्टेटस आफ अमरीका में श्रेष्ठतम है। यहां पर लोग अपना शासन आप करते हैं। यहां पर आस्ट्रेलियन-वोट-प्रथा, व्होट देने वालों की रजिस्ट्री की शैली तथा—

1 Initiative and Referendum.
2 Direct Primary
3 Corrupt Practices Act
4. Recall

आदर्श शासन प्रणाली के उपरोक्त चार प्रसिद्ध राजनीतिक शस्त्र भी लोगों के हाथों में हैं।

हमारे अधिकांश पाठक इन राजनीतिक परिभाषाओं के अर्थ नहीं जानते होंगे, इस लिये सब से पहिले हम इन राजनीतिक शब्दों की व्याख्या करते हैं—

पहिला आस्ट्रेलियन व्होट प्रथा—उस ढंग का नाम है जिस के द्वारा व्होट देने वालों को राय देने की पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है, जिस में किसी को रिश्वत खाने का अवसर नहीं मिलता। साथ ही बाहरी आदमियों को यह भी पता नहीं लगता कि कौन पुरुष किसके लिए व्होट देता है, ताकि धूर्त लोग अपनी चालाकियों द्वारा भीरु मनुष्यों पर कोई हथकंडे न जमा सकें। यह कानून ओरगन रियासत में १८९७ में पास किया गया था।

दूसरी बात व्होट—रजिस्ट्री के सम्बन्ध में है। इस कानून के अनुसार हर एक राय देने वाले को व्होट देने से पहिले अपना नाम रजिस्टर्ड कराना पड़ता है। चुनाव होने से एक महीना पहिले व्होट देने वालों की रजिस्ट्री होती है, और प्रारम्भिक चुनाव से दस दिन पहिले रजिस्ट्री कराना बन्द हो जाता है। प्रारम्भिक चुनाव के चार दिन बाद फिर रजिस्ट्री आरम्भ हो जाती है और अन्तरल चुनाव के बीस दिन पहिले तक बराबर जारी रहती है। व्होट देने वाला या तो खुद रजिस्ट्री-दफ्तर में आवे या किसी मजिस्ट्रेट के सामने रजिस्टर फार्म पर दस्तखत करके रजिस्ट्री-दफ्तर में भिजवा दे। रजिस्ट्री की पुस्तकों पर व्होट देने वाले का पूरा नाम, उसका रजिस्ट्री नंबर, रजिस्ट्री होने की तिथि, उसका पेशा, आयु, जन्मस्थान, अमरीकन बनने की तिथि तथा उसका निवास स्थान लिखा रहता है, और साथ ही उसके मकान का नम्बर, गली का नाम तथा कमरे की संख्या भी दर्ज रहती है। इन सब सावधानियों का अभिप्राय यह है कि कोई पुरुष

एक से अधिक बार व्होट न दे सके। व्होट देते समय क्लर्क को पूरा अख्तियार व्होट सम्बन्धी प्रश्न व्होटर से करने का है और इस प्रथा के अनुसार धूर्त लोग कोई बदमाशी नहीं कर सकते। नहीं तो यह होता था कि एक एक आदमी दस दस, बीस बीस बार भिन्न भिन्न स्थानों में आकर व्होट दे जाता था और इस प्रकार दुष्ट लोगों के चुनाव में सहायता देता था। इसके अतिरिक्त मृतलोगों के नाम से व्होट इकट्ठे किये जाते थे। इन सब बुराईयों के रोकने के लिये ओरेगन के लोगों ने १८९९ ई० में रजिस्ट्री होने का कानून पास कर दिया।

तीसरा (Initative and Referendum) राजनीति विज्ञान में बड़े महत्ता की प्रथा है। इसके अनुसार कानून बनाने की शक्ति प्रतिनिधियों की पञ्चायत को दी जाती है, परन्तु सर्वसाधारण कानून के मसविदे को पेश करने और उसके सुधारने की शक्ति अपने हाथों में रखते हैं। साथ ही यह भी कि कानून को मजूर करने व रद्द करने में भी वे प्रतिनिधि—पञ्चायत से स्वतन्त्र होते हैं, और उनको यह भी शक्ति होती है कि वे पञ्चायत के किसी काम को रद्द व स्वीकार कर सकते हैं। यदि आठ फी सदी व्होट देने वाले एक अर्जी पर हस्ताक्षर करके किसी खास कानून के मसविदे को पञ्चायत के सामने पेश करें तो पञ्चायत को अगले चुनाव में उस विषय को लोगों के सामने लाना पड़ेगा। इस विधि को (Initiative) कहते हैं। रीफ्रेन्डम Referendum के अनुसार केवल पांच फी सदी व्होट देने वाले एक अर्जी पर हस्ताक्षर करके किसी पास हुआ कानून पर पुनः विचार करने के लिये पञ्चायत को मजबूर कर सकते हैं। रियासत का गवर्नर लोगों का केवल सेवक है। उसको यह अधिकार नहीं कि

वह सर्वसाधारण द्वारा पास किये हुए किसी कानून को रद्द कर सके।

चौथा (Direct Primary) कानून है। इसके अनुसार प्रत्येक अफ़सर का चुनाव लोग करते हैं। जिस जिस हिस्से में जो जो अफ़सर होता है उसको वहीं के सर्व साधारण बहुमतानुसार चुन लेते हैं। कोई भी मनुष्य किसी बड़े पद के लिये अपने नाम को लोगों के सामने पेश कर सकता है। उसको केवल कुछ फ़ी सदी व्होट देने वालों के हस्ताक्षर करवाकर एक अर्ज़ी दफ़तर में भेज देनी चाहिये। मतलब केवल यह है कि कोई भी योग्य आदमी, जिस पर लोगों का विश्वास हो, अफ़सर चुना जा सकता है, और होनहार, विद्वान, न्यायशील पुरुष अपनी हिम्मत से इच्छानुकूल पद को पा सकता है। किसी प्रकार का पार्टी सिस्टम इस में नहीं रहता। प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्रता से अपनी योग्यतानुसार देश सेवा कर सकता है।

पाँचवा कानून गवर्नमेंट को दोषों से रहित करता है। इसके अनुसार उम्मीदवार केवल पन्द्रह फ़ी सदी अपनी आमदनी का भाग उच्चपद की प्राप्ति के लिये खर्च कर सकता है। परिणाम यह होता है कि रिश्वत द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी भी ओहदे को नहीं ले सकता। और न कहीं, धनिक रूप नियों द्वारा कोई उम्मीदवार किसी ओहदे को हासिल कर सकता है। रियासत का मंत्री अपनी ओर से एक पुस्तिका ऐसी छपवा देता है जिस में उम्मीदवार की योग्यता का वर्णन हो, और साथ ही जो कुछ पालिसियाँ उम्मीदवार की हों, उनका भी ब्योरेवार वर्णन उसमें दिया जाता है। ऐसे ऐसे ट्रेक्ट व्होट देने वाले नागरिकों की सुविधा के लिये छपवाये जाते हैं ताकि उनको उम्मीदवारों की योग्यता पर विचार

८७८ वर्ग मील है। कैलेफोर्निया की एक रियासत इन नौ रियासतों से भी बड़ी है। इस कुम्भकर्णी कैलीफोर्निया में अब मैं घुसा हूं। लिनिफयू और शास्ता पर्वतों में मैं पहुंच गया। गाड़ी ऊंचे ऊंचे जा रही है शास्ता के झरनों के पास होटल बने हैं। सुन्दर, सुहावने बगले पड़े हुए हैं। उन में सैलानी अमरीकन आनन्द ले रहे हैं। पर एक बात बड़े भारी स्वार्थ की यहाँ देखने में आई। शास्ता के झरनों का पानी बिकता है, उस पर किसी पुरुष का अधिकार है। ईश्वरदत्त पदार्थ पर मनुष्यमात्र का न्यायानुकूल अधिकार होना चाहिये, किसी व्यक्ति विशेष का क्यों?

यही सोचता विचारता डन्समोर पहुंच गया। इस समय सन्ध्या हो गई थी। भूख के मारे मैं बेचैन था। बाज़ार में घूम-कर कुछ खाना तलाश करने लगा। सभी मेरी ओर देखते थे। कोई रुज्जन घूरते भी थे। यह क्यों? यह कैलेफोर्निया है। यहा के मज़दूर हिन्दुओं से घृणा करते हैं। और मुख में हिन्दुत्व की यह पहचान थी कि मैं झट से होटल में नहीं चला गया। मैं मांस के लोथड़ों तथा शराब की बोतलों को देख मुँह फेर लेता था। भला हिन्दू सभ्यता कहीं छिप सकती है? थक थकाकर एक बेंच पर बैठ गया। लोगों का तमाशा देखने लगा। तमाशा क्या था—प्रकृति की गुलामी के दृश्य थे। एक भलामानस मेरे पास ही बैठा तमाखू की बट्टा चबा रहा था और पास ही थूकता जाता था। अपने दांतों से बट्टी का टुकड़ा काट, बाकी बट्टी मेरी ओर कर, कहने लगा—

"लो चबाओ—Take a chew"

मैं जानता था कि यह यहाँ के मज़दूरों का आम दस्तूर है। एक दूसरे के हाथ से बट्टी ले ये लोग चबाया करते हैं

और इसी से इनका पारस्परिक प्रेम बढ़ता है। अब अगर मैं हिन्दू न होता तो फ़ौरन वहीं उसके से चपाम लगता और ज़रा सी देर में मेरी उसकी गहरी छनती, पर मुझ से यह कैसे हो सकता था। मुझे बचपन से सब प्रकार के नशों से घृणा है और तिस पर जूठा लेकर खाना! झट से मैं वहां से उठ कमरा तलाश करने लगा। २ सेन्ट दे कमरा लिया और भूखे पेट ही शय्या पर पड़ रहा।

अगस्त ६—प्रातःकाल सात बजे डन्समोर से चला। आज गज़ब की गरमी थी। धूप कड़ाकेदार पड़ रही थी। पर्वत श्रेणियों के बीच रेल की सुरंगों को पार करता हुआ जा रहा था। एक बड़ी सुरंग के बाहर कुछ ग्रीक लोग काम कर रहे थे। उनके बावर्ची के पास आ कर कुछ सूखी रोटी लेकर खाई और कहवा पिया। इस सुरंग को पार कर सक्रेमेन्टो नदी के किनारे पहुंच गया। रेल की सड़क यहां इस नदी के किनारे किनारे गई है। पहाड़ों के दृश्य बड़े रमणीक हैं। जगह जगह जंगलों में, वृक्षों के काटने छांटने की आवाज़ आती थी। आज कल (Logging camps) जंगलों में पड़ाव डाल आते हैं और करोड़ों फ़ीट लकड़ी काट काट कर नीचे मैदानों में लाई जाती है। केसल क्रीक के पास पहुंच कर नदी में स्नान किया। बड़ा आनन्द आया। परन्तु भूख सख्त लगी हुई थी। आज २५ मील की यात्रा बड़ी कठिनता से हुई। संध्या को पांच बजे डैल्टा पहुंचा। परन्तु जूते में छेद हो गए। सड़क के कङ्कड़ों ने इस को छलनी कर दिया था।

डेल्टा एक छोटा सा गांव है। मज़दूरों के दो दल यहां काम करते थे, एक जापानियों का और एक ग्रीक लोगों का। प्रत्येक दल के खाने पकाने का प्रबन्ध जुदा जुदा था। मज़दूरी इनको एक डालर ६० सेन्टस रोज़ के हिसाब से मिलती

थी। मैंने यहां काम तलाश किया, पर नहीं मिला। भूख के मारे परेशान था, टांगे थक गई थी। स्टेशन के पास सोने की कोई जगह न देख, टहलने लगा। रात के दस बज गये। सब लोग अपने अपने किवाड़ बन्द कर सो रहे। केवल होटल का दरवाज़ा जगमगा रहा था। उसके अन्दर से शराबियों के हंसने खेलने की आवाज़ आती थी।

ग्यारह बज गये। चारों ओर अँधेरा था। मालगाड़ी के आने की तैयारी थी। मैंने आज इसी पर चढ़ने का सङ्कल्प किया। मुझे आज होबो बनने की धुन समाई। गाड़ी धीरे धीरे आ रही थी। जब डेल्टा के पास पहुंची तो एक डिब्बे के सीखचे पकड़ मैं उसकी छत पर जा बैठा। गाड़ी पहाड़ों के बीच में से आ रही थी। ठंडी ठंडी हवा से मेरा शरीर कांपने लगा। जब कोई सुरङ्ग दिखाई देती तो मैं झट अपना सिर झुका छत से लगा देता। यदि ऐसा न करता तो अवश्य ही किसी पत्थर से टकर खा कर सिर फट जाता। चार बजे के क़रीब गाड़ी पन्डरसन पहुंची। पर्वतमाला अब पीछे रह गई थी। सामने चौरस मैदान था। कुकड़ू कू की ध्वनि सुनाई देती थी। गाड़ी से उतर मैं सड़क पर हो लिया।

अगस्त १०- मैंने पन्डरसन में ठहरना अनुचित समझा और यहांही चला गया। अब बहुत बड़े बड़े खेत देखने में आये। मीलों लम्बे चौड़े खेतों में सैकड़ों हज़ारों पशु चरते दिखाई देते थे। पशुपालनार्थ यह भाग प्रसिद्ध है। गरमी इधर ग़ज़ब की पड़ती है। लू भी चलती है। भारत छोड़ने के बाद आज फिर लू का सामना हुआ। प्यास के मारे दम निकलने लगा। दस बजे के क़रीब फाटनबुश नामी क़स्बे में पहुंचा। यह बड़ा रद्दी और भद्दा क़स्बा है। इसका डीलडौल, इसकी वज़ह क़तह पुराने ढर्रे की है। ऐसा मालूम होता है

मानो इसे नई दुनियाँ की हवा ही नहीं लगी। शायद रवि की उग्र रश्मियों का प्रभाव हो। डाकघर में आकर मैंने कुछ पोस्ट कार्ड खरीदे और अमरीकन मित्रों को चिट्ठियाँ लिखीं। तदनन्तर एक डबल रोटी खरीद कर खाई और चला।

चलते चलते बड़े ज़ोर की नींद लगी। सड़क के किनारे एक ऊँचे स्थान का सहारा ले मिट्टी में लेट गया। आँख लगी ही थी की गरदन पर किसी ने काटा। झट ही उठ खड़ा हुआ। गरदन पर हाथ फेरा तो चीटियाँ! वाहरी क़िस्मत! मेरी गरदन में मला पया रस भरा था। मालूम हुआ कि मेरे सिर से जो पसीना आ रहा था उसी को गन्ध उनको खींच लाई थी। इन रक्त वर्ण चीटियों को देख मुझे अपने देश की चीटियों का स्मरण हो आया। यहा से उठ फिर सड़क की राह ली। इस कड़ाकेदार धूप में चलना कठिन हो गया। प्यास से दम निकलने लगा। दूर एक विशाल भवन दिखाई दिया। विचार किया कि वहीं चल कर जल तलाश करना चाहिये।

उस भवन के पास पहुँच कर वहा के कुएं से डोल खेंच जल पिया। फिर पास ही एक वृक्ष के साये में बैठ कर अपनी डायरी लिखने लगा। इस समय एक बजने को था। उस भवन के अन्दर से गाने की आवाज़ आ रही थी। कौन गा रहा था? क्या गा रहा था? कुछ समझ नहीं पड़ा। मैं भी अपनी धुन में कुछ गाने लगा—

> ऋषी आर्य्यों की गोरों ने दबाली,
> पड़ी वाल्मीकों की कुटियां हैं खाली।
> वशिष्ठों की सन्तान दर दर सवाली,
> है इस हाल में उनका ईश्वर ही वाली।

था प्रख्यात विद्या में जो देश सारे,
उसी के ही बालक फिरें मारे मारे।
खुदाया यह पलटी है कैसी खुदाई,
बतादे जुरम यह सजा जिस दिलाई।

जब चित्त शान्त हुआ तब फिर चलने की ठानी। रेल की पटड़ी पटड़ी चला। धूप ने आज गजब ढाया। दूर तक पानी न मिलने से तबियत बड़ी परेशान हुई। इरद गिरद वृक्षों की बड़ी कमी है और आबादी भी फासले पर है। मेरा गला सूख गया, मानो प्राण निकलने लगे। पांच बजे के करीब मैं एक किसान के घर के पास पहुंचा। वहां जाकर पेट भर पानी पिया। चित्त चाहता था कि पानी पीता ही जाऊं पर जब पेट फटने लगा तो लाचार हो गया। अब चलना मुश्किल था। खैर कुछ सुस्ता कर धीरे धीरे चला। रैड्ब्लफ के निकट पहुंच गया था।

थकाहारा छः बजे शहर में पहुंचा। मज़दूर लोग मिलों से लौट रहे थे। कोई कोई मेरी ओर घूरता भी था। मैं भी एक होटल में पहुंचा और उसका बटन दबाया। होटल का स्वामी एक जरमन घंटी सुन कर बाहर आया और मुझ से पूछा—

"आप क्या चाहते हैं ?"

"मुझे एक कमरा सोने के लिये चाहिये।" मैंने धीरे से कहा।

"बहुत अच्छा" यह कह वह मुझे अपने साथ ले चला। ऊपर ले जाकर एक अच्छा कमरा दिखला दिया। साफ सुथरे कमरे में पलङ्ग सजा था। उस पर सफेद चद्दर बिछी थी दो कुरसियां रक्खी थीं। पेशाब करने का बर्तन धरा था। एक जल की सुराही में पानी भरा रक्खा था, पास ही

शीशे का गिलास भी था। हाथ मुंह पोंछने के लिये एक शुभ्र तौलिया भी लटक रहा था। इन सब के २१ सेन्ट अर्थात् बारह आने देने पड़े। यह इन्तज़ाम यात्रियों के लिये बड़ा ही सुखदायी है। साथ साथ बोझा लादे सारे फिरने की कोई ज़रूरत नहीं। जिस जगह आइये वहीं साफ़ सुथरा कमरा और बिस्तरा मिलता है। हाँ इसमें ख़र्च ज़रूर पड़ता है। बेचारे भारतवासी जिनको पेट का ठिकाना नहीं, १२ आने के पैसे फ़िज़ूल में दें? यह ठीक है पर धनिक भारतवासियों की दशा देखिये, जो ख़र्च कर सकते हैं। यहाँ तो शिक्षा की कमी है। बिना सर्वसाधारण में शिक्षा फैले, बिना राष्ट्र संगठन हुए, ये सब उन्नत बातें हमारे यहां नहीं आ सकतीं।

हाथ मुंह धोकर खाने की तय्यारी की। होटल वाले की एक युवती कन्या ऊपर खड़ी थी। उससे मैंने अपना निवेदन कर दिया। बड़ी प्रसन्नता से उस कुमारी ने मेरे लिये निरा मिष भोजन मँगवा दिया। मैं खाना खाने लगा। वह भी पास बैठ गई और मुझसे पूछने लगी—

"आप कहां से आते हैं?"

"मैं भारतवर्ष (India) से आता हूँ।"

"क्या! इण्डिया से? नहीं, नहीं आप की शक्ल तो वैसी नहीं है।"

हँस कर मैंने कहा—

"क्यों मेरी शक्ल वैसी क्यों नहीं?"

ज़रा मुस्करा कर वह बोली—

"इण्डिया में तो हिन्दू लोग रहते हैं। वे बड़े असभ्य, जंगली लोग हैं, सरों पर बड़ी बड़ी पगड़ियां बांधते हैं और लम्बी लम्बी दाढ़ियां रखते हैं।"

मैंने पूछा—

"आपने कहां देखे हैं ?"

वह बोली—

"यहीं पर। यहीं केलेफोर्निया में बहुत हैं। इधर उधर झुण्ड के झुण्ड घूमा करते हैं। वे औरतों को घूरते हैं।"

मैंने थोड़े में उनको समझा दिया। भारत में शिक्षा के न होने का जो मुख्य कारण है उसकी व्याख्या समझाई। भोजन करने के बाद में और वह फिर बातें करने लगे। मैंने उससे पूछा—

"आपके इस भाग में तो बड़ी गरमी पड़ती है। मैं आज एण्डरसन से पैदल आया हू। गरमी ने तो मुझे झुलस दिया।"

"हाँ, आजकल दिन के समय कड़ी धूप पड़ती है पर फिर भी आप को कमरे के अन्दर ही सोना पड़ेगा। यहां की रातें ठण्डी होती हैं। केलेफार्निया के इस भाग को सेक्रेमेण्टो की तराई (Sacramento Valley) कहते हैं। यहाँ सर्दी भी अच्छी होती है। सन्तरा अञ्जीर जैतून, खजूर, नीम्बू यहाँ खूब फलते हैं, आड़ू अंगूरों की भी कमी नहीं है। चावल भी पैदा होता है।"

चावल का नाम सुन कर मैं बड़ा विस्मित हुआ। मेरा ख्याल था कि चावल केवल दक्षिणी रियासतों में ही होता है, इधर उत्तरी केलेफोर्निया में चावल का होना असम्भव होगा। मैंने पूछा—

"क्या यहां भी चावल होता ?"

उसने इस कर कहा—

"हां। जो गरमी आज आप को लगी थी वही चावल को पैदा करती है।"

मैंने कहा—

"पर इसके लिये पानी भी तो चाहिये। मैं तो रास्ते में पानी बिना प्यासा मर गया।"

युवती बोली—

"केलेफोर्निया में पानी की क्या कमी है। सेक्रेमेण्टो नदी बहती है। बड़े बड़े पर्वत हमारे निकट हैं। फ्लूमस (Flumes) के द्वारा दूर दूर से जल लाते हैं।"

मैं—"यह फ्लूमस क्या चीज़ है।"

यु०—"रेडब्लफ के निकट ही एक Flume है। कल आप स्वयं उसे देखने जाइये।"

"अवश्य ही जाऊँगा।" यह कह कर मैं अपने कमरे की ओर चला। युवती को माता ने बुलाया था इसलिए वह भी मुझ से विदा हो नीचे चली गई।

मेरे पांओं में छाले पड़ गये थे। जूते ने आज उन्हें घायल कर दिया था। बिस्तरे पर लेटा हुआ था पर नींद नहीं आती थी। आधी रात के समय नाक में से रुधिर बहने लगा। झट से उठ कर मैंने नाक धोयी। सुराही के ठण्डे जल को सिर पर डाला कुछ शान्ति हुई। फिर लेट गया। अब मेरी आंख लग गई।

अगस्त ११—रेडब्लफ सेक्रेमेण्टो नदी के किनारे बसा है। यह छोटा सा क़सबा भी अन्य पश्चिमीय क़स्बों की भांति मिलों और फेक्टरियों पर अवलम्बित है। इसकी आबादी अधिक नहीं। पुतली घरों में काम करनेवाले मज़दूर ही इसकी आबादी समझिये। उनकी संख्या फ़सल के अनुसार बढ़ती घटती

रहती है। इसके इरद गिरद नाशपाती तथा आडुओं के बाग बहुत हैं।

प्रातःकाल हाथ मुह धोकर मजदूरी की तलाश में चला। अब मेरे पास एक पैसा भी न था, सब खर्च हो गया। आधा डालर जो बच रहा था वह इस होटल के स्वामी के अर्पण कर दिया। कस्बे से बाहर नदी के पार जो मिलें हैं उन्हीं की तलाश में चला। रास्ते में फ्लूम देखने में आया। फ्लूम क्या है? यह बात भी बतला देना जरूरी है। फ्लूम एक प्रकार की छोटी नहर है। फर्ज़ करो किसी नदी से पानी लाकर दूर दूर के खेतों को सींचना है, अथवा उसके द्वारा लकड़ी के कुन्दों को किसी मिल में पहुचाना है। इसके लिए आवश्यक है कि नहरें खोदी जाय। परन्तु उनके लिए बहुत रुपया चाहिये, साथ ही एक कठिनाई यह भी है कि बाज़ ज़मींदार अपनी भूमि नहर के लिए देना पसन्द नहीं करते। अब क्या उपाय करना चाहिये? भारतियों की भांति अमरीकन लोग शुष्क ब्रह्मज्ञानी तो हैं नहीं, वे झट एक कम्पनी खड़ी कर अपनी दिक्कतों के दूर करने का उपाय कर लेते हैं। कम्पनीवाले नदी में पम्प लगा कर, जल को एक ऊंचे तालाब में भर उसको लकड़ी की छोटी छोटी नहरों द्वारा दूर दूर के खेतों में पहुचाने का ठेका ले लेते हैं। बस अब काम बन गया। ये लकड़ी की नहरें खेतों के ऊपर स होकर जाती हैं। विरोधी ज़मींदारों को कम्पनी वाले कुछ किराया देकर राजी कर लेते हैं। ज़मींदारों की इससे कुछ हानि नहीं होती, क्यों कि नहरें भूमि के ऊपर आकाश में होकर जाती हैं। बड़े बड़े ऊंचे स्तम्भ गाड़े हैं जिन पर वे स्थित हैं। इन्हीं नहरों को फ्लूम कहते हैं।

फ्लूम के साथ साथ एक दो आदमियों के चलने लायक पटड़ियों की पगडंडी भी रहती है। दो दो मील के फ़ासले

पर स्टेशन बने रहते हैं उन में आदमी तैनात हैं। वे नहर की रक्षा करते हैं। कभी कोई कुन्दा रुक जाए या किसी और कारण से पानी का वेग कम हो जाय तो फौरन उस की दुरुस्ती की जाती है।

और, मैं नौकरी की तलाश में फ्लूम के किनारे किनारे चला। अभी डेढ़ मील ही गया था कि एक बाग दिखाई दिया। उसमें आड़ुओं के वृक्ष थे। फलों से लदे हुए पेड़ अपनी मस्ती में झूम रहे थे। बाग का स्वामी एक सायेदार पेड़ के नीचे आराम कुरसी पर बैठा था। मुझे देख कर उसने पुकारा—

"कहाँ जाते हो ?"

"मैं नौकरी की खोज में हूँ।"

"आओ नीचे आओ।"

मैं फ्लूम से नीचे उतर उसके पास आ गया। उसने मुझे बड़े आदर से कुरसी दी और मेरा हालचाल पूछा। मैंने भी अपनी रामकहानी सुनादी। अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकाश कर वह बोला—

"आज कुछ खाया कि नहीं ?"

मैंने सिर हिलाकर "न" में उत्तर दे दिया। "आओ, आड़ू खायें" यह कह कर वह सज्जन मुझे अपने साथ ले चला। सात आठ पके आड़ू तोड़ कर उसने मुझे दिए। आड़ू क्या मानो अमृत फल थे। ऐसे मीठे, रसीले सुरसीले और रसिए फल मैंने कभी न खाये थे। पंजाब में आड़ू बहुत होते पर ये केलेफोर्निया के इन आड़ुओं के सामने तुच्छ हैं। फलों से अपना पेट भर अब मैं और भिन्दर ... लगे बातचीत करने। सच है अब पेट खाली हो तो कुछ भी नहीं सूझता। किसीने ठीक कहा है—

पेट जले तो धर्म न सूझे। मन विचलित हो पापन जूझे॥
धर्म कर्म यदि करना चाहो। भारत की तुम भूख बुझाओ॥

ये वचन अक्षरशः सत्य हैं। आज मैं कैसा अधीर हो रहा था; चित्त परेशान था। जब पेट में खाना पहुंच जाता है, क्षुधा निवृत्त हो जाती है तो चाहे किसी कठिन विषय पर बातचीत कर लीजिए। भोजन रूपी ईंधन की कमी से शरीररूपी इञ्जन ढीला पड़ जाता है, उसकी वाहक शक्ति नष्ट हो जाती है। भूखे पुरुष की शारीरिक उन्नति होना असम्भव है, बिना शारीरिक उन्नति के मानसिक उन्नति हो नहीं सकती। जो दशा एक व्यक्ति की है वही जाति की समझिये। जो नियम मनुष्य शरीर के लिए व्यापक है वही असूल जाति के लिए घटता है।

मिस्टर व्हाइट ने मुझ से भारत की अशांति के कारण पूछे। मैंने सविस्तर सब कुछ समझा दिया। वे मेरे इस परिश्रम की मज़दूरी देने लगे और बोले—

"लीजिए, आपने दो घंटा मेरे साथ सिर खप्पन किया है इसकी कुछ तो उजरत मुझे देनी चाहिए?"

मैंने हँसकर कहा—

"आपने मुझे फल खिला दिए हैं बस यही काफी है। हाँ, यदि आप मुझे एक निकल, पोस्टकार्ड खरीदने के लिए देंगे तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूंगा।"

बड़ी प्रसन्नता से उस वृद्ध ने मुझे एक निकल (अढ़ाई आने का सिक्का) निकाल कर दिया और कहा—

"आप एक दो दिन यहीं ठहरें। आपके रहने खाने का प्रबन्ध मेरे लड़के कर देंगे। आप मजदूरी तलाश कीजिए, मिस्टर स्टाइन के पास जाइए। वह बड़ा ज़िमींदार है। शायद उसके पास आपको काम मिल जाय।"

"अच्छा। मैं शहर डाकखाने जाता हूँ। चिट्ठियां डालकर आजाऊँगा। रातको आपके यहा ही रहूंगा।"

"जाइये।"

डाकखाने से निपट कर मैं शीघ्र लौट आया। मिस्टर प्लाइट के दोनों लड़के भी शहर से आगये थे। उन्होंने मेरे सोने तथा खाने का प्रबन्ध कर दिया। छोटा लड़का, जिसकी उम्र २० वर्ष की होगी, बहुत देर तक मेरे साथ वार्तालाप करता रहा। पास में एक तम्बू गड़ा था उसीमें मेरे लिए बिछौना बिछा दिया गया। वहीं इस यात्री की रात कटी।

अगस्त १२—प्रातःकाल का नाश्ता कर मैं मिस्टर स्टाइस की खोज में निकला। फलूम के रास्ते, अढ़ाई मील पर, उस का खेत था। वहीं पहुंचा। वहां आकर, एक अच्छा दृश्य देखने में आया। एक बड़े ऊंचे मायघाम के नीचे तीन सौ के करीब औरत, मर्द लड़के लड़किया झाड़ चुनने में लगे हैं। टोकरे के टोकरे भरे हुए आरहे हैं। उनकी छांट बांट, धरने भरने में इतने मजदूर लगे थे। सब काम मशीन की तरह हो रहा था। कोई हल्ला गुल्ला नहीं था। एक चीनी मजदूर को भी काम करते देखा। बीस पचीस अमरीकन मजदूर उसके आधीन काम कर रहे थे। मैंने भी इधर उधर पूछ ताछ की। मालूम हुआ कि एक दो दिन इन्तज़ार करने पर काम अवश्य ही मिल जायगा। मैं एक दो दिन खाली कैसे ठहरता। मेरे पांव में तो शनिश्चर है। यहां जमकर मजदूरी करने का तो विचार था ही नहीं, केवल दो चार दिन लगा कर आगे चल देना था। इस लिए बेहतर यही समझा कि आगे बढ़ते ही चले जाना चाहिये। लौटते हुए रास्तेमें फलूम के एक स्टेशन पर फ्लोरेन्स नामी लड़का मिला। वह शहर की रखवाली पर नियुक्त था। इस काम के उसको दो डालर चालीस सेन्ट

अर्थात् साढ़े सात रुपये रोज मिलते थे। गरमियों की छुट्टियों में धन कमाने के लिए यह लड़का इधर आया हुआ था। तीन चार महीने में काफ़ी रुपया जमा कर फिर स्कूल में भरती हो जायगा।

उससे विदा हो मैं रेडब्लफ गया। रस्ते में पुल के नीचे बहुत से लड़के सेक्रेमेन्टो नदी में तैर रहे थे। पास के एक पेड़ से झूलना बंधा था। उस पर चढ़, झूल झूल कर लड़के नदी में कूदते थे। बहुत देर तक मैं उनका तमाशा देखता रहा। वहां से लकड़ी की मिल देखने चला गया। देख भाल कर सन्ध्या को मिस्टर व्हाइट के बगीचे में पहुंचा। आज भी यहीं सोया।

अगस्त १३—सुबह सात बजे उठकर तेहामा की राह ली। रेडब्लफ से तेहामा १५ मील है। साढ़े ग्यारह बजे के करीब मैं वहां पहुंचा। रेल की पटड़ी आ रही थी। कुछ मज़दूर गाड़िया भरते दिखाई दिए। जब मैं उनके पास पहुंचा तो मातृभाषा के शब्द मेरे कान में पड़े। चित्त प्रसन्न हो गया। ये मेरे भारतीय बन्धु भी मुझे देख बड़े खुश हुए। बारह बजे उनको छुट्टी मिली। एक गाड़ी के नीचे साये में बैठ कर सब से पहले उन्होंने मुझे भोजन कराया और फिर कुशल क्षेम पूछी। उन्होंने मेरा नाम पहले से ही सुन रखा था। मेरा उनसे भारतीय नाता था ही। जब से पोर्टलैण्ड छूटा था, भारतीय भोजन के दर्शन नहीं हुए थे। बहुत दिनों के बाद आज रोटियां खाने को मिलीं।

सन्ध्या हो गई। छः बज गये। काम से फ़ुरसत पाकर भारतीय बन्धु अपने तम्बुओं की ओर चले। श्री मुन्शीराम जी के अनुरोध से मैंने आज यहीं ठहरना निश्चित किया। रात

को स्नान के बाद भोजन कर अपने बन्धुओं को राजनीति विज्ञान की शिक्षा दी। तदुपरान्त सुख की नींद सोया।

अगस्त १४—प्रातःकाल उठ कर अपने भाइयों की सेवा में लग गया। आज रविवार था। उन्हें बहुत सी चिट्ठियाँ लिखवानी थी। यहाँ दस पञ्जाबी मजदूर थे। इनमें से एक भी शिक्षित न था। अपनी,चिट्ठी पत्री तक नहीं लिख सकते थे। मुन्शीराम को अमरीका आये दो तीन साल हो गये थे इसलिये यह थोड़ा अंगरेजी बोलना सीख गया था। इसी से यह दल "मुन्शीराम की मण्डली "Munshi Ram's Gang" के नाम से पुकारा जाता था। मुन्शीरामजी को मजदूरी भी अधिक मिलती थी। रेल की सड़क पर कस्बे से दूर ये लोग काम करते थे।

साढ़े नौ बजे मैंने इन भारतीय बन्धुओं के काम से छुट्टी पाकर 'चीको' का रास्ता लिया। आज धूप तेज थी। गरमी के मारे सिर घूम गया। जब साढ़े तीन बजे के करीब 'चीना' पहुँचा तो मुंह सूख रहा था। एक गृहस्थ के घर से जल माँगकर पीया और पेड़ के नीचे छाये में लेट रहा। एक छोटी सी लड़की अपने घर से निकल कर मेरे पास आ बैठी। उसकी प्यारी सूरत देखकर मेरे सब दुःख दूर हो गये। उठकर बैठ गया और उसके साथ खेलने लगा।

आहा! बचपन भी कैसा अमूल्य समय है। कोई चिन्ता नहीं, कोई मैल नहीं। शुद्ध अन्तःकरण, शुद्ध मन, सब प्रकार की बुराइयों से रहित शरीर उस परमात्मा की रचना का अद्भुत नमूना है। यही समय है चाहे इसमें ब्रह्म से जीव बन जाय, अथवा जीव से ब्रह्म—चाहे इसमें दैवी गुण सम्पन्न हो जाओ, अथवा पाशवी वासनाओं के कीड़े बन जाओ।

यह बनाना और बिगाड़ना किसके हाथ में है? बच्चों के? कदापि नहीं। यह उनके हाथ में है जिनका बच्चों के साथ सम्बन्ध है। वे जरा सी भूल से उनके भविष्यों को बना अथवा बिगाड़ सकते हैं। करोड़ों बिगड़ गये, लाखों नष्ट हो गए, हजारों जीते मृत्यु को प्राप्त हो गये, लाखों उसी पिशाच सामाजिक अन्याय के हाथ में पड़े तड़प रहे हैं और ठंडी आहें भर कर कहते हैं—

"क्या यह बचपन का समय फिर भी हाथ आयेगा?"

* * * * * * * *

वह बालिका अपने घर चली गई और मैं उठ कर, इधर उधर गांव में घूमने लगा। बीना पचास साठ घरों का छोटा सा ग्राम है। इसके इरद गिरद की भूमि में बहुत अंगूर होता है इसीलिए इस का नाम बीना अर्थात् अंगूर की लताओं का घर, पड़ गया है। मैंने दो चार गुच्छे तोड़ कर खाये पर वे अभी पके नहीं थे। मैं सड़क पर जा रहा था। दोनों ओर अंगूरों की लतायें फैल रही थीं। कैसी स्वर्णमयी यह भूमि है, कैसी अच्छी ऋतु है, जिधर देखो फलों से वृक्ष लद रहे हैं। जिसके पास दस एकड़ भूमि है वह भी राजाओं की भांति रहता है—स्वतन्त्र और मस्त!

इसी प्रकार देखता भालता शाम के समय एक किसान के घर के पास पहुंचा। मुझे सख्त भूख लग रही थी। घर में एक लड़का और कुछ नौकर थे। मैंने उस लड़के से कहा—

"मुझे आज रहने के लिए कोई जगह दोगे?"

"क्यों?" लड़के ने झिड़ककर कहा।

नम्रता से मैंने उससे निवेदन किया—

मैं थका हारा भूखा हूं। रात को यहीं रहने दो। सबेरे मैं चला जाऊंगा।

"आओ, आओ, यहा से। क्या कोई होटल है?"

अपना सा मुँह लेकर मैं वहा से लौटा। आज रात कहां कटेगी? यही सोचता था। अन्धेरा होने के कारण कुछ सुझाई न देता था। बड़ी मुश्किल से मैंने रेल की पटड़ी तलाश की और आगे बढ़ा चला गया। दो मील आकर मैंने दूर से आदमियों की आवाज़ सुनी। चित्त को धैर्य हुआ कि आबादी के निकट आ गया हू। अब स्टेशन के पास पहुंचा तो जिधर आग जल रही थी उधर ही चला गया। वहां पहुंच कर क्या देखता हूं कि चालीस के करीब सिक्ख बन्धु बैठे रोटियां खा रहे हैं। फिर क्या था, मैं तो मानों घर में आ गया। जो भाई रोटी बनाता था, मैं उसके पास आ बैठा। मैंने उससे कहा—

"कुछ रोटी मुझे दीजियेगा?"

उसने शायद समझा नहीं, वह बोला—

"रोटी! नो, नो, नो!"

यह विचार कर कि वह मुझे पहचान जाए मैंने हिन्दी मैं उससे रोटी मांगी थी। उसने अंगरेज़ी में झिड़क कर जवाब दिया कि रोटी नहीं मिलेगी, चले जाइये। तब मैंने हँस कर कहा—

"क्यों खालसा, सानू रोटी नहीं देओगे?"

अब वह मेरे मुख की ओर देखने लगा। मेरे सिर पर अमरीकन टोपी थी इसी कारण उसने मुझे अमरीकन समझ ऐसा उत्तर दिया था। अब जब मैंने पंजाबी भाषा बोली तो वह समझ गया कि यह तो अपना ही आदमी है। खिले चेहरे से उसने कहा—

"मैं पहले समझियासी कि तुसीं कोई गोरे हो। ऐत्थे ते गोरे साहियां रोटियां खान रोज आउन्दे हन। तुसीं ऐं,

भोला सिक्खों ही होओगे यही समझके मैं तुसानूं झिड़किया सी। तुसीं ता साड़े भाई हो। आओ आओ रोटियां।"

जो सिक्ख बन्धु बैठे रोटियां खा रहे थे उनको भी मेरा पता लग गया। अब क्या था, सभी बड़े प्रसन्न हुए। कोई अचार ले आया; किसी ने खांड लाकर दी, एक भाई दूध ले आया। सब लोग मेरे इरद गिरद आकर बैठ गये। मैंने पेट भर भोजन पाया और बातें भी करता जाता था। इस मण्डली का नायक सरदार महासिंह था। उसको शराब पीने की लत थी। आज रविवार था। शराब की बोतलें मगा कर रक्खी हुई थीं। जब मैं भोजन कर चुका तो महासिंह जी अपनी करनी दिखाने लगे। मुझे बड़ा रंज हुआ। वह सब को बुलाकर जबरदस्ती शराब पिलाता था। मैंने उसको बहुत समझाया। मेरे आने से इतना हो गया कि कई बेचारे अन्य बन्धु, जिनके साथ जबरदस्ती हो रही थी, बच गये। महासिंह भला कब मानता, उसने पेट भर शराब पी। बहुत देर तक मैंने इन भारतीय मजदूरों को मदिरा की बुराइयां बतलाईं। लेकिन असल में बात यह है कि इन लोगों का इसमें कोई अपराध नहीं। अपने देश से हजारों मील दूर ये लोग पड़े हैं, अशिक्षित हैं। यहां फुरसत के समय कोई दिल बहलाने का सामान नहीं, दिन भर बेचारे मजदूरी करते हैं। रविवार को छुट्टी होती है, उस दिन करें तो क्या करें। जवानी की उम्र है, इस दशा में यदि शराब पीकर ये लोग अपना दिल बहला लेते हैं तो इसमें इनका क्या अपराध है। यह तो उस देश की समाज अथवा गवर्नमेंट का दोष है जिसने उन बच्चों को मूर्ख और अशिक्षित रक्खा, जो इनकी बेहतरी का कोई उपाय नहीं करती। जो इनको सुयोग्य और सुशिक्षित नहीं बनाती

ये बेचारे क्या करें। जो लावारिस बच्चे होते हैं उनकी यही दशा हुआ करती है। जिस भूमि का कोई रक्षक माली नहीं होता, वहां झाड़ झंखाड़, घास फूस खुदरवेमुहार की तरह बढ़ा ही करते हैं।

अपना कर्तव्य पालन कर मैंने सोने की ठानी। गाड़ी के एक कोने में मेरा बिस्तर बिछा दिया गया था। वहीं रात काटी।

अगस्त १५—आज यहीं मोर्ड में ही रहा। रोटी बनाने वाले भाई बुधसिंह बड़े प्रेमी सज्जन निकले। अन्य बन्धु तो आज काम पर चले गये, मैं और बुधसिंह दोनों डेरे पर रहे। महासिंह का दल यहां रेल की सड़क पर काम करता था। ऐसे काम को अंगरेज़ी में Section Work कहते हैं। प्रत्येक मज़दूर को एक डालर ७५ सेन्ट रोज़ मिलता था। यह काम कुछ ऐसा कठिन नहीं है। भारत में रेल की सड़क पर ट्राली में बैठे हुए मज़दूरों को बहुत से पाठकों ने देखा होगा। बस जो काम ये मज़दूर करते हैं वही काम यहां सेक्शन वर्क है। वही काम अमरीका की सड़कों पर हमारे सिक्ख मज़दूरों को करना पड़ता है। फ़र्क केवल मज़दूरी का है। वहां पेट भर खाने को नहीं मिलता, यहां सवा पांच रुपये रोज़ मिलता है। एक सिक्ख मज़दूर का २० रुपये मासिक से अधिक खर्च नहीं होता बल्कि इससे भी कम होता है। करीब करीब सभी अपने हाथ से भोजन बनाते हैं।

आज बुधसिंह ने मेरी बड़ी सेवा की। उसकी राम कहानी भी बड़ी विचित्र है। दोपहर को साये में आराम किया। धसाड़ा के भाई भगवानसिंह भी घूमते घामते आ निकले। ये बीना नौकरी की तलाश में आ रहे थे। नेवाडा में इन्होंने कुछ महीने काम किया था। इनका किस्सा भी बड़ा दिलचस्प है। दो अमरीकन नवयुवक उधर से गुज़रे। मुझे देख पास

सेन्टो घाटी में इनका अड्डा यहीं पर है। गंगाराम नामी एक नवयुवक अपने मज़दूरों के दल के साथ यहीं पर टिका हुआ था। अब उसको मेरे आने की खबर हुई तो वह दौड़ा दौड़ा आया। सराय से बाहर मुझे ले जाकर उसने कहा—

भला आप यहां कहां सोयेंगे ? चलिये मैं आप को एक होटल में ले चलूं।"

मैंने कहा—"भाई मुझे तो बड़ी भूख लगी हुई है कुछ खिलाइये।"

"चलिये होटल में।"

"होटल में तो मैं न जाऊंगा।"

"अच्छा आइये बाज़ार चलें। जो चीज़ आप को पसन्द हो बतलाइये।"

बाज़ार में आकर हमने एक बड़ा तरबूज़ खरीदा। गंगा राम ने तो मुझे बहुत मना किया कि रात को तरबूज़ खाना अच्छा नहीं, पर मैं भला क्यों मानने लगा था। मैंने हंसकर कहा—

"मेरा बीमारी में विश्वास नहीं, बीमारी कोई शै नहीं, यह सब निर्बल आत्माओं के चोचले हैं।"

गंगाराम बेचारा चुपका हो रहा। उस तरबूज़ को मैंने ही खाया। अब पेट से छुट्टी हुई तो सोने के लिये होटल तलाश किया। गंगाराम ने मुझसे बिना पूछे ही कमरे का सब ठीक ठाक कर लिया। ७५ सेन्ट एक रात के फ़ी आदमी देने पड़े। अब जब सब तै हो गया तो मैं क्या करता। वह कमरा मेरे पसन्द नहीं था। खैर मैं अपने पलङ्ग पर सो रहा और गंगा राम अपने पर।

थोड़ी देर के बाद मेरा तो खटमलों से युद्ध आरम्भ हो गया। इतने खटमल! मोटे मोटे फ़ौज की फौज घूम रही थी। गंगाराम बेचारे को सुध भी न थी, पलग पर पड़ा खुर्राटे भर रहा था। मेरा सोना कठिन हो गया। मेरी रात युद्ध करते बीती। जब चार बज गये तो मैंने गंगाराम को उठाया, दोनों जने होटल से बाहर हुए।

अगस्त ११ को सेक्रेमेन्टो की सदपर सुशोभित गलियों में घूमते रहे। यहां के घर एक दूसरे से जुड़े हुए नहीं होते बल्कि बीच बीच में जगह छोड़ कर बागीचा लगा रहता है। प्रत्येक घर के इरद गिरद छोटी वाटिका है और वह बाड़े से सुरक्षित है। फलदार पेड़ों के नीचे पर्णशालायें बनी हैं। उन में कुरसी, मेज मौजूद हैं। एक ओर झूला शय्या टगी है। आहा! क्या जीवन है। आज कल के दिनों में दोपहर के समय इन्हीं पर्णशालाओं में मातायें अपने बच्चों के साथ विश्राम करती हैं। ठडी ठडी पवन के झकोरे, पहावान्वित विटपों की मन्द मन्द मुसकान, चिड़ियों का स्वतंत्र आलाप और निरोग बालकों का हंसना खेलना इन रमणियों को कैसा आल्हादित करता होगा। स्वतन्त्रता देवी! ये सब सुख तेरी ही पूजा के फल हैं। तेरी आराधना से हा सब कामनाओं की सिद्धि होती है। तेरे भक्तों के लिए ही यह संसार है। जो तुमसे विमुख हैं, जो तेरी पूजा नहीं करते, उनका जीवन नरक सम है। उनके लिये ठोकरें हैं, धक्के हैं, गालियां हैं। संसार में सुख के इच्छुकों को तेरी शरण आना चाहिये, तेरी पूजा करनी चाहिये, तेरी ख़ातिर सर्वस्व अर्पण करने के लिए उद्यत रहना चाहिये। जिन्होंने ऐसा नहीं किया, हा! उनकी आज क्या दशा है।

* * *

मजदूरी दिलाने वालों के अड्डे हैं इसलिये चारों ओर के मजदूर यहा आकर इकट्ठे होते हैं। यहां से भरती होकर वे दूर दूर जाते हैं। अमरीका के सभी बड़े बड़े नगरों में ऐसा हाल है। 'नौकरी दिलाना' यह भी एक बड़ा भारी रोजगार है। बहुत लोग इसी के द्वारा मालामाल हो जाते हैं। इनका विशेष ब्योरा आगे चलकर लिखूगा।

सेक्रेमेन्टो में बहुत देर नहीं ठहरा। भोजन करके डेविस की ओर चला। रास्ते में खूब आडू खाये। तीन घंटे में डेविस पहुच गया। वहा एक भारतीय मजदूर से भेंट हो गई। वह मुझे बड़े अनुरोध से अपने साथ ले गया। उसका दल पास के गाव में अगूर चुनने पर नियत था। वहीं मैं रात को गया और भारतीय बन्धुओं की सेवा में रात कटी।

मन भाये, जो रुचि हो सो करें, इनको काम करने की स्वतन्त्रता है।

अलमीरा एक जङ्क्शन है। यहाँ से पेकाविल थोड़ी दूर है। सूर्य ने सग करना शुरू किया। बाइस मील का धावा हो चुका था और अभी पाँच मील बाकी थे। अब अलमीरा से पेकाविल की सड़क पकड़ी तो सूर्यों का बाग दिखाई पड़ा। घेरा फाँदकर मैंने फल तोड़े और जेबें भर लीं। फल पके थे, शीघ्र क्षुधा निवृत्ति हो गई। छः बजे के बाद मैं पेकाविल पहुँचा। यह सचमुच फलों का घर है। इर्द गिर्द बाग ही बाग लगे हैं। बादाम, नाशपाती, आड़ू, सूम, अगूर खूब ही फलते हैं। फलों से लदी हुई गाड़ियाँ स्टेशन पर खड़ी थीं।

छोटा सा यह क़स्बा हजारों मन फल बाहर की मण्डियों में भेजता है। फलों की ऋतु में प्रायः सभी जातियों के मजदूर यहाँ के बागों में देखे जाते हैं। यद्यपि वे भिन्न भिन्न भाषायें बोलते हैं पर एक उद्देश्य की सिद्धि के लिये सब मिलकर कार्य्य करते हैं।

एक बाग में जापानी मजदूर बादामों को तोड़कर धूप में सुखा रहे थे। उनके पास जाकर मैंने एक बूढ़े जापानी से पूछा—

"क्या आप यहाँ के किसी हिन्दू मजदूर का पता बतला सकते हैं?"

मुस्कराकर, अपनी आँखें मींचते हुए उसने उत्तर दिया "मी नो साबी इंगलिश। Me no savie English"

अर्थात् "मैं अंगरेजी नहीं समझता हूँ।" उसका यह [illegible] पाकर मैं बड़े पशोपेश में पड़ [illegible]

अपने घर के बरामदे में बैठा चुरुट पी रहा था। उसके पास जाकर बड़े अदब से मैंने कहा—

"क्या यहाँ किसी धनिक के पास हिन्दू मजदूर भी काम करते हैं ?"

वह बोला—

"हां करते तो थे, लेकिन अब मजदूरों की ज़ियादा जरूरत न होने के सबब वे यहां से सनफ्रांसिस्को की ओर चले गये हैं। कस्बे में शायद किसी के यहां दो चार हिन्दू अभी काम करते हों। आप पोस्ट आफिस से दरयाफ्त कर लीजिए।"

मैं वहां से लौटा। सामने एक बड़ी इमारत दिखाई पड़ी। उधर चला। पास जाकर उसकी सीढ़ियों पर बैठ गया। यह यहाँ का हाई स्कूल है। इसमें इस कस्बे के लड़के लड़कियां पढ़ते हैं। सामने फुटबाल खेलने के लिए जमीन है। एक गिरजा घर भी निकट ही बना हुआ है।

ज़रा सुस्ताकर मैं कस्बे की ओर बढ़ा। रास्ते में गृहस्थियों को अपने घरों के बाहर कुरसियों पर बैठे देखा। गरमी की ऋतु है, हवाखाने के लिए बाहर कुरसियां डाली हुई हैं। एक या दो मंज़िले घर हैं। उसमें वैज्ञानिक सुखों के सारे सामान हैं। यह सब इनके पुरुषार्थ का फल है।

वेकाविल के डाकखाने में जाकर मैंने एक भारतीय बन्धु का पता दरयाफ्त किया पर कुछ मालूम नहीं हुआ। आज शनिवार होने के कारण मजदूर लोग बाजारों में घूम रहे थे। इनको आज के दिन तनख़ाह मिलती है। शराबख़ानों के पास इनकी भीड़ भाड़ थी। कई शराब पीने में व्यस्त थे।

कुछ पेड़ों पर बैठे चुरुटपानी रहे थे और हँस हँस बातें भी करते जाते थे। बहुत से दुकानों के बाहर खड़े वार्तालाप में मशगूल थे। कई एक दैनिक पत्र बाँच रहे थे। प्रायः सभी कोट, पतलून, टाई, कालर लगाये पूरे जेन्टलमेन बने हुये थे, पर हाँ कोई कोई ऐसे भी थे जो मिलों में छुट्टी होने के बाद सीधे बाजार में ही चले आये थ। वे अपने ओवराली के साथ ही इधर उधर घूम रहे थ। 'ओवराल' से टाँगें, छाती और पीठ अच्छी तरह ढक जाते हैं और मज़दूरी करते समय इस से बड़ा सुभीता रहता है। यह प्रायः गहरे नील रंग के मज़-बूत कपड़े का बनाया जाता है। नीचे का हिस्सा पाजामे की तरह और ऊपर दो खुले टुकड़े—एक पीठ के लिये और दूसरा छाती के लिये—साथ ही तीन तीन बटन पार्श्वभागों को बन्द करने के वास्ते और एक एक हुक उन टुकड़ों को कन्धों पर मिलाने के लिये लगी रहती है। साफ सुथरे कपड़ों के ऊपर उसे पहन कर मज़दूरी कीजिये, कपड़े मैले नहीं होंगे। पहले पाजामे की तरह उसे पहन कर, फिर आगे और पीछे के दोनों टुकड़ों को खींच कर कन्धे पर ला हुकें लगा लेते हैं फिर दोनों बगलों के बटन बन्द कर लिये जाते हैं। कपड़े बेचने वालों की दुकानों पर ये ओवराल बने बनाये बिकते हैं।

बाज़ार में घूम फिर कर मैंने कई एक दुकान्दारों से भारतीय बन्धुओं का पता लगाने की कोशिश की, पर सफलता नहीं हुई। अन्त को लाचार कर मैंने (RoomingHouse) विश्राम गृह तलाश किया। अमरीका के सभी क़स्बों में बिजली का प्रबन्ध है। बाज़ार गलियाँ, दुकानें, घर सभी या तो बिजली द्वारा प्रकाशित हैं, या गैस के ज़रिये। इस छोटे से क़स्बे में भी बिजली व्यापक हो रही है। जिस कमरे में मैं

था उसमें भी विद्युत की कन्दीलें लगी हुई थीं। बचे, बचाये मून जो मेरी जेब में थे उन्हीं से क्षुधा निवृत्ति कर ली रहा।

*   *   *   *   *   *

प्रिय पाठक, आज इस राम कहानी को यहीं तक रहने देता हूँ। जाइये, आप अपने दूसरे कामों का भुगतान कर लीजिये, मैं भी जरा बाहर घूम फिर आऊँ। मेरी कथा का तो अभी आरम्भ ही हुआ है। अभी तो रेगिस्तानों, जंगलों, बर्फानी मैदानों के बीच ले जाना है; न्यू मेक्सिको की सैर करानी है। जो मजा आपको अब तक आया है इससे कई गुणा ज़ियादा आनन्द आगे आयेगा। आवश्यकता केवल इस बात की है कि आपका और मेरा अटूट सम्बन्ध हो, प्रेम बना रहे। आप मेरी सहायता कर मेरा उत्साह बढ़ाते रहें और मैं आपकी सेवा कर अपना जीवन सफल करूँ।

अच्छा बन्दे—फिर मिलेंगे।

सत्यदेव परिव्राजक।



अमूल्य रत्न ! अमूल्य रत्न !!

शिक्षा का आदर्श

उत्तरीय भारत में हजारों मनुष्य ऐसे हैं जिन्होंने स्वामी सत्यदेव जी का यह प्रसिद्ध व्याख्यान सुना है। जब तीन दिन तक लगातार स्वामी जी इस मार्मिक विषय पर अपने विचार प्रकट करते हैं तो श्रोता लोग सुन कर मुग्ध हो जाते हैं। वे यही चाहते हैं कि ऐसे शिक्षा-प्रद, सुबोध व्याख्यान भारत के कोने कोने में हों। अपने प्रेमी भक्तों के अनुरोध से स्वामी जी ने इस व्याख्यान को पुस्तकाकार छपवा दिया है। अढ़ाई महीने में इसकी डेढ़ हजार कापियाँ बिक गईं। विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा की है। एक सज्जन ने इस ग्रन्थ को पढ़ कर प्रेम में मग्न हो सौ रुपए का नोट स्वामी जी के भेंट कर दिया। जो इसे पढ़ता है वही इसका प्रचारक बन जाता है। भारत की वर्तमान शिक्षा सम्बन्धी कठिन समस्या पर इस पुस्तक में बड़ी गम्भीरता से विचार किया गया है। कोई घर इस अमूल्य रत्न से खाली न रहना चाहिए। अपने मित्र प्रेमिओं में इसका प्रचार बढ़ाइए। सुन्दर टाइप में छपी हुई इस पुस्तक का दाम केवल पांच आने है। अध्यापकों गृहस्थों, विद्यार्थियों तथा सब सम्प्रदाय के लोगों को इसे मंगाकर पढ़ना चाहिए।

विनीत—

मैनेजर, सत्य-ग्रन्थ-माला आफिस,

फ़रुखाबाद